20 फरवरी, 2020 *वर्ष-29, पृष्ठ संख्या 60, अंक-2

राजस्थान सुजस

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

Rajas @75

मुख्यमंत्री ने अमर जवान ज्योति पर श्रद्धासुमन अर्पित किए

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने गणतन्त्र दिवस पर अमर जवान ज्योति शहीद स्मारक पहुंचकर अमर शहीदों को याद किया। पुष्पचक्र अर्पित कर देश के लिए मर मिटने वाले महान सैनिकों को नमन किया। इस अवसर पर भारतीय सेना एवं राज्य सरकार के अधिकारी, पूर्व सैनिक एवं उनके परिजन तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

प्रधान सम्पादक
महेन्द्र सोनी, आईएएस
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार व्यास

उप सम्पादक
आशाराम खटीक

कला
विनोद कुमार शर्मा

आवरण छाया
सुजस

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस

सम्पर्क
सम्पादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
सचिवालय परिसर
जयपुर - 302 005
e-mail :
publication.dipr@rajasthan.gov.in
editorsujas@gmail.com
Website :
www.dipr.rajasthan.gov.in

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

वर्ष : 29 अंक : 02 फरवरी, 2020

इस अंक में

गणतन्त्र दिवस –2020

05

यूनेस्को विश्व धरोहर – 2019

17

यूनेस्को विश्व धरोहर – 2010

43

सम्पादकीय	04
अन्तरराष्ट्रीय खादी सम्मेलन...	10
अर्थव्यवस्था में सुधार	10
कानून-व्यवस्था की समीक्षा	11
महात्मा गांधी के बताए रास्ते	11
देशभक्ति गीतों का आनन्द लिया	12
काव्य संध्या और साहित्यकार सम्मान	12
पर्यावरण संरक्षण के लिए नई नीति	13
महिला एवं बच्चों का समग्र विकास...	13
हर बच्चा शिक्षा से जुड़े	14
मुख्यमंत्री से मिले भारतीय क्रिकेट टीम...	14
टेक्नोहब एवं निर्माणाधीन सूचना केन्द्र...	15
सरकार 'नवजात सुरक्षा योजना'...	15
दिल्ली की डाक	16
गुलाबी नगर जयपुर बना विश्व विरासत...	22
शहर की विरासत को...	26
आमेर किला राजस्थान की शान	32
अद्भुत और अकल्पनीय गागरोन	35
गढ़ तो गढ़ चित्तौड़, बाकी सब गढ़ैया	36
कुंभलगढ़ दुर्ग शिल्प-स्थापत्य सौन्दर्य...	39
विजय दुर्ग रणथम्भौर	41
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	46
ग़ालिब और अद्वैत वेदांत	52
राजस्थान की धरोहर खेती	56
सुशासन सरकार का मुख्य उद्देश्य	58
धरोहर	60

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें। कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल

09

यूनेस्को विश्व धरोहर – 2013

28

मरु महोत्सव

50

जयपुर बना विश्व विरासत शहर

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी की पहल पर प्रदेश में पिछले कुछ समय के दौरान सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए कार्य किए गए हैं। इसके परिणाम भी अब सामने आने लगे हैं। महिला सशक्तीकरण के लिए 'आई एम शक्ति' कार्यक्रम हो या फिर 'निरोगी राजस्थान', 'वृद्धावस्था पेंशन', अल्पसंख्यक कल्याण, आर्थिक कमजोर वर्ग के आरक्षण में अचल सम्पत्ति से संबंधित प्रावधानों को समाप्त करने की पहल आदि के जरिए समग्र विकास की सोच को क्रियान्वित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री जी ने संवेदनशील एवं पारदर्शी शासन के अंतर्गत आम जन से जुड़े कल्याण कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया है। इसी के अंतर्गत हाल ही में जिला कलक्टरों से विडियो कॉन्फ्रेंस से संवाद कर जन समस्याओं के प्रभावी निराकरण की समीक्षा की गयी है। सुशासन के लिए किए जा रहे इन प्रयासों के साथ ही जन घोषणा पत्र को नीतिगत दस्तावेज के तौर पर स्वीकार करते हुए किसान, युवा, महिला, बुजुर्ग, विद्यार्थी आदि सभी वर्गों की आकांक्षाओं और उम्मीदों को पूरा करने का प्रयास राज्य सरकार द्वारा निरंतर किया जा रहा है।

विकास का लाभ सभी को समान रूप से मिले, इसके लिए जन कल्याण योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ ही जन-जागरूकता भी जरूरी है। इसी दिशा में हमें भविष्य में निरंतर कार्य करने की जरूरत है।

राजस्थान शौर्य-वीरता की ऐतिहासिक धरा है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह राज्य अत्यधिक संपन्न है। आजादी के बाद यहां सभी क्षेत्रों में निरंतर विकास हुआ है। इसी का परिणाम है कि प्रदेश की ऐतिहासिक धरोहरों को विश्व स्तर पर मान्यता मिलने लगी है। हाल ही में यूनेस्को ने जयपुर को विश्व विरासत शहर के रूप में शुमार किया है। यूनेस्को महानिदेशक ऑड्रे अजोले ने इसी माह हमें 'वर्ल्ड हेरिटेज सिटी' प्रमाण पत्र प्रदान किया है। पूरे प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है। यूनेस्को विश्व विरासत शहर होने से विश्व पर्यटन मानचित्र पर जयपुर की विशेष उपस्थिति होगी और यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि होगी। स्वाभाविक ही है कि इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ होगा। ऐतिहासिक इमारतों के संरक्षण को और बेहतर किये जाने की ओर भी इससे हम अग्रसर हो सकेंगे।

मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत की पहल पर ही जयपुर को विश्व विरासत घोषित किए जाने का प्रस्ताव यूनेस्को को भेजा गया था और हमें यह गौरव मिल सका है। राजस्थान के लिए यह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है कि वर्ष 2010 में जयपुर के जन्तर-मन्तर को तथा वर्ष 2013 में 'हिल फोर्ट्स ऑफ राजस्थान' के अंतर्गत प्रदेश के 6 ऐतिहासिक किलों-रणथम्भौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, कुंभलगढ़, गागरोन तथा आमेर को विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया गया था। प्राकृतिक विरासत के अंतर्गत वर्ष 1985 में प्रदेश के केवलादेव राष्ट्रीय अभयारण्य को विश्व विरासत संपति का दर्जा दिया गया था।

यूनेस्को द्वारा जयपुर को विश्व विरासत शहर घोषित किए जाने की 'सुजस' के पाठकों को हार्दिक बधाई। 'सुजस' के इस अंक में यूनेस्को द्वारा घोषित राजस्थान के विश्व विरासत स्थलों पर विशेष जानकारी देने का हमने प्रयास किया है। उम्मीद है यह अंक पाठकों को पसंद आएगा।

महेन्द्र सोनी
आई.ए.एस.
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

गणतन्त्र दिवस -2020
राज्यस्तरीय समारोह

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय गणतन्त्र दिवस समारोह में झण्डारोहण किया। स्टेडियम में राज्यपाल श्री मिश्र ने खुली जिप्सी में सवार होकर परेड का निरीक्षण किया। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने गुलाबी नगर के जनसमूह का हाथ हिलाकर अभिवादन किया। राज्यपाल श्री मिश्र ने पुलिसकर्मियों द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट की सलामी ली। समारोह में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी व उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट की मौजूदगी में हाडीरानी महिला बटालियन, 14 वीं बटालियन आर.ए.सी, आयुक्तालय, जयपुर (पुरूष), उत्तर प्रदेश पुलिस, आयुक्तालय, जयपुर, (महिला), कारागृह (जेल विभाग), जी.आर.पी., एस.डी.आर.एफ, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड (पुरूष), अरबन होमगार्ड (महिला), एन.सी.सी. (आर्मी विंग गर्ल्स), एन.सी.सी.(आर्मी विंग बॉयज), सोफिया स्कूल, एम.जी.डी. स्कूल और स्काउट-गाइड की एक-एक प्लाटून ने परेड में भाग लिया। परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री विकास कुमार सांगवान ने किया।

स्टेडियम में शहर के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं और लोक कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। मोटरसाइकिलों पर राजस्थान पुलिस के जवानों के हैरत भरे रोमाचंकारी करतबों को दर्शकों ने खूब सराहा। राजस्थान सेन्ट्रल पुलिस बैंड, एमजीडी स्कूल बैंड और प्रिन्स एकेडमी सीकर के प्रदर्शन से कार्यक्रम संगीतमय हो गया।

पदक एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ता – राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने समारोह में 62 व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया। विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक - श्री हिन्दू सिंह, सहायक उप निरीक्षक यातायात हाल सेवानिवृत्त यातायात पुलिस आयुक्तालय जोधपुर, श्री मुकुट बिहारी, हैड कांस्टेबल 91, चतुर्थ बटालियन आरएसी चैनपुरा जयपुर।

पुलिस पदक – श्री ज्ञानचन्द यादव अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय जयपुर ग्रामीण, श्री सलविन्द्र सिंह अति. पुलिस अधीक्षक, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल बीकानेर, कुमारी वीणा शास्त्री, पुलिस उप अधीक्षक, निदेशक, बाल निदेशालय जयपुर, श्री सुरेन्द्र सिंह राणावत, पुलिस, निरीक्षक आयुक्तालय जयपुर, श्री रतन सिंह उप निरीक्षक पुलिस, आयुक्तालय जोधपुर, श्री मदन लाल, प्लाटून कमाण्डर, प्रथम बटालियन आरएसी जोधपुर, श्री लक्ष्मीनारायण सैनी, सेवानिवृत्त सहायक उप निरीक्षक, पुलिस एसीबी एसआईयू जयपुर, श्री केवल दास

छाया चित्र : सुजस

वैष्णव, सहायक उपनिरीक्षक पुलिस थाना कोतवाली जैसलमेर हाल जिला पाली, श्री रामबाबू शर्मा, हैड कांस्टेबल 134, सीआईडी (सीबी) जयपुर, श्री महावीर सिंह, हैड कांस्टेबल 45, राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर, श्री हाकम अली (सेवानिवृत्त) हैड कांस्टेबल 72, पांचवीं बटालियन आएएसी, जयपुर, श्री हरिसिंह, हैड कांस्टेबल, ड्राइवर 278, पुलिस आयुक्तालय जयपुर, श्री कानाराम, हैड कांस्टेबल 130, दसवीं बटालियन, आएसी, बीकानेर, श्री तेज कुमार, कांस्टेबल 946, हाल हेड कांस्टेबल 175, चतुर्थ बटालियन आरएसी चैनपुरा, जयपुर, श्री तारकशाह कांस्टेबल 291, एसीपी लाइसेंसिंग पुलिस आयुक्तालय जोधपुर व श्रीमती सुमित्रा देवी पत्नी स्व. श्री भागीरथ सिंह मीणा कांस्टेबल 644, दसवीं बटालियन आरएसी इंडिया रिजर्व, बीकानेर।

राष्ट्रपति गृह रक्षा विशिष्ट पदक/सराहनीय सेवा पदक – श्री पंकज महर्षि, उप महासमादेष्टा, गृह रक्षा, मुख्यालय, जयपुर, श्री जबर सिंह, सेवानिवृत्त उप समादेष्टा, गृह रक्षा, प्रशिक्षण केन्द्र, पाली, श्री दौलत सिंह, कम्पनी कमाण्डर, गृह रक्षा प्रशिक्षण जोधपुर

राष्ट्रपति का नागरिक सुरक्षा विशिष्ट पदक/सराहनीय सेवा पदक – श्री फूल चन्द्र, जूनियर स्टाफ ऑफिसर, निदेशालय नागरिक सुरक्षा, राज., जयपुर, श्री प्रभातीलाल बैरवा, डिविजनल वार्डन, नागरिक सुरक्षा, जयपुर, श्री नरपल लाल, लीडिंग फायरमैन, नागरिक सुरक्षा, जोधपुर।

योग्यता प्रमाण–पत्र – श्री भास्कर ए. सावंत, प्रमुख शासन सचिव, नगरीय विकास एवं आवासन विभाग, शासन सचिवालय जयपुर श्री नमित मेहता, जिला कलक्टर जैसलमेर, डॉ. एस.एस. राठौड़,

प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक, मेडिकल कॉलेज जोधपुर, श्री जसवंत सिंह, संयुक्त शासन सचिव, वित्त (बजट) विभाग शासन सचिवालय जयपुर, श्री जयसिंह, शासन उप सचिव, कार्मिक (क-2) विभाग शासन सचिवालय जयपुर, डॉ. अशोक कुमार, अतिरिक्त जिला कलक्टर एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट चतुर्थ, जयपुर, श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ शासन उप सचिव, मंत्रीमंडल सचिवालय, जयपुर, श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता, निदेशक एवं संयुक्त सचिव, आयोजना परिवीक्षण विभाग, श्री सुनील छाबड़ा, तकनीकी निदेशक सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग, डॉ. उम्मेद सिंह, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, जयपुर, श्री सुरेश शर्मा, अधिशासी अभियंता (सिविल) आर.एस.आर.डी.सी. लि. यूनिट द्वितीय, जोधपुर, श्री विजय कुमार, सहायक अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, राज. जयपुर, श्री भास्कर दत्त त्रिपाठी, परियोजना अधिकारी, एस.ए.पी., ग्रामीण विकास विभाग, जयपुर, श्री अजय कुमार मीना, अधीक्षक, मानसिक विमंदित गृह जामडोली जयपुर श्री मोहनलाल कायथवाल, निजी सहायक ऊर्जा मंत्री, राजस्थान जयपुर श्री अभिषेक भारद्वाज, सहायक अनुभागाधिकारी, मुख्यमंत्री कार्यालय, जयपुर, श्री रूधाराम सेन, नायब तहसीलदार, निर्वाचन विभाग, नागौर, श्री हीरालाल सैनी, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी, सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग, श्री रामबाबू, सहायक कर्मचारी, कार्मिक-ख विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर।

लोक कला, आर्टीजन्स, विशिष्ट व्यक्तियों सामाजिक/ कला/ साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में सराहनीय सेवाओं के लिये प्रशस्ति पत्र– श्री रहीस भारती संगीत कला, सुश्री मनस्वी चौधरी नृत्य कला, श्री यश श्रोत्रिय, अभिनव कला, डॉ. अनुपमा सोनी, महिला उत्थान, 128 वीं पैदल वाहनी (प्रा.से.) जैसलमेर, पौधारोपण, डॉ. हेमंत राठौड़ चिकित्सा सेवा, डॉ. अंजली, स्वामी, महिला सशक्तीकरण, श्री गोविन्द्र प्रसाद दवे, समाज सेवा, श्री मनोज कुमार जैन, समाज सेवा, श्री असलम खान, समाज सेवा, श्रीमती नितिशा शर्मा, समाज सेवा, श्री अशोक कुमार नावरियां, समाज सेवा, श्री अजय शर्मा, पर्यावरण संरक्षण, श्री घीसू लाल, वन्य जीव संरक्षण, श्री महेश चन्द, शिक्षा, श्री बालाजी गौशाला संस्थान, गौ सेवा, श्री चौथमल साघ, राजस्थानी पोशाक डिजाइन, श्री नवल किशोर व्यास, रंगमंच एवं पत्रकारिता और श्री कौस्तुभ मणिपुष्प कुंज को शास्त्रीय संगीत में प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य समारोह स्थल पहुंचने पर राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी और उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट ने अगवानी की।

राजभवन में झण्डारोहण – राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने यहां राजभवन में गणतंत्र दिवस के मौके पर झण्डारोहण किया। राज्यपाल ने सम्मान गारद का निरीक्षण किया और सलामी ली। इस अवसर पर राज्यपाल श्री कलराज मिश्र व प्रदेश की प्रथम महिला श्रीमती सत्यवती मिश्र ने राजभवन परिसर स्थित राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों और राजभवन के अधिकारियों व कर्मचारियों को मिठाई वितरित की।

राज्यपाल ने शहीदों को नमन किया – राज्यपाल श्री कलराज ने गणतंण पर सवाई मानसिंह स्टेडियम के समीप अमर जवान ज्योति पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को नमन किया और श्रद्धांजलि दी। राज्यपाल श्री मिश्र ने संदेश पुस्तिका में लिखा ''देश की रक्षा में बलिदान हुए शहीदों को शत-शत नमन। गणतंत्र दिवस पर सभी सैन्य बल जवानों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं''। •

शासन सचिवालय में
झंडारोहण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजस्थान सचिवालय कर्मचारी संघ की ओर से शासन सचिवालय में आयोजित गणतन्त्र दिवस समारोह में झंडारोहण किया। मुख्यमंत्री ने सचिवालय स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें याद किया। श्री गहलोत ने कहा कि देश की आजादी के लिए चले लंबे संघर्ष में ज्ञात-अज्ञात सेनानियों का बड़ा योगदान रहा। यह दिन हमें उन सभी महान शहीदों को याद करने का अवसर देता है। उन्होंने कहा कि देश की रक्षा में राजस्थान के युवाओं ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाई। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार कर्मचारी कल्याण के निर्णय लेती रही है। आगे भी उनके हितों का पूरा ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ निचले स्तर तक पहुंचाने के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करें। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता एवं सचिवालय कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र सिंह शेखावत ने भी संबोधित किया। •

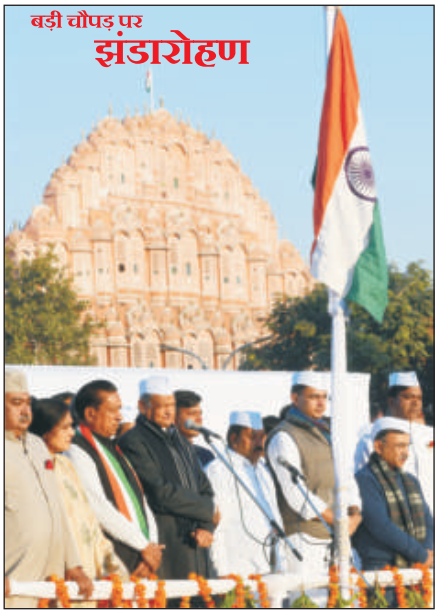

बड़ी चौपड़ पर
झंडारोहण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने गणतंत्र दिवस पर प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि इस पावन पर्व पर हम सभी संविधान की मूल भावना के अनुरूप आपसी सद्भाव के साथ देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखें। भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर की भावना के अनुरूप हम सभी को साथ लेकर चलें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में पं. जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद सहित अन्य महान नेताओं के लम्बे संघर्ष के बाद देश को आजादी मिली। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री राजीव गांधी और पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह शहीद हो गए, लेकिन देश को तोड़ने वाली ताकतों के मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया।

यह दिन संवैधानिक मूल्यों में लोगों की आस्था का प्रतीक है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि संविधान की भावना के अनुरूप मुल्क चले और आगे बढ़े। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री सचिन पायलट, मुख्य सचेतक डॉ. महेश जोशी, विधायक श्री खिलाड़ीलाल बैरवा, श्री अमीन कागजी, श्री रफीक खान सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे। •

राजपथ पर राजस्थानी लोक कला एवं संस्कृति

नई दिल्ली के राजपथ पर 71वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित परेड में राजस्थान की झांकी, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के कलाकारों द्वारा दी गई प्रस्तुतियां एवं राजकीय कन्या विद्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत नृत्य जन आकर्षण का केन्द्र रहे।

राजस्थान की झांकी में जयपुर एक धरोहर शहर में गुलाबी नगरी जयपुर की विश्व विख्यात विरासत के साथ ही विरासतीय भवनों के वैभव को दर्शाया गया। जिसमें जाली-झरोखों से सुसज्जित बाजारों स्मारकों प्रवेश द्वारों, सिटी पैलेस द्वार, त्रिपोलिया दरवाजा स्टेच्यू सर्किल आदि को शामिल किया गया। झांकी के अग्रिम भाग पर कंगूरेदार परकोटा पर स्टेच्यू सर्किल पर स्थित जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह की प्रतिमा आलंकारिक मार्बल पत्थर में छतरी सहित दर्शाई गई। झांकी के ट्रेलर पार्ट में जयपुर शहर की खूबसूरत गुलाबी रंग की दीवारों को छतरियों, जालियों व मेहराब आदि से सजाया गया है। पृष्ठ भाग में जयपुर के सिटी पैलेस में स्थित चंद्रमहल का रंगीन डिजाइनयुक्त द्वार झरोखे खूबसूरत गुम्बद आदि को दर्शाया गया हैं। यहाँ तीनों तरफ के दरवाजों में लोक कलाकारों को ग्यारह प्रकार के सुप्रसिद्ध कठपुतली नृत्य करते हुए दर्शाया गया।

लोकवाद्य वादकों को सारंगी मंजीरा ढोलक आदि बजाते हुए दर्शाया गया हैं। साथ ही राजस्थानी संगीत की सुमधुर धुनों के साथ सिर पर मटके लेकर चरी एवं भवई नृत्य प्रस्तुत करती नृत्यांगनाओं को दर्शाया गया। झांकी के दोनों ओर भी राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता रामदेव जी पीर के पलगीत रुण झूंण बाजे घुंघरा लोक गीत पर नृत्यागनाओं द्वारा नृत्य प्रदर्शित कर रहे थे। •

छाया चित्र : सुजस

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 13वें जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। इसके बाद डिग्गी पैलेस के फ्रंट लॉन में मौजूद साहित्यकारों, साहित्य प्रेमियों एवं देश-विदेश से आए मेहमानों को सम्बोधित करते हुए श्री गहलोत ने कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि इस समारोह में साहित्य, संस्कृति और विभिन्न विषयों पर होने वाली चर्चा और गोष्ठियों से नई पीढ़ी को प्रेरणा मिल सकेगी।

श्री गहलोत ने कहा कि जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल ने 12 साल का सफर पूरा किया है और इस दौरान इस फेस्टिवल ने देश ही नहीं दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि लेखक और साहित्यकार ही नहीं साहित्य प्रेमी और पाठक भी इस फेस्टिवल का इंतजार करते हैं और वे यहां आकर संवाद के माध्यम से साहित्य की बातें सुनते और साझा करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि फेस्टिवल में नोबेल, मैन बुकर, पुलित्जर, मैग्सेसे और साहित्य अकादमी जैसे पुरस्कार प्राप्त प्रतिष्ठित लेखकों एवं साहित्यकारों के शामिल होने से इसका महत्त्व बढ़ गया है। जो पुस्तक प्रेमी अपने प्रिय साहित्यकारों को आज तक पढ़ते आए हैं, उन्हें वे यहां रूबरू देख और सुन सकते हैं।

श्री गहलोत ने कहा कि सौभाग्य की बात है कि हमारे प्रदेश के प्रतिष्ठित लेखक विजयदान देथा ''बिज्जी'' की प्रसिद्ध राजस्थानी कहानियों ''बातां री फुलवारी'' के अंग्रेजी अनुवाद 'टाइमलेस टेल्स फ्रॉम मारवाड़' का फेस्टिवल के उद्घाटन समारोह में लोकार्पण करने का अवसर मुझे मिला। मैं इसके अनुवाद के लिए श्री विशेष कोठारी को बधाई देता हूं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ''बातां री फुलवारी'' राजस्थान के लोक जीवन, लोक संस्कृति, लोक कथाओं और यहां के जीवन मूल्यों को संजोए हुए है। इस पुस्तक में शामिल उनकी कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद होने से ये कहानियां अब देश-दुनिया के अन्य पाठकों तक पहुंचेंगी। उन्होंने कहा कि बिज्जी ने बोरून्दा जैसे एक छोटे से गांव में रहकर विश्व स्तर का साहित्य रचा और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की जो

हमारे लिए गौरव की बात है।

इससे पहले मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों ने ''बातां री फुलवारी'' के अंग्रेजी अनुवाद 'टाइमलेस टेल्स फ्रॉम मारवाड़' का विमोचन किया। फेस्टिवल डायरेक्टर श्री संजोय रॉय ने उद्घाटन सत्र में आए अतिथियों का स्वागत किया और फेस्टिवल की रूपरेखा प्रस्तुत की। फेस्टिवल की को-डायरेक्टर नमिता गोखले ने कहा कि साहित्य के इस महाकुंभ के दौरान 15 भारतीय एवं 35 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के लेखक अपनी बात श्रोताओं के सामने रखेंगे। इसके अलावा इसमें मुंशी प्रेमचंद, विजयदान देथा सहित कई प्रतिष्ठित लेखकों एवं साहित्यकारों की रचनाओं पर सत्र होंगे।

लेखक विलियम डेलरिम्पल ने उद्घाटन सत्र में कहा कि जेएलएफ को इतने सालों में अभूतपूर्व ख्याति मिली है। इस फेस्टिवल में आने वाले साहित्य प्रेमियों को देखकर महसूस होता है कि भारत में साहित्य का अपना अलग महत्त्व है। उद्घाटन समारोह में कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बीडी कल्ला, विधानसभा में मुख्य सचेतक श्री महेश जोशी, भारत में अमेरिका के राजदूत कैनेथ आई जस्टर, राजस्थान फाउण्डेशन के पूर्व उपाध्यक्ष श्री राजीव अरोड़ा, प्रमुख सचिव, कला एवं संस्कृति श्रीमती श्रेया गुहा एवं देश-विदेश से आए प्रतिष्ठित लेखक व साहित्यकार उपस्थित थे। •

अन्तरराष्ट्रीय खादी सम्मेलन के पोस्टर का विमोचन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री निवास पर 'खादी के वैश्वीकरण पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' के पोस्टर का विमोचन किया।

राज्य सरकार के उद्योग विभाग द्वारा सीआईआई एवं खादी संस्थाओं के सहयोग से आयोजित इस सम्मेलन की आयोजन समिति के समन्वयक श्री जी.एस बापना ने बताया कि यह सम्मेलन खादी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाने में उल्लेखनीय भूमिका अदा करेगा और इससे खादी को बढ़ावा मिलेगा। मुख्यमंत्री को राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ के अध्यक्ष श्री रामदास शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा खादी पर 50 प्रतिशत छूट दिये जाने के फैसले से प्रदेश की खादी से जुड़ी संस्थाओं, बुनकरों और कातिनों को सम्बल मिला है। खादी की बिक्री ढ़ाई गुना बढ़कर दिसम्बर 2019 तक 75 करोड़ तक पहुंच गई।

मुख्यमंत्री के इस ऐतिहासिक फैसले ने खादी एवं ग्रामोद्योग से जुड़ी संस्थाओं को एक नया जीवनदान दिया है और प्रदेश में खादी के प्रति एक सकारात्मक माहौल बना है। •

अर्थव्यवस्था में सुधार हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि वर्तमान आर्थिक हालातों को देखते हुए अर्थव्यवस्था में सुधार हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। बैंकिंग सेक्टर की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। बैंक प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को लक्ष्य के अनुरुप ऋण प्रदान कर देश की जीडीपी और रोजगार वृद्धि में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

श्री गहलोत शासन सचिवालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में नाबार्ड की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय ऋण संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि, पशुपालन, डेयरी, हस्तशिल्प, जल संरक्षण, ग्रामीण विकास एवं स्वरोजगार सहित अन्य क्षेत्रों में अपार संभावनाएं मौजूद हैं। नाबार्ड सहित अन्य बैंकिंग संस्थाएं इन क्षेत्रों को आगे बढ़ाकर देश एवं प्रदेश के विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सोलर एनर्जी, विंड एनर्जी, उद्योग, कृषि प्रसंस्करण तथा एमएसएमई सेक्टर के विकास के लिए नई नीतियां लेकर आई है। इसी के साथ बाड़मेर में रिफाइनरी सह पेट्रोकैमिकल कॉम्पलेक्स पर भी तेजी से काम चल रहा है। ऐसे में नाबार्ड एवं बैंकों की प्रदेश में भूमिका और बढ़ेगी।

श्री गहलोत ने कहा कि राष्ट्रीयकृत बैंकों ने जिस प्रकार उद्योगपतियों के कर्ज का वन टाइम सैटलमेंट कर उद्योगों को राहत दी है उसी तरह अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले कृषि क्षेत्र को और मजबूत करने के लिए उन्हें राज्य में किसानों के ऋण का वन टाइम सैटलमेंट करने पर भी विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सहकारी बैंकों एवं भूमि विकास बैंकों के माध्यम से किसानों का ऋण माफ किए जाने से किसानों को राहत मिली है। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर नाबार्ड के वर्ष 2020-21 के स्टेट फोकस पेपर का विमोचन किया। इस पेपर में नाबार्ड द्वारा राज्य में प्राथमिकता क्षेत्रों को 2 लाख 11 हजार 659 करोड़ रुपए के ऋण वितरण का आंकलन किया गया है। जिसमें से 65 प्रतिशत कृषि, 22 प्रतिशत एमएसएमई एवं शेष 13 प्रतिशत हिस्सा अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के लिए निर्धारित किया गया है।

नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक श्री सुरेश चन्द्र ने कहा कि स्टेट फोकस पेपर के तहत नाबार्ड का इस वर्ष का मुख्य फोकस हाईटेक कृषि पर है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार कृषक उत्पादक समूहों (एफपीओ) तथा एमएसएमई को प्रोत्साहित कर रही है। नाबार्ड इसमें पूरा सहयोग करेगा। बैंक के उप महाप्रबंधक श्री अश्वनी कुमार ने स्टेट फोकस पेपर पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक श्री अरूण कुमार सिंह एवं राज्य स्तरीय बैंकिंग समिति के संयोजक ने भी संबोधित किया। •

कानून-व्यवस्था की समीक्षा, मजबूत हो पुलिस का रेस्पोंस सिस्टम

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि अपराधों पर प्रभावी शिकंजा कसने और लोगों को बेहतर सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए पुलिस बिना देरी के घटनास्थल पर पहुंचना सुनिश्चित करे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घटनास्थल पर पुलिस की त्वरित पहुंच के लिए पूरे प्रदेश में इमरजेंसी रेस्पोंस सिस्टम लागू करने का प्रयास किया जाए। फिलहाल अलवर एवं भरतपुर जिलों में यह प्रोजेक्ट शुरू किया जा रहा है, जिसमें पुलिस 15 मिनट में घटनास्थल पर पहुंचेगी।

श्री गहलोत प्रदेश की कानून व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने प्रदेश में पुलिस द्वारा माफिया के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान को अधिक सशक्त बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसी भी तरह का माफिया हो, पुलिस पूरी सख्ती एवं सतर्कता के साथ कार्रवाई को अंजाम दे, ताकि आमजन को बेहतर सुरक्षा मिल सके। इसके लिए सरकार संसाधनों में किसी तरह की कमी नहीं रखेगी। पुलिस महकमे को वाहनों की खरीद के लिए 70 करोड़ रुपये का बजट उपलब्ध कराया गया है।

मुख्यमंत्री ने एफआईआर के लिए 'फ्री रजिस्ट्रेशन' की नीति पर पुनः जोर देते हुए कहा कि अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि पुलिस थानों में आने वाले फरियादियों को एफआईआर दर्ज कराने में किसी तरह की

परेशानी नहीं हो। उन्होंने कहा कि एफआईआर दर्ज करने में आनाकानी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। ऐसा प्रकरण सामने आने पर अधिकारी संबंधित पुलिसकर्मी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें।

बैठक में पुलिस महानिदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह ने बताया कि महिला उत्पीड़न एवं जघन्य अपराधों की रोकथाम के लिए गठित विशेष यूनिट सभी जिलों में कार्यशील हो गई है। संगठित अपराध एवं विभिन्न माफियाओं पर शिकंजा कसने के लिए पुलिस विभाग ने पिछले दिनों विशेष अभियान चलाकर प्रभावी कार्रवाई की है, जिससे बीते महीनों में अपराधों पर नियंत्रण की स्थिति बेहतर हुई है। उन्होंने कहा कि जनवरी माह में सड़क दुर्घटनाओं में भी कमी आई है। •

महात्मा गांधी के बताए रास्ते पर चलकर ही युवा पीढ़ी का भविष्य निर्माण बेहतर हो सकता है

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी के बताए रास्तों पर चलकर ही आज की पीढ़ी का भविष्य निर्माण बेहतर हो सकता है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी का जीवन ही युवा पीढ़ी के लिए सबसे बड़ा संदेश है।

चिकित्सा मंत्री जयपुर स्थित जयपुरिया विद्यालय के वार्षिकोत्सव 'नई तालीमः ए गांधीयन वे ऑफ लर्निंग' में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए गांधी की शिक्षा को आत्मसात करना बेहद जरूरी है। गांधी ही वह हस्ती है जो बच्चों को सत्य पर चलने की राह दिखा सकता है। उन्होंने आयोजकों के खास अनुरोध पर युवाओं को कभी उम्मीद ना छोड़ने और हमेशा आगे बढ़ते रहने के लिए 'रुक जाना नहीं तू कहीं हार के' गीत की पंक्ति भी गुनगुनाई। इस दौरान कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

उन्होंने बताया की सरकार ने सर्वजन को स्वस्थ और निरोगी बनाए रखने के लिए 'निरोगी राजस्थान' मुहिम शुरू की है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से प्रदेश हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है। मेडिकल के क्षेत्र में वर्तमान सरकार ने महज 13 महीनों में 15 नए मेडिकल कॉलेजों की स्वीकृति दिलाई है। आमजन को घर के पास चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जनता क्लीनिक खोले जा रहे हैं। पीजी सीटों में बढ़ोतरी की जा रही है, डॉक्टरों की कमी दूर करने के लिए नई भर्तियां की जा रही हैं। निशुल्क दवा योजना और जांच योजना का दायरा बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने इस अवसर पर आश्वस्त किया कि आमजन को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने का भी आह्वान किया। उन्होंने बताया कि गत वर्ष महात्मा गांधी की जयंती पर नशा मुक्ति के खिलाफ एक कार्यक्रम किया गया था, जिसमें एक दिन में 1 करोड़ 15 लाख युवाओं ने नशा न करने की शपथ ली थी, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी सराहा और सम्मानित किया है। •

मुख्यमंत्री ने देशभक्ति गीतों का आनन्द लिया

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत बिड़ला ऑडिटोरियम में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध गीतकार कविप्रदीप की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम 'मेरे वतन के लोगों' में शामिल हुए। कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग और राजस्थान उर्दू अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में 'सुर संगम' ग्रुप के कलाकारों ने कवि प्रदीप द्वारा लिखे मशहूर देशभक्ति एवं अन्य गीतों का गायन किया।

श्री गहलोत ने कार्यक्रम में देशभक्ति गीतों का आनन्द लिया और कलाकारों की हौसला अफजाई की। इस अवसर पर स्व. प्रदीप की पुत्री मितुल प्रदीप ने कवि प्रदीप फाउण्डेशन की ओर से प्रकाशित स्मारिका 'एक दीप-कवि प्रदीप' की प्रति मुख्यमंत्री को भेंट की। कार्यक्रम में राजस्थान साहित्य अकादमी की पत्रिका 'मधुमती' तथा राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर की पत्रिका 'जागती जोत' के 'कवि प्रदीप' पर निकाले गये विशेष अंकों का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमेश मीणा, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्री भंवरसिंह भाटी, पूर्व सांसद श्री अविनाश पाण्डे सहित अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्यजन एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे। •

काव्य संध्या और साहित्यकार सम्मान समारोह

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और संस्कारों से रूबरू हो। इससे उनका बौद्धिक विकास तो होगा ही उन्हें देश-दुनिया और समाज की वास्तविकता भी पता चल सकेगी। उन्होंने कहा कि साहित्यकार अपनी रचनाओं से जनमानस को सही दिशा देने की क्षमता रखते हैं। राज्य सरकार पत्रकार, साहित्कार और लेखकों को सम्मान और सुविधाएं देने में किसी तरह की कमी नहीं रखेगी।

मुख्यमंत्री इन्द्रलोक सभागार में काव्या फाउंडेशन, जयपुर की ओर से आयोजित काव्य संध्या और साहित्यकार सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि साहित्य किसी भी देश के भूत, भविष्य और वर्तमान का दर्पण है। साहित्य और साहित्यकारों का सम्मान हमारी परंपरा रही है।

मुख्यमंत्री ने प्रसिद्ध लेखक गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर को उद्धृत करते हुए कहा कि ''मानवता राष्ट्रवाद से बड़ी है।'' उनका कहना था कि मानवता ही नहीं बचेगी तो राष्ट्रवाद कहां रहेगा। हमें संविधान की मूल भावना का आदर करते हुए आपसी सद्भाव और भाईचारे को बढ़ावा देना चाहिए। इस काम में भी साहित्य जगत की बड़ी भूमिका है। •

पर्यावरण संरक्षण के लिए लाएंगे नई नीति

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक चुनौती है, इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सरकार पर्यावरण संरक्षण के लिए जल्द ही प्रदेश में नई पर्यावरण नीति लाएगी।

श्री गहलोत अलवर जिले के नीमली स्थित अनिल अग्रवाल एनवायरमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में पर्यावरण पर वार्षिक मीडिया कॉनक्लेव को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विकास की अविवेकपूर्ण दौड़ से दुनियाभर में जलवायु परिवर्तन हुआ है, जिसके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने इसे गम्भीर चुनौती बताते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हम सभी को अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस विषय पर सर्वप्रथम न केवल अपनी चिन्ता जाहिर की थी, बल्कि इसके समाधान के वैश्विक प्रयास भी किए थे। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने इस देश को दूरसंचार क्रांति दी। मीडिया इसका सकारात्मक उपयोग कर युवा पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

श्री गहलोत ने कहा कि राजस्थान में सौर एवं पवन ऊर्जा की असीम सम्भावनाएं हैं। इन्हें प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार नई नीति लाई है। करीब 20 वर्ष पूर्व जब मैं प्रदेश का मुख्यमंत्री था तब राज्य में सौर ऊर्जा का उत्पादन मात्र दो मेगावाट था, अब यह बढ़कर चार हजार मेगावाट हो गया है। इसे और बड़े स्तर पर ले जाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान में 20 प्रतिशत भू-भाग पर वनारोपण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सरकार गम्भीरता से प्रयास कर रही है। उन्होंने सिलिकोसिस पीड़ितों को राहत देने के लिए राज्य सरकार द्वारा लाई गई नीति का भी जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर संस्थान के ''एनुअल स्टेट ऑफ इंडियाज एनवायरमेंट रिपोर्ट 2020'' का विमोचन भी किया। मुख्यमंत्री ने पर्यावरण संरक्षण पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। •

महिलाओं एवं बच्चों का समग्र विकास सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि महिलाओं एवं बच्चों को बेहतर पोषण, बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास एवं आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फण्ड फाउण्डेशन के सहयोग से इस क्षेत्र में नवाचारों के साथ एक कदम आगे बढ़ाते हुए काम किया जाए। उन्होंने इसके लिए एक स्टीयरिंग कमेटी गठित करने के भी निर्देश दिए।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री कार्यालय में चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फण्ड फाउण्डेशन के प्रतिनिधियों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास सहित अन्य विषयों पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यद्यपि राजस्थान में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बालिका शिक्षा, मातृ एवं शिशु पोषण तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अच्छा काम हो रहा है, लेकिन चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फण्ड फाउण्डेशन जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के तकनीकी सहयोग से इस दिशा में और बेहतरीन ढंग से आगे बढ़ा जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बालिका शिक्षा, महिलाओं का कौशल विकास कर उन्हें रोजगार के विभिन्न अवसर उपलब्ध करवाने तथा पोषण स्तर को सुधारने से हमारी आने वाली पीढ़ी अधिक स्वस्थ और समृद्ध होगी। इन क्षेत्रों में उत्तरोत्तर विकास के लिए हर सम्भव प्रयास किए जाएं। सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में चिल्ड्रन इन्वेस्टमेंट फण्ड फाउण्डेशन का तकनीक सहयोग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बैठक में फाउण्डेशन की सीईओ श्रीमती कैट हैम्पटन ने कहा कि उनका फाउण्डेशन राजस्थान में महिलाओं, बालिकाओं एवं बच्चों के समग्र विकास के लिए निवेश जारी रखना चाहता है। फाउण्डेशन इन क्षेत्रों में अपना पूरा सहयोग प्रदान करेगा। उन्होंने प्रदेश में विद्युत सुधार, रिन्यूएबल एनर्जी एवं वायु प्रदूषण की रोकथाम के क्षेत्र में भी काम करने की इच्छा व्यक्त की। सीईओ हैम्पटन ने शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

मातृ–शिशु मृत्यु दर में कमी के लिए सरकार के प्रयासों को सराहा

श्रीमती हैम्पटन ने मातृ-शिशु मृत्यु दर में कमी लाए जाने के राज्य सरकार के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने प्रसूता को मिलने वाली सहायता राशि के कार्य में 'राजपुष्ट प्रोजेक्ट' के माध्यम से राज्य सरकार के प्रयासों के साथ कार्य करने की इच्छा जाहिर की। उन्होंने प्रदेश में विभिन्न नवाचारों के माध्यम से प्रसव कक्षों में सुरक्षित प्रसव के लिए की गई पहल 'दक्षता प्रोजेक्ट' की भी सराहना की। उल्लेखनीय है कि आंध्रप्रदेश द्वारा इस प्रोजेक्ट को अपनाया गया है। ये प्रयास अब राष्ट्रीय नीति का हिस्सा भी बन रहे हैं। •

हमारा प्रयास हर बच्चा शिक्षा से जुड़े और आगे बढ़े

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि सरकार का फर्ज है कि वह ऐसे फैसले ले जिससे आमजन को लाभ मिले। इसी सोच के साथ हमारी सरकार ने गरीब और पिछड़े तबके के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए प्रभावी कदम उठाए हैं। हमारा प्रयास है कि प्रदेश का हर बच्चा शिक्षा से जुड़े और आगे बढ़े।

श्री गहलोत जयश्री पेडीवाल ग्लोबल स्कूल के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे प्रदेश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है लेकिन आवश्यकता है उन्हें तराशने की। राज्य सरकार इस दिशा में लगातार कदम उठा रही है। उन्होंने मातृभाषा हिन्दी के महत्त्व पर जोर देते हुए कहा कि यद्यपि वर्तमान परिदृश्य में अंग्रेजी का माहौल बढ़ रहा है लेकिन हिन्दी माध्यम से शिक्षित प्रतिभाएं भी किसी से कम नहीं हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले 70 साल में देश ने विकास का बड़ा सफर तय किया है। सत्तर साल पहले जिस देश में लोग बिजली के बारे में नहीं जानते थे वह देश आज विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देश में खड़ा है। उन्होंने कहा कि विकास की संभावनाएं कभी खत्म नहीं होती लेकिन हमारे महान नेताओं के विजन से हुए विकास को नकारना उचित नहीं है। उन्होंने विद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया।

शिक्षा राज्यमंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि गांव-ढाणी तक संस्कारित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता है। सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि सरकारी स्कूल स्मार्ट स्कूल के रूप में विकसित हों। मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता ने शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों एवं नवाचारों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में बालिका शिक्षा पर विशेष जोर दिया जा रहा है। •

मुख्यमंत्री से मिले भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से मुख्यमंत्री निवास पर अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप में खेली भारतीय टीम में शामिल रहे प्रदेश के 2 खिलाड़ियों श्री रवि विश्नोई और श्री आकाश सिंह ने मुलाकात की।

श्री गहलोत ने दोनों खिलाड़ियों को उनके अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने जोधपुर निवासी रवि विश्नोई के कोच श्री प्रद्युत सिंह चम्पावत और श्री शाहरूख पठान को भी बधाई दी। इस दौरान मुख्यमंत्री से मिली आरसीए की महिला क्रिकेट टीम सलेक्टर्स गंगोत्री चौहान, मंजूलता शर्मा, वंदना डागा, आस्था माथुर एवं सुल्ताना खान ने स्कूली स्तर पर महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने का आग्रह किया। इस अवसर पर राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) के अध्यक्ष श्री वैभव गहलोत, आरसीए के सचिव श्री महेन्द्र शर्मा, संयुक्त सचिव श्री महेन्द्र नाहर, राजस्थान रॉयल्स के उपाध्यक्ष श्री राजीव खन्ना एवं आरसीए के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। •

सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री ने टेक्नोहब एवं निर्माणाधीन सूचना केन्द्र का किया अवलोकन

सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने टेक्नोहब एवं निर्माणाधीन सूचना केन्द्र का अवलोकन किया। उन्होंने टेक्नोहब में संचालित गतिविधियों की विस्तार से जानकारी ली तथा निर्माणाधीन सूचना केन्द्र के भवन निर्माण के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। प्रमुख शासन सचिव सूचना एवं जनसम्पर्क तथा सूचना प्रौद्योगिकी श्री अभय कुमार तथा सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त श्री महेन्द्र सोनी सहित अन्य अधिकारी भी इस अवसर पर मौजूद थे।

डॉ. शर्मा ने राज्य सरकार द्वारा स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए बनाये गये टेक्नोहब में उपलब्ध सुविधाओं को युवाओं एवं विशेष रूप से विद्यार्थियों को जोड़ने पर बल दिया। उन्होंने डिजीटल म्यूजियम, ओपन वर्क स्टेशन, टिंकरिंग लैब एवं स्टार्टअप वर्क स्टेशन तथा मिनी ऑडिटोरियम सहित टेक्नोहब में स्थापित सभी सुविधाओं का अवलोकन किया एवं इसे अधिक से अधिक संख्या में विद्यार्थियों को दिखाने की व्यवस्था पर बल दिया।

उन्होंने टिंकरिंग लैब को वैज्ञानिक समझ एवं उद्यमिता की भावना विकसित करने की दृष्टि से उपयोगी बताते हुए इसे चिकित्सा शिक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने प्रदेशभर के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम बनाकर टेक्नोहब को दिखाने की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। उन्होंने टेक्नोहब देखने के लिए आये दूदू मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों से बात की एवं टेक्नोहब के बारे में उनकी राय जानी।

डॉ. शर्मा ने सूचना केन्द्र के निर्माणाधीन भवन का अवलोकन किया एवं निर्माण कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने समस्त निर्माण कार्य पूर्ण गुणवत्ता के साथ तथा निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने बताया कि सूचना केन्द्र में पूर्व में निर्मित क्षेत्र से भी अधिक क्षेत्र में पाठकों के लिए पुस्तकालय, रीडिंग रूम एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध करवायी जायेंगी। उन्होंने सूचना केन्द्र में प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाओं के कक्ष को भी सुसज्जित करने के निर्देश दिये। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा डिजीटल म्यूजियम, डिजीटल एक्जीबिशन एरिया सहित नवीनतम सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक पर आधारित अन्य सुविधाएं सुलभ होंगी।•

सरकार 'नवजात सुरक्षा योजना' लाएगी

प्रदेश में कम वजनी, कुपोषित और समय से पहले जन्मे नवजात शिशुओं की बेहतर देखभाल के लिए सरकार 'नवजात सुरक्षा योजना' लाएगी। कंगारू मदर केयर पद्धति को भी 'निरोगी राजस्थान' का हिस्सा बनाया जाएगा। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने एसएमएस मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में आयोजित कंगारू मदर केयर कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में किसी भी नवजात की मौत ना हो इसके लिए जल्द ही ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किया जाएगा। इस प्रोग्राम के लिए 77 मास्टर ट्रेनर्स तैयार किए जा चुके हैं, जोकि जिला और ब्लॉक स्तर पर जाकर आमजन को 'कंगारू मदर केयर' के बारे में जागरूक करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश भर में लगाए जाने वाले स्वास्थ्य मित्रों को भी कंगारू मदर केयर का प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि प्रदेश में शिशु मृत्यु दर में और कमी आ सके। चिकित्सा मंत्री ने कहा कि नवजातों के लिए 'कंगारू मदर केयर' बेहतरीन कॉन्सेप्ट है, जिसमें बिना किसी खर्चेके केवल 'स्पर्श चिकित्सा' के जरिए बच्चा बेहतर स्वास्थ्य पा सकता है। उन्होंने बताया कि प्रदेश भर में शिशु मृत्यु दर में हालांकि कमी आई है। पहले जहां यह 41 प्रतिशत था वहीं अब 35 प्रतिशत रह गया है। आने वाले समय में इसे और भी कम किया जाएगा।•

किताब विमोचन कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री श्री अश्विनी कुमार की किताब 'ह्यूमन डिग्निटीः परपज इन परपेच्युटी' के विमोचन कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कार्यक्रम में पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. हामिद अंसारी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, पूर्व उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी, पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री पी. चिदंबरम, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार, जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री एन.एन. वोहरा, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र हुड्डा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित थे। •

केंद्र प्रवर्तित योजनाओं में नब्बे प्रतिशत अंशदान प्रदान करें केंद्र

राजस्थान के शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविंद सिंह डोटासरा ने राज्यों के स्कूलों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा को बढ़ावा देने तथा सैनिक स्कूलों को मजबूत करने के लिए केंद्र सरकार से शिक्षा क्षेत्र से संबंधित केंद्र प्रवर्तित योजनाओं में नब्बे प्रतिशत अंशदान प्रदान करने की मांग करते हुए कहा कि राज्यों के अल्प वित्तीय संसाधनों को ध्यान में रखते हुए शेष दस प्रतिशत का वित्तीय भार ही राज्यों पर छोड़ा जाना चाहिए, ताकि इस केंद्रीय वित्तीय मदद से स्कूली शिक्षा के ढांचे और उसकी गुणवत्ता को बेहतर बनाया जा सके।

श्री गोविंद सिंह डोटासरा ने नई दिल्ली के मानिकशां सेंटर में आयोजित सैनिक स्कूल सोसायटी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की बैठक में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए यह मांग रखी। श्री डोटासरा ने कहा कि पूर्व में भी केंद्र प्रवर्तित योजनाओं में केंद्र और राज्यों का अंशदान नब्बे और दस प्रतिशत का ही रहता था लेकिन अभी इसको घटाकर केंद्र

सरकार ने साठ अनुपात चालीस कर दिया है,इससे राज्यों पर वित्तीय भार काफी बढ़ गया है तथा केंद्र प्रवर्तित योजनाओं को समय पर पूर्ण करने में तथा विशेषकर शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने में राज्यों को काफी वित्तीय परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। •

सेंटर फॉर कंटेंपरेरी आर्ट

राजस्थान सरकार द्वारा राज्य की कला और संस्कृति को देश-विदेश में पहुंचाने के प्रयासों में एक नया आयाम जुड़ा है। 28 जनवरी, 2020 को राज्य सरकार के दिल्ली स्थित बीकानेर हाउस में नवनिर्मित

सेंटर फॉर कंटेपरेरी आर्ट, बिल्डिंग में प्रथम कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आवासीय आयुक्त श्रीमती टी.जे.कविथा और राजस्थान फांउडेशन के आयुक्त श्री धीरज श्रीवास्तव उपस्थित रहे। श्री धीरज श्रीवास्तव ने बताया कि कंटेपरेरी आर्ट के लिए समर्पित यह सेंटर देश का एक अनोखा सांस्कृतिक केन्द्र होगा जहां राजस्थान सहित देश-विदेश के कंटेपरेरी आर्ट से जुड़े कलाकारों के आर्ट वर्क को प्रदर्शित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि बीकानेर हाउस देश की राजधानी की प्रतिष्ठित जगहों में शुमार है। यहां शुरू किए गए इस सेंटर फॉर कटेंपरेरी आर्ट से राजस्थान की कला और संस्कृति के साथ-साथ तिहासिक विरासत को देश-विदेश में पहुंचानें के प्रयासों को नया आयाम मिलेगा। •

– शिवराम मीना

छाया चित्र : सुजस

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जयपुर को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज प्रमाण–पत्र मिलने पर अपनी प्रसन्नता और गर्व प्रकट करते हुए कहा कि मैं यह सम्मान जयपुर और राज्य के नागरिकों को समर्पित करता हूं। उन्होंने कहा कि जयपुर दुनियां का एक सुनियोजित एवं सुन्दर शहर है। उन्होंने राज्य की राजधानी जयपुर की विरासत को सुरक्षित रखने का आह्वान किया।

विश्व विरासत शहर जयपुर

– नलिन चौहान

आधुनिक राजस्थान के इतिहास की यात्रा में इस वर्ष का फरवरी महीना सदा के लिए एक मील का पत्थर हो गया। इसका कारण था संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की महानिदेशक ऑड्रे अजोले ने जयपुर नगर के परकोटे को औपचारिक रूप से विश्व विरासत शहर का दर्जा दिया। सांस्कृतिक रूप से संपन्न राज्य राजस्थान की राजधानी जयपुर में आयोजित एक समारोह में शहरी विकास और आवास मंत्री शांति धारीवाल ने विश्व विरासत प्रमाण–पत्र प्राप्त किया। जयपुर नगर का परकोटा देश की 38 वीं ऐसी विरासत हो गई है, जिसे विश्व धरोहर में शामिल किया गया है।

गुजरात के अहमदाबाद के बाद जयपुर राजस्थान का पहला और देश का दूसरा ऐसा शहर है, जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल की सूची में सम्मिलित किया है। उल्लेखनीय है कि पिछले बरस अजरबैजान के बाकू शहर में यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति के 43वें सत्र (30 जून से 10 जुलाई 2019) के बाद के जयपुर को चिन्हित किया। इससे पहले वर्ष 2018 में आईसीओएमओएस (स्मारक और स्थल पर अंतरराष्ट्रीय परिषद्) ने जयपुर का निरीक्षण किया था। उसके बाद ही बाकू में विश्व धरोहर समिति ने जयपुर के प्रस्ताव पर विचार करने के बाद उसे यूनेस्को विश्व विरासत स्थल सूची में शामिल किया।

यूनेस्को भारत कार्यालय के निदेशक एरिक फाल्ट का कहना था कि वर्ष 2018 में मुंबई के विक्टोरियन गोथिक एंड आर्ट डेको इनसेंबल के सफल नामांकन के बाद यह दर्जा भारत के शानदार विरासत स्थल का एक और प्रमाण है। फाल्ट ने कहा, मैं इस सफल नामांकन के लिए भारत सरकार, राजस्थान सरकार और जयपुर शहर को तहे दिल से बधाई देता हूं।

विश्व विरासत सूची में अभिलेखन के लिए एक वर्ष में केवल एक ही स्थल पर विचार किया जा सकता है। विश्व विरासत सूची में स्थलों को जोड़ना एक सतत प्रकिया है। विभिन्न स्थलों को, उनकी मानदंडों को पूरा करने की क्षमता और उनके उत्कृष्ट सर्वव्यापी महत्व के प्रदर्शन के आधार पर चुनने के बाद विभिन्न राज्य सरकारों के समर्थन से सूची में शामिल किया जाता है। विश्व में सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक विरासत के संरक्षण हेतु लक्षित यूनेस्को के विभिन्न कन्वेंशनों का भारत एक पक्षकार है। ये अंतरराष्ट्रीय संधियां प्राचीन पुरातत्वीय स्थलों, अमूर्त एवं अन्तर जलीय विरासत, संग्रहालय संग्रहों, वाचिक परम्पराओं और विरासत के अन्य रूपों सहित विश्व की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और सुरक्षा करने तथा सृजनात्मकता, नवोन्मेष एवं गत्यात्मक सांस्कृतिक क्षेत्रों के उद्भव में सहायता प्रदान करने का प्रयास करती हैं।

एक सदस्य राष्ट्र होने के कारण भारत सरकार विश्व सांस्कृतिक और नैसर्गिक विरासत के सरंक्षण के साथ-साथ अमूर्त सांस्कृतिक विरासत आदि की सुरक्षा के लिए यूनेस्को में अपना अनिवार्य अंशदान करती है। यूनेस्को के साथ भागीदारी ने भारत की समृद्ध मूर्त एवं अमूर्त दोनों सांस्कृतिक विरासतों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने और उसके महत्त्व को बढ़ाने में विभिन्न तरीकों से सहायता की है। जिसके परिणामस्वरूप अन्य बातों के साथ-साथ देश में पर्यटकों की संख्या और राजस्व सृजन में बढ़ोतरी हुई है।

देश के उत्तर-पश्चिमी राज्य राजस्थान के परकोटे वाले जयपुर की स्थापना वर्ष 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। अरावली पर्वतमाला की पहाड़ियों में स्थित क्षेत्र के दूसरे शहरों से भिन्न जयपुर को मैदानी भाग में बनाया गया था। एक स्वप्निल योजना को मूर्त रूप देते हुए नवग्रहों का प्रतिनिधित्व करने वाले वास्तु पुरुष मंडल के प्रतीक को धरातल पर आकार दिया गया। नव स्थापित राजधानी जयपुर के शिल्प और विज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र बनने के कारण से पुरानी राजधानी आमेर का गौरव कम हुआ। जयपुर के बसने से पहले आमेर कछवाहा राजाओं की राजधानी था। राजा मानसिंह ने आमेर महल का निर्माण कराया था। लेकिन सवाई जयसिंह ने इसको अंतिम रूप दिया। परकोटे वाले नगर की सुरक्षा प्राचीरें आमेर से जा मिलती हैं और यद्यपि दोनों राजधानियों के मध्य छह मील की दूरी है, परन्तु प्राचीरों के कारण दोनों एक ही इकाई प्रतीत होती है।

भारत में जयपुर ही एकमात्र ऐसा नगर है जो योजनानुसार वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर बसाया गया है। सभी सड़कें और गलियां सीधी रेखा में समकोण बनाती हुई एक-दूसरे को काटती हुई आगे बढ़ती जाती हैं। यहां नगर निर्माण कला और वास्तुशिल्प परम्परागत ढंग से विकसित होती रही। यह संयोग की बात नहीं है कि राजस्थान के स्थान-नामों में फारसी-अरबी मूल के शब्दों के बजाय संस्कृत मूल के शब्दों का ही बाहुल्य है, जैसे गढ़, पुर इत्यादि। राजस्थान के नगरों के प्रतिरक्षामूलक स्वरूप के दृष्टिगत उन्हें दुर्ग-नगर की संज्ञा देना कतई गलत न होगा। किला, तालाब और बाजार चौक, ये तीन जगहें राजस्थानी नगर के सरंचनात्मक कीलक थे। उनकी अवस्थिति के अनुसार ही सड़कों का जाल विकसित होता था।

विद्याधर चक्रवर्ती नामक एक बंगाली ब्राहण, जो कि शिल्पशास्त्र का अच्छा ज्ञाता था, की नगर निर्माण और वैज्ञानिक संकल्पना की इस नगर के निर्माण में मुख्य भूमिका थी। सवाई जयसिंह की ज्योतिष तथा इतिहास सम्बन्धी अभिरुचियों में दीवान विद्याधर प्रधान सहयोगी थे। विद्याधर की देखरेख में वास्तुविदों ने नक्शे के आधार पर सारी कल्पना को मूर्त रूप दिया। उसकी सहायता से ही उसने चौरस आकार की सीधी सड़कें और गलियों वाली बस्ती बसाना आरम्भ किया जो जयपुर के नाम से विख्यात है। नगर निर्माण शैली के विचार से यह नगर भारत और यूरोप में अपने ढंग का अनूठा है, जिसकी समकालीन और वर्तमान विदेशी यात्रियों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इस नगर का गुलाबी रंग आज भी जयपुर को गुलाबी नगर के नाम से ख्याति दिला रहा है।

छाया चित्र : राजेन्द्र शर्मा

छाया चित्र : राजेन्द्र शर्मा

विद्याधर, एक बंगाली पुजारी रत्नागर्भा सार्वभौम भट्टाचार्य, जो कि आमेर में स्थापित शिला देवी की प्रतिमा के साथ आमेर आए थे, के वंशज थे। पुजारी की बेटी के पोते विद्याधर के पितृकुल चक्रवर्ती था। कुछ समकालीन पुस्तकों में विद्याधर का उल्लेख है, जिनमें गिरधारी का भोजसार और कृष्ण भट्ट का ईश्वरविलास महाकाव्यम है। इन स्रोतों से पता चलता है कि निजी घरों की योजनाओं, उदाहरण के लिए जयपुर में बसने के लिए आमंत्रित व्यापारी, को विद्याधर से अनुमोदन प्राप्त करना होता था। ऐसा नगर योजना में राज्य के नियंत्रण को कायम रखने और भवनों की ऊंचाई और निर्माण के प्रकार की एकरूपता को सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। यह बात सवाई जयसिंह के घासीराम मुरलीधर नामक व्यापारी को लिखे पत्र से उजागर होती है। जयसिंह ने व्यापारी को पत्र में विद्याधर के निर्देशों के अनुसार कार्य करने की बात कही है। विद्याधर के जिम्मे जयपुर में ठाकुरों के घरों के रखरखाव के लिए आने वाले व्यय के लिए उनकी आय से 10 प्रतिशत की वसूली का भी काम था। जयपुर में आज भी विद्याधर का रास्ता, विद्याधर कॉलोनी और आगरा रोड पर विद्याधर जी का बाग है, जिसे महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने जयपुर के वास्तुविद की स्मृति में बनाया था।

जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह के राजकवि देवर्षि श्रीकृष्ण भट्ट ने इस नगर का निर्माण अपनी आंखों से देखा था और जयसिंह की मृत्यु के एक वर्ष बाद ही अपने ईश्वरविलास महाकाव्य में उन्होंने नगर के विभिन्न निर्माण कार्यों और बसावट के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। हिन्दी के कवियों में इस नवनिर्मित नगर में चाकसू से आकर बसने वाले जन कवि बखतराम साह ने अम्बावति (आमेर) और सांगानेरि (सांगानेर) के बीच सोपुर सो बसाये गये सवाई जयपुर का बड़ा सुन्दर और ब्यौरेवार वर्णन किया है। वर्ष 1764 में हिन्दी के एक जैन विद्वान भाई रायमल्ल ने जयपुर को एक तीर्थ और जैनपुरी तक लिखा क्योंकि यहां दिगम्बर जैनियों के जितने मंदिर और जितनी जनसंख्या है, उतनी किसी देश के किसी अन्य नगर में नहीं। वर्ष 1739 में लिखित भोजनसार में भी गिरधारी नामक कवि ने ब्रजभाषा में जयपुर का बड़ा समसामयिक, प्रामाणिक और प्रभावशाली वर्णन किया है।

निर्विवाद रूप से जयपुर एक अभिजात्य नगरीय जीवन वाला शहर है। नगर योजना और समृद्ध वास्तुकला जयपुर की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं। जयपुर की शहरी आयोजना में प्राचीन हिंदू, प्रारंभिक आधुनिक मुगल काल और पश्चिमी संस्कृतियों के विचारों का समावेश परिलक्षित होता है। इसे वैदिक वास्तुकला में वर्णित व्याख्या के आधार पर ग्रिड योजना के अनुरूप बनाया गया था। ग्रिड योजना के मॉडल की पश्चिम में अधिक स्वीकार्य उपस्थिति है जबकि शहर के विभिन्न क्षेत्रों (चौकड़ियों) की व्यवस्था से पारंपरिक हिंदू अवधारणाओं के संदर्भ का आभास होता है। अपना पुराना रूप नगर-प्राचीर से घिरे मध्य भाग ने ही सुरक्षित रखा है। यहां इमारतें वैसी ही सुंदर और शानदार हैं और सड़कें भी आधुनिक जीवन की जरूरतों के दबाव को झेलती हुई वैसी ही खुली-खुली और चौड़ी लगती हैं।

नगर के परकोटे वाला भाग जीवंत विरासत वाले शहर जयपुर का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। अगर इतिहास में झांकें तो पता चलता है कि नगर के परकोटे की दीवार प्रतिरक्षा की व्यवस्था का भाग नहीं थी। बल्कि परकोटे की दीवार को नगर की सीमाओं को परिभाषित करने और एक प्रकार की व्यवस्था की भावना को स्थापित करने के उद्देश्य से निर्मित किया गया था। सड़कों का पदानुक्रम स्पष्ट है, जिसमें कार्यात्मक और बहुआयामी विविधताएं परिलक्षित होती हैं। भारत के अन्य नगरों की भांति जयपुर में भी मुख्य सड़कें सार्वजनिक संपर्क साधन की भूमिका निभाती हैं। वे व्यापार के केन्द्र, सभा स्थल, जुलूस मार्ग आदि का काम करती हैं। जयपुर की चौड़ी और सीधी सड़कें आधुनिक परिवहन की अपेक्षाओं के भी पूर्णत: अनुरूप हैं।

जब हम जयपुर की सड़कों और लंबे-चौड़े चौकों से गुजरते हैं, बाहर की सीढ़ियों के जरिए घरों की चौरस, खुली छतों से उतरते हैं और अलंकृत ड्योढ़ियों से भीतरी अहातों को झांकते हैं तो दिग्-विस्तार की अविच्छिन्नता का एक असमान्य-सा आभास होता है। बरामदों की स्तंभ-पंक्तियां और अन्य वास्तु-रचनाओं तथा अंगों की एकरूपता सड़क को व्यवस्थित शक्ल प्रदान कर देती है। आवृत्तिशीलता से अविच्छिन्नता का आभास पैदा हो जाता है। उन्हीं मानक प्रारूपों और

छाया चित्र : सुजस

एकरूप अंगों को जिन विभिन्न प्रकार से संजोया गया है, वह जयपुर के निर्माताओं की अक्षय कल्पना तथा कला-कौशल की शानदार मिसाल है। छतरी (गुंबदयुक्त मंडप) और बंगलादार (नुकीले किनारोंवाली ढलवां छत के आकार का सजावटी शिखर, जिसका अनुकरण बंगाली लोक वास्तुशिल्प से किया गया था) विभिन्न संयुजों में हर कहीं दोहराये गये हैं। उनका लयात्मक विन्यास सड़क की आकाशरेखा को अत्यंत नयानाभिराम बना देता है।

राजस्थान के अन्य नगरों की भांति जयपुर में भवनों के सड़क की ओर अभिमुख भाग अपने कलात्मक अलंकरणों की विपुलता से चकित कर देते हैं। जयपुर में सड़क आखिर में जाकर किसी महल अथवा बड़ी इमारत से अवरूद्ध नहीं हो जाती है, जैसा कि यूरोपीय नगरों में आमतौर पर पाया जाता है। यहां बुर्जनुमा दरवाजे बताते हैं कि भीतर कोई महत्त्वपूर्ण इमारत है।

वास्तविकता में यह नगर सुरक्षा की दृष्टि की अपेक्षा विभिन्न प्रकार के व्यापार, कला और शिल्प में लगे विभिन्न समुदायों के लिए एक बसावट के रूप में बनाया गया था।

एक व्यावसायिक राजधानी के रूप में आकल्पित (डिजाइन) इस शहर ने आज तक अपने स्थानीय व्यापार, कुटीर उद्योग और सहकारी परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखा है। मुख्य गलियों के साथ बने बाजारों, दुकानों, घरों और मंदिरों के अग्रभाग समान थे। इन गलियों में एक पंक्ति के समान निर्मित गलियारे मध्य में मिलते थे। जिससे बड़े सार्वजनिक चौराहे बनते थे जो कि चौपड़ कहलाते थे। मुख्य गलियों के साथ बने बाजारों, दुकानों, घरों और मंदिरों के अग्रभाग समान थे।

जयपुर की मूल योजना के अनुसार केवल चार आयताकार खंड थे, जिसमें आज महल, पुरानी बस्ती, तोपखाना देश और मोदीखाना और विश्वेश्वरजी को मिलाकर खंड हैं। इन दो अंतिम खंडों को बांटने के लिए किसी भी सड़क की योजना नहीं बनाई गई थी। यह साफ नहीं है कि जब वर्तमान चौड़ा रास्ता और त्रिपोलिया गेट की योजना बनाकर उन्हें बनाया गया था, तब क्या स्थिति थी। पर यह स्पष्ट है चौड़ा रास्ता को बाजार, जैसा कि आज का जौहरी बाजार है, की तरह नहीं तैयार किया गया था। चौड़ा रास्ता के सामने कई महत्त्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं। शहर के लिए चार बाजारों की योजना बनाई गई, जिसे बाद में जौहरी बाजार, सिरह देवरी बाजार, किशनपोल बाजार और गणगौरी बाजार के नाम से जाना जाता है। मानचित्र पर दी गई प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, राज ने इन बाजारों के हर भाग में 162 दुकानें बनाई थी। किशनपोल बाजार इसका अपवाद था, जिसके पश्चिमी ओर 144 दुकानें बनी थीं। किशनपोल बाजार की एक तरफ 16 बीघा में 144 दुकानें थी जबकि सभी 162 दुकानें 18 बीघा में बनी थी।

नगर के नौ आयातकार भूखण्डों या चौकड़ियों में से, जो कुबेर की नौ निधियों की प्रतीक है, सात को नागरिकों के लिए-उनके आवासों, दुकानों और बाजारों, मंदिरों और मस्जिदों तथा उन कारखानों के लिए ही बनाया गया, जिनके कारण जयपुर की गिनती आगे चलकर भारत के प्रमुख औद्योगिकी केन्द्रों में हुई।

जयपुर की अधिकांश इमारतें जिस गुलाबी बलुए पत्थर से बनी हैं, उसकी रंगछटा भी जयपुर को एक समष्टि-रूप नगर बना देती है। पत्थरों की खूब टिकाऊ गारे के साथ चिनाई की हुई होने की वजह से बाहर पलस्तर की जरूरत नहीं है। बाद में जो इमारतें ईंटों से बनायी गयीं, उनके पलस्तर पर भी गुलाबी रंग का ही लेप है।

जयपुर में प्रवेश-द्वार के प्रति परंपरागत रवैया अपने चरम रूप में सामने आता है। प्रक्षेपों तथा देवलियों से युक्त शानदार नगर-द्वार महीन नक्काशियों, मूर्ति-अलंकरणों तथा चित्रकारी से सजे हुए हैं। द्वार के मध्य भाग में ऊपर दंतीली, नोकदार तथा अन्य किसी आकृति की मेहराब और शिखर पर गुंबदाकार छतरी बनी होती है, जो उसकी परिरेखा को बहुत ही अभिव्यक्तिपूर्ण बना देती है। जयपुर में छह नगर-

छाया चित्र : राजेन्द्र शर्मा

द्वार हैं और हर द्वार आकृति और सज्जा में दूसरे द्वारों से भिन्न है। यहां कोई भी प्रवेश द्वार अलक्षित नहीं रहता, चाहे उससे किसी इमारत में प्रविष्ट हुआ जाता हो अथवा किसी गली में। गली, मौहल्ला, इमारत, भीतरी अहाता, सबके प्रवेश-स्थल पर सुअलंकृत सिंह-द्वार बने हुए हैं। और वे सारी सड़क की शोभा में चार चांद लगा देते हैं।

जलेबी चौक जयपुर का सबसे बड़ा और सबसे महत्त्वपूर्ण चौक है (188 गुना 188 मीटर)। वह सभी ओर से इमारतों से घिरा हुआ है और उसके दो प्रकार्य थे। यहां सरकारी कर और खिराज की वसूली होती थी। किन्तु जलेबी चौक का मुख्य प्रयोजन यह न था। वह जयपुर के शासक की शान और ताकत का स्थल था। विशेष दिनों पर महाराजा की सवारी निकलती थी, सैनिक परेडें होती थीं और तमाशे, नाटक आदि आयोजित होते थे। जब महाराजा की सवारी निकलती थी, चौक में औत्सविक संगीत गूंजता था। जलेबी चौक से प्रासाद की मुख्य इमारतों तक चार दरवाजे हैं। एक मुख्य इमारत दीवाने आम है, जो चारों ओर से खुले बहुस्तंभी मंडप जैसा है। उनके मध्य में स्थित सिंहासन पर बैठकर महाराजा जनता को दर्शन देता था। राजप्रासाद का वास्तु-स्वरूप और अभिन्यास स्वाभाविकत: उसके निर्माता की रूचियों और रूझानों को प्रतिबिंबित करते हैं।

भारतीय नगर निर्माण कला के इतिहास में जयपुर पुरातन तथा नूतन को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी है। उसकी संरचना में मुख्य स्थान न मंदिर को प्राप्त है, न सांमत के आरक्षित निवास को, जैसा कि ठेठ सांमती नगरों में पाया जाता है। उसके नगर-प्राचीर सुरक्षा के लिए नहीं बनाए गये हैं। इसके साथ ही उसका ढांचा हडप्पा काल से चली आ रही पारंपरिक ग्रिडनुमा योजना पर आधारित है, जिसमें मुख्य सड़कें, व्यापार केन्द्र का भी काम करने वाली सड़कें विशेष स्थान रखती हैं।

आगे चलकर अपने ऐसे अभिन्यास की बदौलत ही जयपुर बिना किसी बाधा के एक बहुत बड़े व्यापारिक, औद्योगिक और प्रशासनिक केन्द्र में विकसित हो सका। जयपुर का बहुत ही स्पष्ट नगर रूप, नयी सामाजिक व्यवस्था-पूंजीवाद-के अंतर्गत भारत की नगर निर्माण कला के विकास का पूर्वाभास देता था।

जयपुर की वेधशाला (जंतर मंतर) को नगर की सर्वप्रथम निर्मितियों में गिना जाता है। यह खगोलीय वास्तुशिल्प का विश्व में ज्ञात एक मात्र सबसे पहला नमूना है। इससे अपने युग के खगोलविज्ञान की उपलब्धियां साकार बनी है। यहां जो उपकरण स्थापित है, उनकी सहायता से बड़ी यथातथ्यता के साथ नगरों के अक्षांशों तथा देशांतरों का परिकलन, पंचांग की रचना, ग्रहण के समय का निर्धारण और ऐसी बहुत-सी दूसरी चीजें की जाती थीं, जो समाज की व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करती थी। पंचांग रचना धार्मिक महत्त्व रखने के साथ-साथ राज्य की स्वतंत्रता और शक्ति का एक प्रमुख अभिलक्षण भी था।

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने जयपुर को ऐसा सुनियोजित और सुअभिन्यस्त नगर कहा था कि जो नगर-आयोजना का प्रतिमान बन सकता है। ज्ञात है कि सुप्रसिद्व फ्रांसिसी वास्तु-विशेषज्ञ ला कार्बूजिये ने भी, जिसने पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ की योजना बनायी थी (1952-1955), जयपुर से ही प्रेरणा ग्रहण की थी। जयपुर की भांति चंडीगढ़ भी समचतुस्त्र सेक्टरों में विभाजित है। जयपुर भारत का एक ऐसा शहर है, जिसने भविष्य की आवश्यकताओं का प्रावधान रखते हुए परंपरा के सकारात्मक मूल्यों को कायम रखा है।

जयपुर नगर परकोटे के भीतर नीलगरों के नले में पहुंचकर ऐसा महसूस होता है कि मानों दुनिया के सभी रंग यहीं पर अपनी छटा लुटा रहे हैं। बल खाती गलियों में इधर-उधर रंगाई के कारखाने। विशालकाय बर्तनों में खौलता रंगीन पानी। झुलसा देने वाली भट्टी की तपिश को धता बता कर गर्म रंगे हुए कपड़ों को ठण्डे पानी से खंगालते मजदूर। महिलाएं-बच्चे अटारी व मुण्डेर पर रंगों में नहाए हुए कपड़ों को सुखाने में मशगूल। जगह-जगह नालियों में बहता हुआ रंगीन पानी। आते-जाते लोगों के रंगमय हाथ, चहुंओर रंग ही रंग। एक दौर था-जब लहरिया, चुनरी के साफे, पीले पोमचे, सुहाग-चुनड़ी, मामा कांवल, सुआ बेल के पीले आदि परिधानों के प्रति लोगों की दीवानगी परवान पर थी। गणगौर व तीज जैसे त्योहारों पर महिलाओं द्वारा लहरिया बड़े चाव से ओढ़ा जाता था।

आज परकोटे वाले नगर में विरासत वाली अनेक बसावटें परिवर्तन की प्रतीक्षा में हैं तो सामाजिक स्वरूप और जीवन स्तर की गुणवत्ता को बनाए रखने की बड़ी चुनौती है। इसके बावजूद, परकोटे वाला जयपुर नगर अपनी भौतिक विशेषता को कायम रखते हुए अभी भी एक संपन्न आर्थिक केंद्र है। •

छाया चित्र : राजेन्द्र शर्मा

गुलाबी नगर जयपुर बना विश्व विरासत शहर

यूनेस्को के अनुसार अपने स्थापत्य एवं विविधता के लिए गुलाबी नगरी जयपुर का विश्व में विशिष्ट स्थान

अपनी कला स्थापत्य और संस्कृति के लिए विश्व में एक खास पहचान रखने वाले गुलाबी नगर जयपुर के सम्मान में एक और सितारा तब जुड़ गया जब यूनेस्को की महानिदेशक श्रीमती ऑड्रे अजोले ने अल्बर्ट हॉल पर आयोजित समारोह में स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल को जयपुर का वर्ल्ड हैरिटेज सिटी का प्रमाण-पत्र प्रदान किया।

यूनेस्को की महानिदेशक श्रीमती ऑड्रे अजोले ने कहा कि मुझे जयपुर आकर बहुत खुशी हुई। मैं यूनेस्को के हेड क्वार्टर पैरिस से एक संदेश लेकर आई हूं। जयपुर के लोगों द्वारा एक सतत भविष्य के निर्माण के लिए सांस्कृतिक विरासत का जो संरक्षण किया गया है उन प्रयासों को अन्तरराष्ट्रीय समुदाय ने मान्यता प्रदान की है। यह गर्व का विषय है कि यूनेस्को द्वारा जयपुर परकोटा शहर को विश्व विरासत सूची में अंकित किया गया है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जयपुर अपनी विशिष्ट प्लानिंग के लिए पहले से ही विश्व में एक प्रतिष्ठित शहर है। इसकी वास्तु कला, किले, महल और खगोलियें निर्माण इसे दुनिया का अद्भुत शहर बनाते है। लेकिन यह शिला लेख (वर्ल्ड हैरिटेज सिटी की

सूची में शामिल होना) भविष्य के लिए इस सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की एक संयुक्त प्रतिबद्धता है।

उन्होंने कहा कि विरासत के संरक्षण का कार्य आसान नही होता है। क्योंकि सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के दौरान हमें कई दबावों का सामना करना पड़ता है। लेकिन यह कार्य आपके और हमारे बच्चों के भविष्य के लिए किया जाता है। क्योंकि यह एक सार्वभौमिक विरासत है। इससे राजस्थान के लोगों के दीर्घकालिक हित जुड़े हैं। यूनेस्को में जयपुर का एक विशिष्ट स्थान है। जयपुर हेरिटेज से संबंधित सभी आयामों में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहां की वास्तुकला में फारसी, मुगल और हिन्दु वास्तुकला का एक शानदार समावेश देखने को मिलता है। आमेर फोर्ट इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। जयपुर की विविधता इसे विश्व में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

राजस्थान में केवल वास्तुकला में ही नही बल्कि हस्तकला, संगीत, नृत्य, कटपुतली, कशीदाकारी, ज्वैलरी तथा सभी परम्पराओं में जीवंतता और विविधता दिखती है। उन्होंने पर्यटन विभाग एवं यूनेस्को के बीच पश्चिमी राजस्थान में इंटेंजेबल हेरिटेज प्रमोशन के लिए किए गये करार की सराहना करते हुए कहा कि यह करार वहां की कला एवं कलाकारों को विश्व में एक नई पहचान देगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पर्यटन मंत्री श्री विश्वेन्द्र सिंह ने कहा कि जयपुर विश्व के बेस्ट प्लान्ड शहरों में से एक है। यह हमारे लिये गर्व की बात है कि यूनेस्को कि महानिदेशक जयपुर पधारी है। भारत आने वाले पर्यटको के लिये मोस्ट फेवर्ड डेस्टीनेशन के रूप में जयपुर की पहचान है। विरासत पर्यटन का विकास करना हमारा लक्ष्य है। जो कि आम जन के लिए हितकारी साबित हो। राजस्थान के पर्यटन

छाया चित्र : सुजस

को नई ऊंचाइयां प्रदान करने के लिए नई पर्यटन नीति विकसित की जा रही है। वाईल्ड लाइफ, रिलिजन और हेरिटेज का समन्वय करके नये पर्यटक सर्किट विकसित किये जा रहे हैं। पश्चिमी राजस्थान में इन्टेन्जेबल हेरिटेज प्रमोशन प्रोजेक्ट के तहत 10 नये सांस्कृतिक गन्तव्य स्थल विकसित किये जा रहे हैं। जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर और जैसलमेर में इन सांस्कृतिक केन्द्र के विकसित होने से पर्यटन को नई दिशा एवं नये आयाम मिलेंगे और वहा के स्थानीय कलाकारो को एक नई पहचान मिलेगी।

इस अवसर पर यूनेस्को और पर्यटन विभाग के बीच हाल ही में हुए एमओयू के आधार पर शुरू किये जा रहे इन्टेन्जेबल हेरिटेज प्रमोशन प्रोजेक्ट के ब्राउसर का भी विमोचन यूनेस्को महानिदेशक एवं अतिथियों द्वारा किया गया। पर्यटन मंत्री ने यूनेस्को की महानिदेशक को केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के भ्रमण के लिए भी आमंत्रित किया।

कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला ने कहा कि जयपुर को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज सूची में शामिल किए जाने से प्रदेश के पर्यटन को और बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान कि अपनी कला और संस्कृति की सतरंगी विरासत के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान है, हमारा प्रदेश कला और संस्कृति के माध्यम से टूरिज्म को प्रमोट करने के लिए जाना जाता है। जयपुर तो पर्यटन के क्षेत्र में देश के गोल्डन ट्रायंगल का हिस्सा है, देश में आने वाले विदेशी पर्यटक आगरा, दिल्ली और जयपुर अवश्य आते हैं।

डॉ. कल्ला ने कहा कि राजस्थान में बर्फ और समुद्र के अलावा सब कुछ है, प्रदेश ने देश की कला और संस्कृति की परंपराओं को समृद्ध बनाने में सदैव अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, यहां के किले, मंदिर, हवेलियां और जल संरक्षण के लिए बनाई गई प्राचीन बावड़ियां आदि जीवंतता और शिल्प कला की अनुपम नजीर हैं।

कला, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री ने कहा कि वर्ष 2010 में जयपुर का जंतर मंतर पहली बार यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज सूची में शामिल किया गया। इसके बाद 2013 में रणथंभौर, जैसलमेर, चित्तौड़, कुंभलगढ़, गागरोन तथा आमेर के किले को वर्ल्ड हैरिटेज की सूची में शामिल किया गया था। अब जयपुर को इस प्रतिष्ठित सूची में शामिल किया जाना न केवल गुलाबी नगर बल्कि पूरे राजस्थान के लोगों के लिए गर्व की बात है।

स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि गुलाबी नगरी जयपुर अपनी सम्पन्न स्थापत्य कला, वैभवशाली भवनों, वास्तुशिल्प, नगर नियोजन, संस्कृति और अप्रतिम सौन्दर्य के विश्वविख्यात है। जब विश्वभर में नगर नियोजन एक अज्ञात विषय था तब जयपुर की स्थापना हुई, यहां की चौड़ी सड़कें, चौपड़ें, कतार में दुकानें, ऊंची प्राचीरें रह रह कर इस शहर के तात्कालीक शासकों एवं निर्माताओं की याद दिलाती है। जयपुर शहर को विश्व विरासत सूची में शामिल करवाने के प्रयास वर्ष 1998 सें ही शुरू कर दिये गये थे। प्रयासों का ही नतीजा है

कि अजरबैजान के बाकू में आयोजित यूनेस्को के 43वें सम्मेलन में जयपुर को विश्वविरासत शहर का दर्जा प्राप्त हुआ। जयपुर के हैरिटेज को संरक्षित रखने के लिए राज्य स्तरीय हेरिटेज कमेटी गठित की जा चुकी है। इसके साथ ही चारदीवारी के भीतरी क्षेत्र का 360 डिग्री ड्रोन सर्वे करवाकर 3डी मैप तैयार किया गया है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में स्थित हैरिटेज महत्व के अतिमहत्वपूर्ण भवनों की विस्तृत ऐतिहासिक सूचना भी तैयार की गई है। ताकि हेरिटेज महत्व के भवनों के बारें में यहां के निवासियों एवं आने वाले देशी-विदेशी पावणों को जानकारी दी जा सके। जयपुर शहर को हैरिटेज का दर्जा मिलने से यहां का व्यापार एवं पर्यटन बढ़ेगा तथा विश्व में गुलाबी नगर जयपुर का नाम होगा।

इस अवसर पर आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक संध्या में जाने माने कलाकारों द्वारा कालबेलिया, कत्थक, लाल आंगी गेर, चरी, भवाई नृत्य पेश किये गये। प्रसिद्ध कोरियोग्राफर पदम् श्री बंशीकोल के निर्देशन में हुए इस कार्यक्रम में लंगा मांगणियार की फॉक सिम्फनी एवं भपंग वादन ने लोगों की जबरदस्त तालियां बटौरी।

इस अवसर पर परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास, मुख्य सचेतक श्री महेश जोशी, विधायक श्री अमीन कागजी, श्रीमती कृष्णा पूनिया, मुख्य सचिव डीबी गुप्ता, प्रमुख शासन सचिव पर्यटन विभाग श्रेया गुहा, आयुक्त नगर निगम श्री विजय पाल सिंह, पर्यटन विभाग के निदेशक श्री भंवर लाल सहित प्रशासनिक अधिकारी, जन प्रतिनिधि एवं शहरवासी मौजूद रहे। •

शहर की विरासत को अद्भुत तरीके से संजोया गया है, इसकी अहमियत विश्वव्यापी है

यूनेस्को महानिदेशक ने जयपुर की विरासत को बताया अद्भुत

जिस तरह से इस शहर को आगंतुकों, राजस्थान और भारत के लोगों के लिए संजोकर रखा गया है, वह अद्भुत है। विरासत की दृष्टि से यह शहर वास्तव में एक खजाना है इसकी अहमियत विश्वव्यापी है, जिसके चलते ही इसे यूनेस्को विश्व विरासत स्थल की सूची में स्थान दिया गया है। इस शहर की बहुमूल्यता विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण संदेश देती है। इस शहर की विरासत मानव प्रतिभा और विविधता का अनूठा उदाहरण है। प्रभावशाली विविधताओं के कारण ही यह कला जन्म ले पाई है। यूनेस्को महानिदेशक ऑड्रे अजोले ने बुधवार को हवा महल के दौरे के दौरान विजिटर्स बुक में शहर के लिए यह कमेन्ट लिखकर न केवल जयपुरवासियों को बल्कि प्रत्येक भारतीय को गौरवान्वित कर दिया।

यूनेस्को महानिदेशक ऑड्रे अजोले बुधवार को जयपुर दौरे पर रहीं। इस दौरान उन्होंने यूनेस्को के अन्य प्रतिनिधियों के साथ आमेर किले का भ्रमण किया। उन्होंने आमेर किले की स्थापत्य कला का बारीकी से अवलोकन किया एवं शानदार स्थापत्य की प्रशंसा की। इस दौरान उन्होंने किले की वास्तुकला के बारे में जाना और उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। आमेर किले से उन्होंने जयपुर की खुबसूरत बसावट को कई बार निहारा।

इस दौरान मीडिया से मुखातिब होते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान की भव्यता विश्वव्यापी है। जिसको देखते हुए ही जयपुर शहर को विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया है। उन्होंने कहा कि यूनेस्को और जयपुर के बीच अटूट रिश्ता है, जो संस्कृति और विरासत के आधार पर वर्षों से चला आ रहा है। जयपुर को विश्व विरासत स्थल का दर्जा देकर आज इस रिश्ते को इस रूप में संजोया गया है।

यूनेस्को महानिदेशक जयपुर की सुंदरता से इस कदर अभिभूत हुईं कि उन्होंने कई स्थानों पर फोटो खिंचवाई। उन्होंने जल महल और हवा महल के सामने फोटो खिंचवाकर जयपुर भ्रमण की यादों को संजोया।

यूनेस्को महानिदेशक ने हवामहल के ऊपर से जयपुर का विहंगम दृश्य देखा और जयपुर की खूबसूरती की जमकर प्रशंसा की। इस दौरान वहां चल रहे कठपुतली शो को देखने से वह खुद को नहीं रोक पाईं। कलाकारों की कलाकारी से अभिभूत होकर उन्होंने कठपुतली हाथ में लेकर कलाकारों के साथ फोटो भी खिंचवाई।

यूनेस्को महानिदेशक ने नगर निगम जयपुर द्वारा हवामहल के बाहर लगवाई गई विश्व विरासत स्थल पट्टिका का अनावरण किया। पत्थर

पर बनाई गई इस पट्टिका की भी उन्होंने भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस दौरान प्रमुख शासन सचिव, पर्यटन विभाग श्रेया गुहा, आयुक्त नगर निगम जयपुर ग्रेटर एवं जयपुर हेरिटेज विजय पाल सिंह, पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर प्रकाश चन्द शर्मा, इतिहासकार रीमा हूजा, द्रौणा डायरेक्टर शिखा जैन, अतिरिक्त आयुक्त अरूण गर्ग सहित नगर निगम एवं पर्यटन विभागीय अधिकारी व आमजन उपस्थित रहे। •

छाया चित्र : सुजस

सूर्य रश्मियां निखारती हैं सोनार का सौन्दर्य

– डॉ.दीपक आचार्य

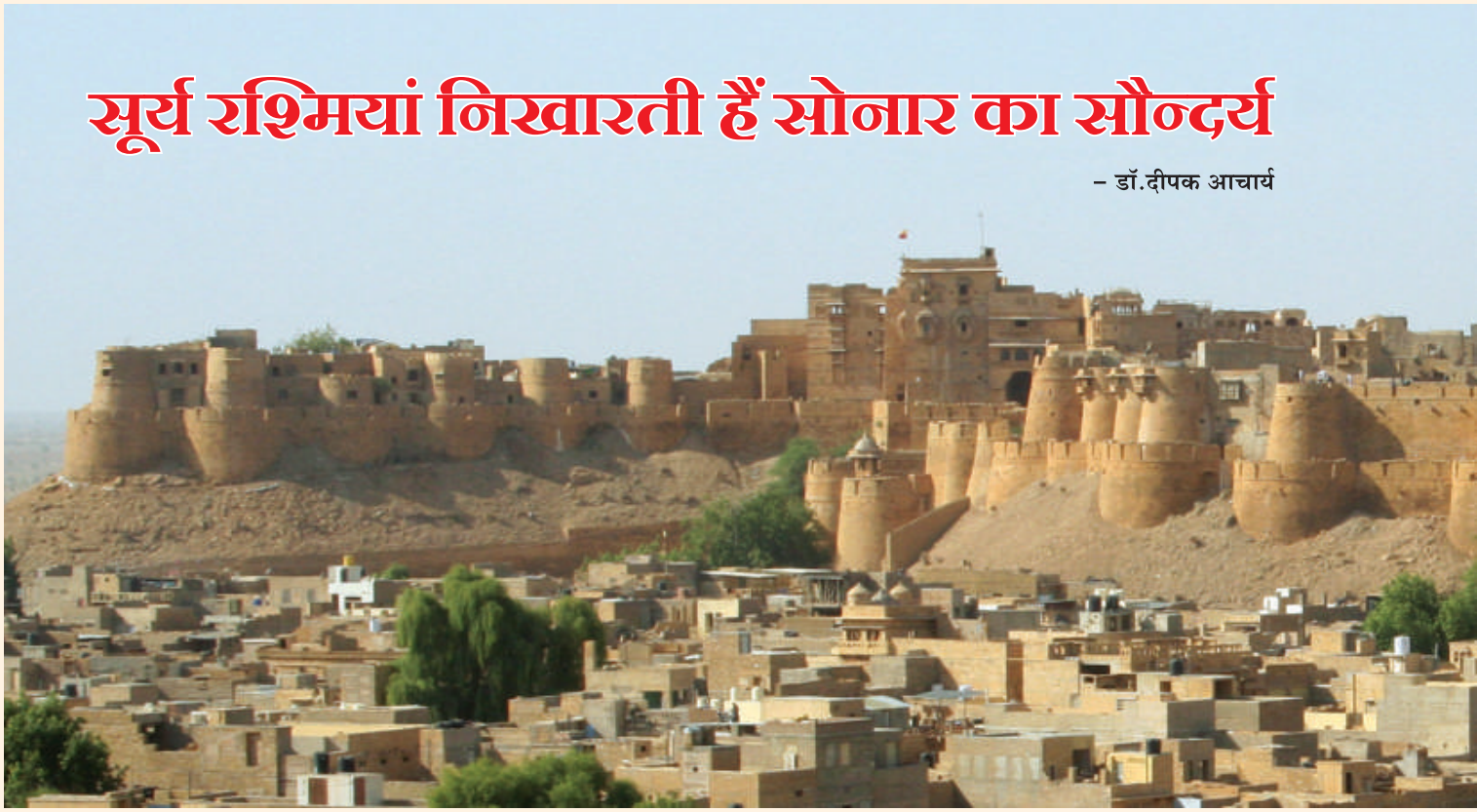

भारतवर्ष का एक अप्रतिम दुर्ग है-सोनार। राजस्थान की पश्चिमी सरहद पर पसरे मरुस्थल के बीच अवस्थित जग प्रसिद्ध सोनार दुर्ग की महिमा '' तीन लोक से मथुरा न्यारी'' जैसी ही है। पश्चिमी राजस्थान की कला-संस्कृति, शौर्य-पराक्रम और वीरता भरे इतिहास, दैवीय ऊर्जाओं और अध्यात्म से लेकर मरुस्थलीय लोकजीवन के सम्पूर्ण वैशिष्ट्य के हर पहलू और परिवेश के सुनहरे बिम्बों से साक्षात् कराता है- सोनार दुर्ग।

दुनिया वालों के लिए सोनार का किला सदियों से आकर्षण का केन्द्र रहा है। तभी सात समंदर पार से हजारों मील का सफर तय कर इसके कद्रदान अपने आपको जैसलमेर की वीथियों में पाकर दिली सुकून का अहसास करते हैं। बीसवीं सदी के आरंभ तक जैसलमेर वैश्विक व्यापार मानचित्र पर बड़ी कारोबारी मण्डी के रूप में प्रसिद्ध था। अफगानिस्तान, सिंध, इरान-ईराक, चीन, रूस तथा यूरोपीय देशों से मूल्यवान वस्तुओं के आयात-निर्यात व व्यापार का यही सहज सुलभ रेगिस्तानी मार्ग था जहां ऊंटों से कारोबार होता था। हीरे-जवाहरातों, इत्र, स्वर्ण, मेवा और अन्य बेशकीमती वस्तुओं के व्यापार का साक्षी व केन्द्र रहा है जैसलमेर का यह दुर्ग।

त्रिकूट पर्वत पर अवस्थित सोनार दुर्ग पीले पाषाणों से निर्मित है जिन पर पड़ने वाली पीत सूर्य रश्मियां इसे स्वर्ण आभा से मंडित कर देती हैं और दूर से यह स्वर्ण दुर्ग का आभास कराता है इसीलिए इसे सोनार दुर्ग नाम मिला।

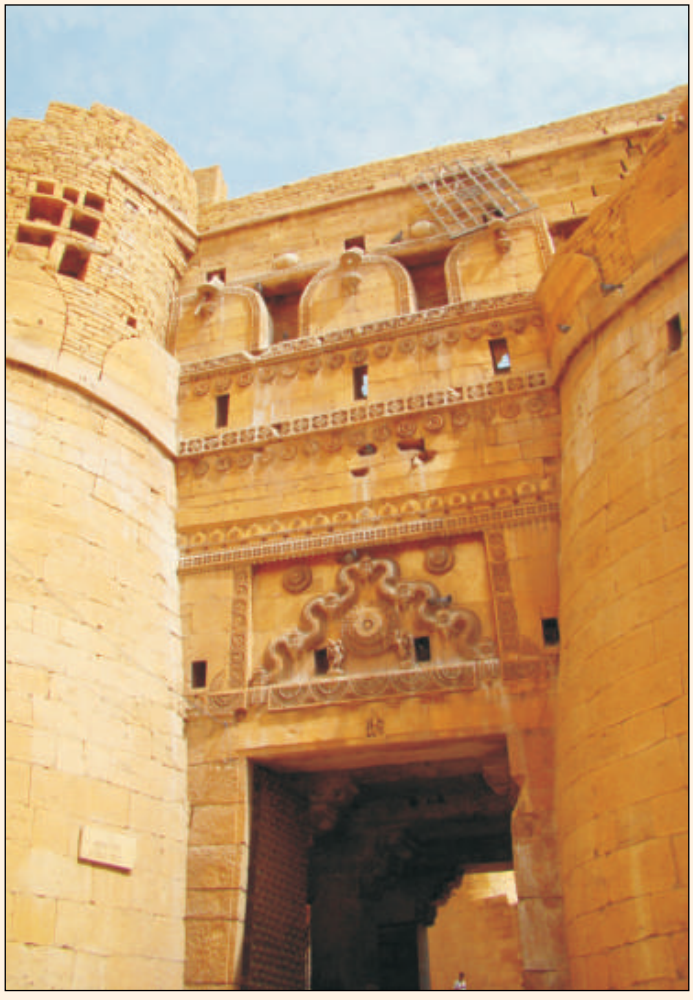

सत्यजीत रे निर्मित बंगला फिल्म ''सोनार किला'' ने इस दुर्ग को दूर-दूर तक प्रसिद्ध कर दिया। इस किले में सुनील दत्त की रेशमा और शेरा, कल्पना लाजमी की 'रुदाली', देवानंद की 'मैं सोलह बरस की' सहित कृष्णा, अलादीन, मुंबई से आया मेरा दोस्त, पर्यटन पर केन्द्रित 'हरिओम', जैसलमेर किले पर केन्द्रित 'नन्हा जैसलमेर' और डिज़्नी वर्ल्ड के लिए हॉलीवुड की 'लिली द विच' आदि कई फिल्मों ने जैसलमेर के इस नायाब दुर्ग और इसकी शोहरत को देश-दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाया। यही कारण है कि आज भी बंगाल तथा देश के अन्य हिस्सों के पर्यटकों के साथ ही गुजराती पर्यटक भी बहुत बड़ी संख्या में हर साल जैसलमेर आते हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी 18 मई 1974 को अपनी जैसलमेर यात्रा के समय यहां के सौन्दर्य से खूब प्रभावित हुई। इसके बाद उन्होंने यहां के स्थापत्य और शिल्प सौन्दर्य के संरक्षण और विकास में काफी रुचि ली। तभी से जैसलमेर के पर्यटन विकास की नींव पड़ी।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार जैसल नामक रावल (राजा) ने विक्रम संवत् 1212 में श्रावण शुक्ल द्वादशी (ईस्वी सन् 1155-56) त्रिकूट पहाड़ी पर जैसलमेर की नींव रखी। त्रिकोणीय पहाड़ त्रिकूटगढ़, त्रिकूट या गोडाहर पर स्थापित किले व राजधानी का नाम जैसल के नाम पर जैसलमेर (जैसलमेरु) प्रसिद्ध है।

जैसल द्वारा स्थापित इस त्रिकूटगढ़ का निर्माण सात वर्ष में पूर्ण हुआ। इसके बाद समय-समय पर शासकों ने इसमें पोलों, बुर्जो, प्रासादों आदि का निर्माण व विस्तार किया। रावल जैतसी, भीमसिंह, मनोहरसिंह,

अमरसिंह, जसवंतसिंह, अखेसिंह, गजसिंह आदि के समय दुर्ग में कई महत्त्वपूर्ण निर्माण हुए। इस दुर्ग की ख्याति में कहा गया है - 'गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो, अधगढ़ बीकानेर, भलो चुणाइयो भाटियो सिरे जैसलमेर।''

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार जैसलमेर के शासक भगवान श्रीकृष्ण के वंशज रहे हैं और जैसलमेर उनकी नवीं राजधानी के रूप में मान्यता रखता है -

काशी मथुरा प्रयागबड़ गजनी अर भटनेर,

दिगम दिरावल लुद्रवो नौवों जैसलमेर।

वास्तु शास्त्र के पुरातन सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित इस दुर्ग की सम्पूर्ण परिधि में 99 बुर्ज हैं। पूरा ही दुर्ग पीले पत्थरों से बना है तथा इसमें कहीं भी चूने या सीमेंट का

उपयोग नहीं हुआ है। एक-दूसरे पत्थरों को खांचों में जमा कर इस सुंदरतम परिक्षेत्र की सृष्टि की गई है। दुर्ग में लोक जीवन से लेकर देहिक, देविक भौतिक संसाधनों का पूरा समावेश है। सुंदरतम राज प्रासादों के साथ ही देवालयों, झरोखों, वीथियों आदि को स्थान दिया गया है। तत्कालीन राज शिल्पियों की बेजोड़ कल्पना की बदौलत सोनार दुर्ग में सारे द्वार अद्भुत सुरक्षा चक्र की तरह इस प्रकार घुमावदार बने हुए हैं कि इनमें एक से दूसरे द्वार को देख पाना संभव नहीं है। ढाई सौ फीट ऊंचा, डेढ़ हजार गज लम्बा तथा 750 गज चौड़ा यह पूरा दुर्ग पीत वर्णी विशाल पाषाणों से निर्मित है।

इसमें अखेपोल, सूर्यपोल, गणेशपोल और हवा प्रोल नाम से चार विशाल द्वार हैं। दुर्ग की लहराती चतुर्दिक सीमावर्ती अभेद दीवार में शस्त्रागार, तोपें रखने के स्थान,

अस्त्र-शस्त्र संचालन के सुरक्षित क्षेत्र बने हुए हैं। पूरे परकोटे पर भीमकाय बेलनाकार व गोल-मटोल पत्थर सुन्दर ढंग से रखे हुए हैं जिनका युद्ध कौशल से गहरा सम्बन्ध है। दुर्ग का पूरा मार्ग व चौक अब जैसलमेरी पीली पट्टियों से बना हुआ है।

दुर्ग में सर्पाकार घाटी भरे मार्ग से होकर दशहरा चौक में पहुंचा जाता है। यही चौक है जिसने कई शताब्दियों के उतार-चढ़ावों को देखा है। उत्सवों से लेकर वीरांगनाओं के साकों तक का साक्षी रहा यह स्थल आज भी मेहमानवाजी का मधुर संगीत सुनाता है।

लगभग पांच वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पसरा हुआ सोनार दुर्ग कलात्मक तथा बारीक शिल्प और स्थापत्य सौन्दर्य का भी गढ़ है जहां सुन्दर प्रासाद, गवाक्ष, स्तम्भ, मेहराब, गुम्बद, छतें, द्वार आदि सभी जगह इतनी मोहक कारीगरी एवं चित्रांकन है कि हर कोई देखते ही मुग्ध हो उठता है। दुनिया का यह ऐसा पहला दुर्ग है जो पूर्ण रिहायशी होने की वजह से जीवंत है और पूरे किले में एक से दूसरे छोर तक लोक जीवन का जीवंत सागर लहराता रहा है।

विभिन्न सम्प्रदायों के सौहार्द्र की धाराओं के प्रतीक इस दुर्ग में कई प्राचीन मन्दिर हैं जो अगाध लोक श्रद्धा के केन्द्र हैं। जैसलमेरवासियों में इनके प्रति आस्था का सागर सदियों से लहराता रहा है। इनमें क्षेत्रवासियों के आराध्यदेव लक्ष्मीनाथजी, रत्नेश्वर महादेव, लखुबीरा गणेश, हनुमानजी, सूर्य मन्दिर, शीतला माता, राज परिवार की कुलदेवी स्वाँगिया माँ आईनाथजी, घण्टियाली माता, चामुण्डा माता, टीकमदेव जी, ढूंढ़ापाड़ा स्थित भटियाणी माता, क्षेत्रपालजी, रत्ता बाबा का धूंणा, अन्नपूर्णा, सैण्ढल देवी, रामदेवजी, रणछोड़रायजी आदि मन्दिरों के साथ ही जैन धर्म का प्रमुख तीर्थ होने की वजह से इस दुर्ग में जैन सम्प्रदाय के कई मन्दिर हैं। इनमें शांतिनाथ, शीतलनाथ, संभवनाथ, कुन्थुनाथ, पार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभु, विमलनाथ, ऋषभदेव, व महावीर स्वामी आदि की प्राचीन मूर्तियों से युक्त जैन मन्दिर प्रमुख हैं। यहीं जैन मन्दिरों के भूगर्भ में जैन ग्रंथों और पाण्डुलिपियों, ताड़पत्रों तथा दिव्य सामग्री का दुर्लभ ज्ञान भण्डार है।

जैसलमेर के सोनार दुर्ग पर पानी की उपलब्धता के लिए कई कुएं हैं जिनका उपयोग सदियों से होता आया है। इनमें जैसलू, राणीसर, गोसीसर, बिल्ला आदि प्रमुख हैं। दुर्ग अपने आपमें किसी नगर से कम नहीं है जहां नगरीय वास्तु के अनुरूप विभिन्न बस्तियों की बसावट है। इनमें कुण्डपाड़ा, चौगानपाड़ा, व्यासापाड़ा, ढूण्ढापाड़ा, लादियापाड़ा, टेवाटापाड़ा, जंगापाड़ा, कोटड़ीपाड़ा, लधापाड़ा आदि हैं। दुर्ग के इन पाड़ों की वीथियां अपने आप में अनूठी ही हैं। जाने कितनी विलक्षणताओं और सौन्दर्य बिम्बों से युक्त सोनार दुर्ग की महिमा अवर्णनीय है। •

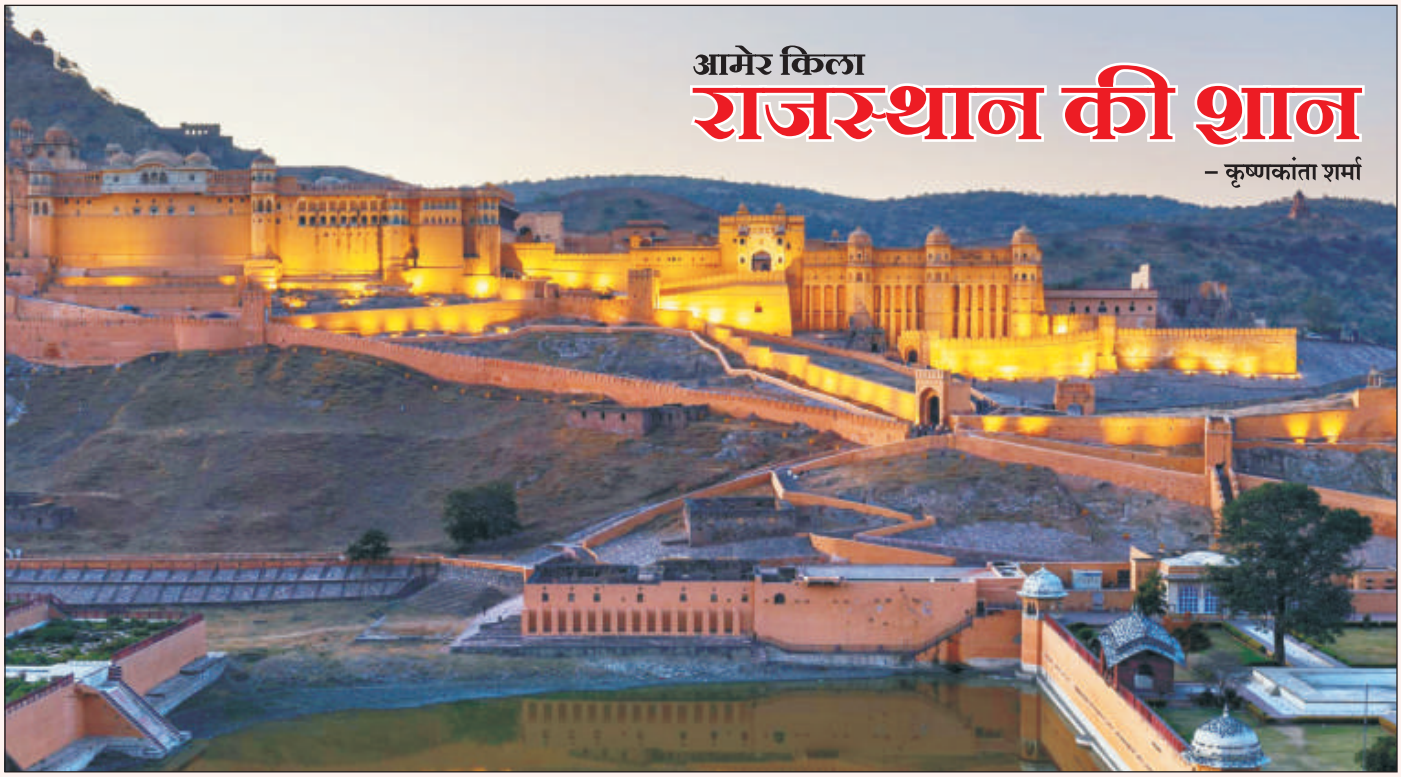

आमेर किला
राजस्थान की शान

– कृष्णकांता शर्मा

हिन्दू राजपूत वास्तुशैली से निर्मित ''आमेर किला'' राजस्थान के मानचित्र पर ही नहीं अपितु विश्व के मानचित्र पर अपनी अनोखी पहचान रखता है। किंदवती है कि किले का नाम ''अम्बा माता'' के नाम पर ''आम्बेर'' रखा गया था जो कालान्तर में ''आमेर'' हो गया है। आमेर कस्बा मूल रूप से स्थानीय मीणाओं द्वारा बसाया गया था। जिस पर कालांतर में कछवाहा राजपूत राजाओं ने राज किया। यह राजस्थान के प्रमुख एवं भव्य किलों में से एक है, जो जयपुर शहर से 11 कि.मी. दूरी पर उत्तर दिशा में अरावली पहाड़ियों पर स्थित है। इस पर्वतीय किले का निर्माण 16वीं शताब्दी में राजा मानसिंह प्रथम (1592–1615) द्वारा करवाया गया था। राजा मानसिंह मुगल शासक अकबर के दरबार के प्रमुख सेनापति और उनके नवरत्नों में से एक थे। इसके बाद 150 वर्षों तक निरन्तर इनके उत्तराधिकारियों द्वारा आवश्यकतानुसार एवं समयानुसार विस्तार, सौन्दर्यीकरण एवं अलंकरण का कार्य मिर्जा राजा जयसिंह (1611.1667) एवं महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय (1688.1743) द्वारा करवाये गये। इस भव्य किले के आंतरिक भाग पर हिन्दू एवं राजपूत वास्तुकला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, किन्तु बाह्य भाग पर मुगल वास्तुकला स्पष्ट दिखाई पड़ती है। आज भी आमेर का किला राजस्थान की शान व पहचान बढ़ा रहा है एवं गौरवपूर्ण, समृद्ध इतिहास की कहानी कह रहा है। इसका उपयोग राजपूत राजाओं ने अपने निवास स्थान के रूप में किया। महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने अपने शासन काल के दौरान राजधानी आमेर से जयपुर बना ली थी।

आमेर किले की भव्यता, सौन्दर्यीकरण, वास्तुकला, हिन्दू एवं मुगल शैली के सम्मिश्रण के कारण वर्ष 2013 में आमेर किले को यूनेस्को द्वारा ''विश्व विरासत सूची'' में सम्मिलित किया गया है। यह सम्मान आमेर किले को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनूठी पहचान दिलाता है।

इसके आंतरिक भाग में बने ऐतिहासिक महल, जलाशय, भित्ति चित्र, चारबाग पद्धति का उद्यान किले की खूबसूरती को चार-चांद लगा रहे हैं। इसमें प्रवेश हेतु दो द्वार बने हुए हैं। पूर्वी द्वार ''सूरजपोल'' एवं पश्चिम द्वार ''चांदपोल'' के नाम से जाना जाता है। दोनों द्वार से ''जलेब चौक'' में प्रवेश होता है, जहां एक बहुत बड़ा खुला चौक है। इसी चौक से मुख्य महल में जाने हेतु सिंहपोल द्वार से प्रवेश किया जाता है। सिंहपोल द्वार से प्रवेश उपरान्त ''दीवान-ए-आम'' परिसर बना हुआ है।

दीवान-ए-आम – दीवान-ए-आम में राजा का आम दरबार लगता

था। यह मुगल व राजपूत स्थापत्य कला के सम्मिश्रण का बेहतरीन नमूना है। संपूर्ण स्थापत्य लाल-बलूआ पत्थर एवं सफेद संगमरमर से निर्मित है। इसका निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम (1621 से 1667 ई.) द्वारा करवाया गया था। यह आकर्षक 48 स्तम्भों पर टिका है एवं इसकी छत लदाब की है। दीवार-ए-आम के बाहरी भाग की तरफ दो-दो स्तम्भों की पंक्ति है, जबकि आंतरिक भाग में एक-एक स्तम्भ है। कुछ स्तम्भ जो संगमरमर के है उन पर बेहद सुन्दर नक्काशी है तथा इन पर हाथियों से युक्त उत्कृष्ट घुडियों का अलंकरण एवं सुंड में कमल का फूल हिन्दू शैली की प्रतीक है। इसके पीछे भारतीय-यूरोपीय स्थापत्य शैली का ''मजलिस विलास'' है, जिसे सवाई रामसिंह-द्वितीय (1835-1880 ई.) द्वारा बनाया गया था। इस भवन में विभिन्न मनोरंजन के कार्यक्रम होते थे। दीवान-ए-आम से पूर्व में खुले बरामदे हैं जो 27 कचहरी के नाम से जाने जाते हैं।

गणेशपोल द्वार – दीवान-ए-आम के दक्षिण की ओर मुख्य महल का प्रवेश द्वार ''गणेशपोल'' स्थित है। यह किले का सबसे भव्य एवं उत्कृष्ट भित्ति चित्रों से सजा हुआ आकर्षक द्वार हैं। आमेर महल के

भित्ति चित्रों पर जो चित्रकारी की गई है, उनमें प्राकृतिक एवं वनस्पति रंगों का उपयोग किया गया है, इस कारण रंगों की चमक आज भी देखते ही बनती है। इसका गणेशपोल द्वार के ऊपर ''प्रथम पूज्य श्रीगणेश'' का बहुत सुन्दर अंकन है। इसी कारण इसे ''गणेशपोल'' कहा जाता है। इस द्वार के अन्दर प्रवेश करने पर दीवान-ए-खास, सुखमहल, शीशमहल, जनाना महल, मानसिंह महल, जसमंदिर, चार बाग शैली का उद्यान है।

मुगल उद्यान (चार बाग शैली) – भारत में चार बागों का निर्माण मुगल साम्राज्य के निर्माता बाबर के आगमन से शुरू हुआ था। बाबर को हिन्दुस्तान में आने के बाद विशाल बाग और बहते पानी की नहरों की कमी खलती थी। वह अपनी आत्मकथा बाबरनामा में शिकायती खबर में उल्लेख करता है कि हिन्दुस्तान के शहरों और बस्तियों में बहता पानी एवं नहरें नहीं हैं। चार बाग वस्तुत: ईरानी वास्तुशैली के खास हिस्से थे। इसमें इमारत के साथ चार बाग शैली के सुंदर बाग बनवाये जाते थे। विशाल आयताकार भू-भाग को चार दीवारी से घेर दिया जाता था

और इसके चार हिस्से कर दिये जाते थे। इन चार हिस्सों में चार बाग विकसित किया जाता था। चार बाग में खूबसूरती के लिए उद्यान लगाये जाते थे, पानी का इस्तेमाल भी सुन्दरता बढ़ाने के लिये किया जाता था। नहरें और फव्वारे बनाकर और मछली के शल्कों से होकर गिरने वाले पानी का कृत्रिम झरना बनाया जाता था। इस तरह के सौन्दर्यबोध मुगलों की विशेषता थी, जो कि आमेर महल में देखने को मिलती है। गणेशपोल से भीतर की ओर प्रवेश करने पर परिसर के मध्य में चारबाग पद्धति का फव्वारों से युक्त उद्यान है, जहां फूलों की क्यारियां बनी हुई हैं। उद्यान के पश्चिम में स्थित आवासीय खण्ड, जहां रानियां निवास करती थीं, ''सुख निवास'' कहलाता है। जहां वातावरण को ठण्डा रखने वाली खुली जल निकासी व्यवस्था भी थी। जो उस काल की उन्नत तकनीकी व्यवस्था को दर्शाता है।

शीशमहल – आमेर महल का सबसे सुन्दर और महत्वपूर्ण खण्ड जय मंदिर है जिसे दीवान-ए-खास व शीशमहल भी कहा जाता है। चूने और गचकारी से बनी दीवारों और छतों पर जामिया कांच या शीशे के उत्तल (कॉनवैक्स) टुकड़ों से की गई सजावट के कारण उसे ''शीशमहल'' कहा जाता है। संगमरमर से बने इसके स्तम्भों और दीवारों पर भैंसलाना के काले पत्थर से पच्चीकारी का काम किया गया है। इसी पद्धति से फूल, पत्तियाँ, पौधे, तितलियों की बारीक कलाकारी और एक आकृति में दो या दो से अधिक आकृतियों का समावेश शिल्पकला का अनूठा नमूना है। शीशमहल के दोनों ओर के बरामदों में भी रोशनदानों में धातु की जालियां काटकर बनाये हुए राधा-कृष्ण, कृष्ण-गोचारण, कृष्ण-गोपिकाएं और पुष्प सज्जा में भी रंगीन कांच के

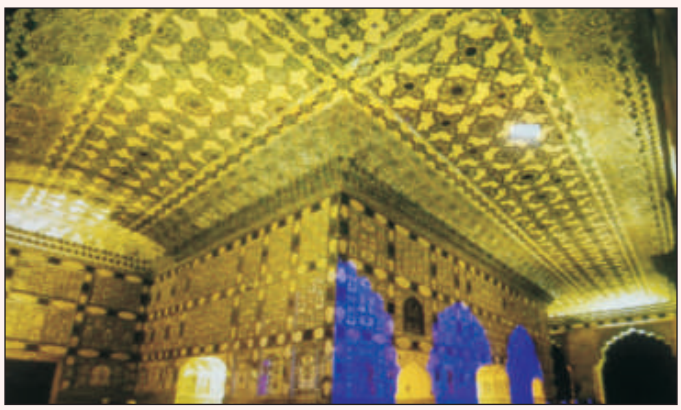

छोटे टुकड़े लगाकर कलात्मक सज्जा की गयी है। इसके उत्तरी दिशा में बरामदे में बनी पत्थर की चौकी सूर्य को अर्घ्य देने के लिए बनाई गई थी। इस बरामदे के उत्तरी कोने से जा रही सीढ़ियों और खुरा मार्ग से हम गणेशपोल के ऊपर बने सुहाग मंदिर में पहुंचते हैं। सुहाग मंदिर से पूर्व में उत्तर कर छतरी के नीचे बांये हाथ की ओर से गलियारे के अन्त में खुली छत है जिसे चांदनी कहा जाता है, इस चांदनी पर राजाओं के समय में नृत्य एवं संगीत के आयोजन होते थे। चांदनी से वापस लौटकर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने पर शीशमहल की छत पर बना सुन्दर जस मंदिर है। शीशमहल की तरह जस मंदिर की सजावट भी मुगल शैली के प्रतीकों तथा कांच के टुकड़ों से की गयी है।

मानसिंह महल – यह इस किले का प्राचीनतम आवासीय परिसर है, जो कि 16वीं शती में राजा मानसिंह प्रथम द्वारा निर्मित करवाया गया था। इसमें दरवाजों एवं दीवारों पर धार्मिक चित्र बने हुए हैं। महल के भूतल पर रानियों के 12 आवासीय खण्ड बने हुए हैं। साथ ही इसके चौक के

मध्य बनी हुई बारादरी राजा मानसिंह के समय बनवायी गयी थी। चौक के उत्तरी पूर्वी भाग में जो वृत्ताकार छ: मुख दिखाई देते हैं उनके नीचे जल संग्रहण हेतु एक भूमिगत टांका है।

शिला माता मंदिर – शिला माता की मूर्ति जेसोर (अब बांग्लादेश) के राजा की पूजा में थी, उनके हारने पर राजा मानसिंह ने इस पाल-कालीन, 14वीं शती की दुर्गा रूपी महिष मर्दिनी को लाकर अपने महल में प्रतिष्ठित कर दिया। सवाई मानसिंह द्वितीय ने इस मंदिर को संगमरमर के विभिन्न प्रकार की उत्कीर्ण पट्टियों से सुसज्जित किया एवं चांदी के दरवाजों में दुर्गा के नौ रूपों तथा दस महाविद्या के स्वरूपों को अंकित करवाया।

अन्य प्रमुख आकर्षण – किले के नीचे स्थित मावठा सरोवर पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इससे सटे भाग में खूबसूरत उद्यान दल-ए-आराम बाग स्थित है। जिसे राजमहल में आने वाले दल या आगंतुकों के आराम (विश्राम) हेतु बनवाया गया था। आमेर को जयगढ़ किले से जोड़ने वाली पक्की सुरंग को आज भी पर्यटक आमेर से जयगढ़ जाने हेतु इस सुरंग का प्रयोग करते हैं। आमेर महल में भूतल पर भण्डार कक्ष, शौचालय और अन्त में मुगल शैली का ठंडे व गरम जल का हमाम है।

आमेर किले का संपूर्ण परिसर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला एवं विविधता के लिए जाना जाता है। यह किला पर्यटकों के अवलोकनार्थ रात्रि में भी खुला रहता है। आमेर के इतिहास पर आधारित साउण्ड एण्ड लाइट शो प्रतिदिन केसर क्यारी में हिन्दी व अंग्रेजी भाषा मे चलाया जाता है, जो देशी-विदेशी पर्यटकों का मुख्य आकर्षण है। आमेर किला विविध पर्यटक खूबियों से भरपूर है जो देशी-विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। •

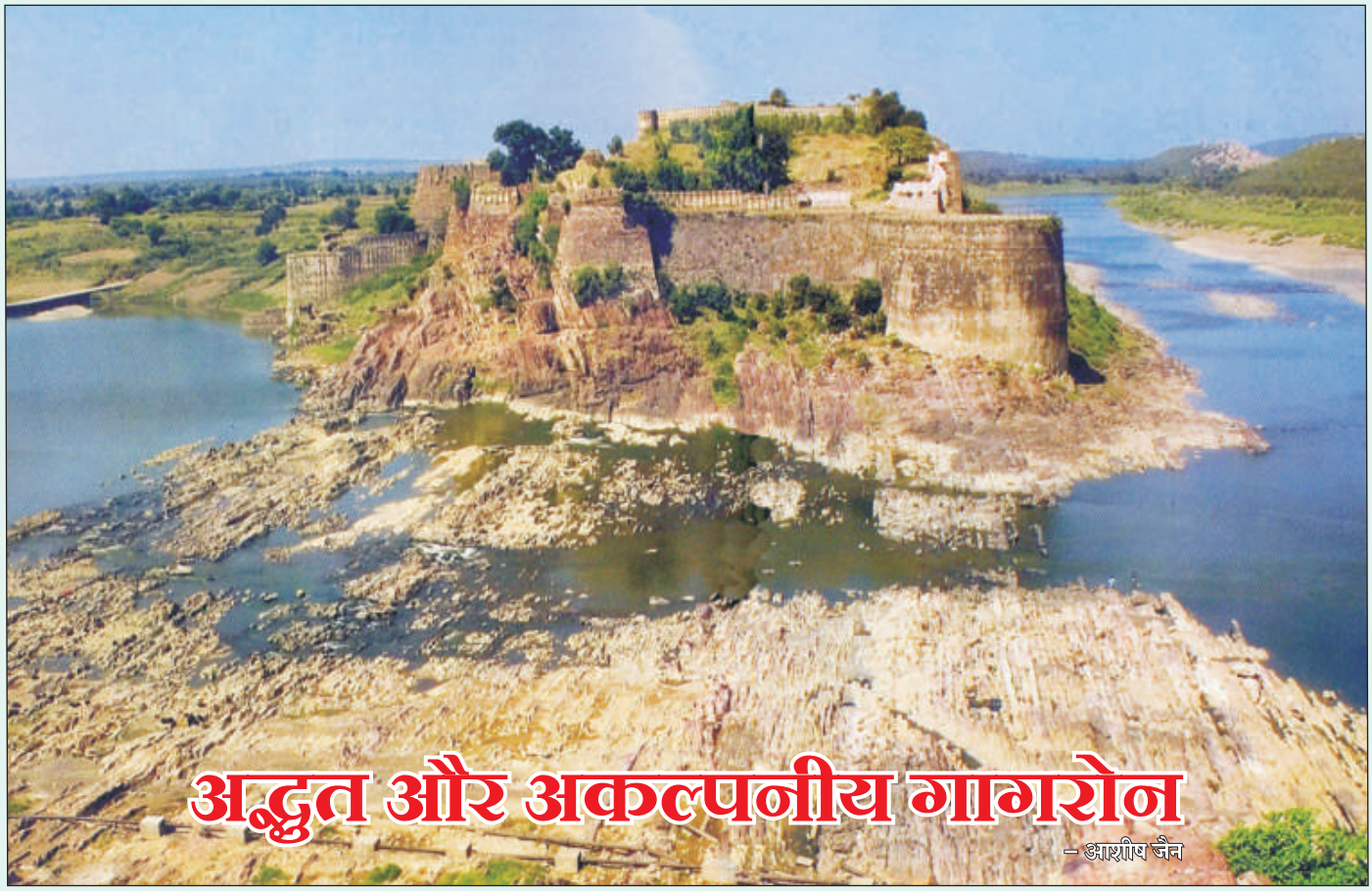

अद्भुत और अकल्पनीय गागरोन

– आशीष जैन

अगर आप वीरता व शौर्य से लबरेज और वास्तुकला के लिहाज से नायाब जगह को देखना चाहते हैं तो एक बार राजस्थान के झालावाड़ स्थित गागरोन किले को देखने आएं। आपको मुंह से बरबस ही निकल पड़ेगा– वाह! क्या कृति है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दुनिया में कोई किला ऐसा भी होगा, जिसकी नींव ही नहीं है और जो चारों ओर से पानी से घिरा है। यह आश्चर्यजनक किला कहीं और नहीं, बल्कि हमारे अपने राजस्थान के झालावाड़ में स्थित गागरोन किला है। इस किले को यूनेस्को 21 जून 2013 को विश्व धरोहर की सूची में शामिल कर चुका है। यह किला अपने गौरवमयी इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। आज भी यह किला अपनी पूरी आन–बान–शान के साथ खड़ा है। इस किले को जल दुर्ग भी कहा जाता है। इस किले के तीन परकोटे हैं। आमतौर पर सभी किलों के दो ही परकोटे होते हैं। यह किला 350 फीट लंबा है। इस किले के दो मुख्य प्रवेश द्वार हैं। एक द्वार नदी की ओर निकलता है और दूसरा पहाड़ी रास्ते की ओर। यह गिरी और जल दुर्ग दोनों श्रेणियों में सम्मिलित किया जाता है।

गागरोन किले को राजा बीजलदेव ने बारहवीं सदी में बनवाया था। यह दुर्ग काली सिंध और आहू नदी के संगम स्थल पर बना हुआ है। यहां आस–पास की हरी–भरी पहाड़ियां इस दुर्ग को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाती हैं। इस अभेद्य किले की नींव सातवीं सदी में रखी गई थी और चौदहवीं सदी तक इसका निर्माण पूर्ण हुआ। 18वीं शताब्दी तक पांच बार इसका विस्तार हुआ। यहां पर 36 राजाओं ने राज किया।

गागरोन किले में गणेश पोल, नक्कारखाना, भैरवी पोल, किशन पोल, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, जनाना महल, रंग महल आदि महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। यह किला हिंदू–मुस्लिम एकता का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है। यहां पर मधुसूदन मंदिर है तो सूफी संत मीठे शाह की दरगाह भी। इतिहासकारों के अनुसार इस किले का इस्तेमाल दुश्मनों को मौत की सजा देने के लिए किया जाता था।

गोगरान किला 14 युद्ध और 2 जौहर का गवाह रहा है। 1432 ईस्वी में मांडू के सुल्तान होशंगशाह ने इस गढ़ को घेर लिया था। तब अचलदास खींची वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उस समय हजारों महिलाओं ने जौहर किया था। होशंगशाह अचलदास की बहादुरी से इतना प्रभावित हुआ कि उसने राजा के व्यक्तिगत सामान से कोई छेड़छाड़ नहीं की।

मध्य युग में शेरशाह और अकबर दोनों ने व्यक्तिगत रूप से आकर इस किले पर विजय प्राप्त की थी। अकबर ने इसे अपना मुख्यालय भी बनाया था। कहा जाता है कि गागरोन के हीरामन तोते बोलने में बड़े दक्ष होते हैं। ये सामान्य तोतों से दोगुने होते हैं। इनका रंग इतना गहरा होता है कि पंखों पर लाल निशान पाए जाते हैं।•

गढ़ तो गढ़ चित्तौड़, बाकी सब गढ़ैया

– चेतन औदिच्य

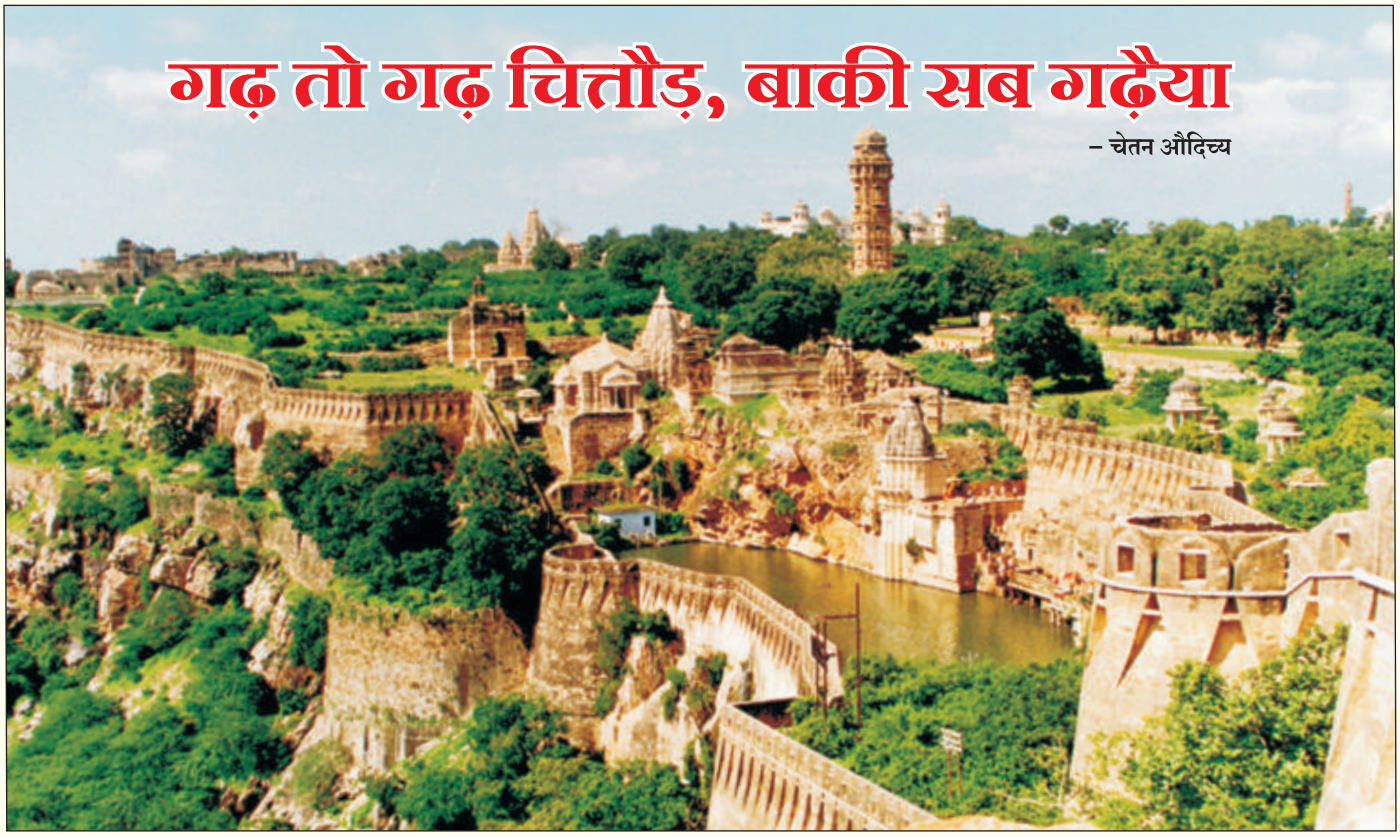

शास्त्र-विहित नौ प्रकार के किलों में चित्तौड़ का किला 'गिरी दुर्ग' की श्रेणी में आता है। अरावली उपत्यका के समतल स्थल के निकट मेसा पठार के नाम से पुकारे जाने वाले पर्वतीय शिखर पर अवस्थित चित्तौड़ का किला एक 'महादुर्ग' है। गंभीरी और बेड़च नदियों के निकट स्थापत्य की दृष्टि से चित्तौड़ के किले का निर्माण बहुत सूझ-बूझ के साथ, उचित स्थान का चयन करके किया गया है। यही कारण है कि सैन्य दृष्टि से दुर्धर्ष इस किले के इतिहास ने विश्व-समुदाय तक अपने शौर्य की आभा पहुचांयी है।

इस किले के बारे में इतिहासकार डॉ. राजेश्वर व्यास का यह कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि चित्तौड़ दुर्ग ''सैन्य-स्थापत्य को विविध रूपों में उद्घाटित करने वाला सर्वप्रमुख एवं पूर्णतया सुरक्षित, सर्वाधिक प्राचीन स्मारक है।'' दुर्ग की विशालता के कारण ही चित्तौड़ के दुर्ग को भारत का सबसे बड़ा दुर्ग माना जाता है। इसके निर्माताओं ने शुरू से अंत तक दुर्ग-स्थापत्य के उन सिद्धान्तों का पालन किया है जो किसी किले को सर्वश्रेष्ठ बनाते हैं। चित्तौड़ दुर्ग के निर्माताओं के बारे में निश्चित प्रमाण नहीं हैं। ऐसी लोक मान्यता है कि महाभारत काल में पाण्डव इस दुर्ग में आकर रहे थे तथा पांडु पुत्र भीम ने अपनी लात से भूमि में से पानी निकाल दिया था। 'भीमलत' स्थान आज भी चित्तौड़ दुर्ग में एक कुण्ड के रूप में जाना जाता है। किंतु इस मान्यता का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। डॉ. जी.एन. शर्मा की पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' के अनुसार ''वि.सं. 770 के एक शिलालेखीय साक्ष्य में मौर्य वंशी किसी भीम नामक शासक के चित्तौड़ के अधिपति होने का उल्लेख है, जिसका सम्बन्ध पाण्डव भ्राता भीम से जोड़ दिया गया प्रतीत होता है। इसी भीम का उत्तराधिकारी चित्रंग मोरी अथवा मान मोरी था।'' पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण मौर्य वंशी शासक चित्रांगद ने करवाया था। दुर्ग में एक तड़ाग को इसी नाम से जाना जाता है। इतिहासकारों का मत है कि इस दुर्ग का नाम 'चित्रकूट' था। मेवाड़ के सिक्कों पर भी चित्रकूट शब्द अंकित मिलता है।

चित्तौड़ दुर्ग शौर्य कला की त्रिवेणी रहा है। बप्पा रावल, राणा कुम्भा, राणा सांगा, प्रात: स्मरणीय राणा प्रताप जैसे अनेक इतिहास पुरूष तथा पद्मिनी, कर्णावर्ती, पन्नाधाय जैसी कालजयी वीरांगनाएं इसी किले से सम्बद्ध रही हैं। मध्यकाल में भक्ति की अखिल धारा बहाने वाली मीरा बाई का ससुराल भी यही किला था।

स्थापत्य कला की दृष्टि से चित्तौड़ का किला अपने वैविध्य और उत्कृष्टता में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह विराट दुर्ग कपिशीर्ष (कंगूरे), काण्डवरिणियों (छालदार दीवार) तथा अट्टालिकाओं (बुर्जो) से युक्त है। दुर्ग में अनेक जलस्रोत, प्रासाद, देवप्रासाद, गुप्त मार्ग, स्तम्भ एवं ऐतिहासिक महत्त्व की इमारतें है। अपने स्थापत्य के साथ यह दुर्ग त्याग और बलिदान की अनगिनत गाथाओं के लिए विख्यात रहा है।

दुर्ग में प्रवेश करने के लिए सर्पिलाकार मार्ग से गुज़रते हुए सात द्वारों को पार करना पड़ता है। इन द्वारों के बारे में स्थापत्य कला की दृष्टि से डॉ. राजेश्वर व्यास ने अपनी पुस्तक 'मेवाड़ की कला और

स्थापत्य' में लिखा है, ''ये मेहराब प्रणाली पर निर्मित न होकर प्रमण्डल चाल युक्त जोड़ विधि पर उर्ध्वाकार उच्चायी या वर्धक ग्रास प्रणाली को अपनाकर बनाए गए हैं।

महाराणा कुंभा के कोषाध्यक्ष बेलाक ने किले में श्रृंगार चौरी का निर्माण कराया था। यह भगवान शांतिनाथ को समर्पित मंदिर है, तथा जैन स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर की बाह्य दीवारों पर देवी-देवताओं की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। इसी परिसर में चार खंभों की छतरी तथा वेदी बनी है। मान्यता है कि कुंभा की पुत्री वागीश्वरी (रमाबाई) का विवाह यहीं हुआ था। यह मण्डप ही श्रृंगार चौरी कहलाया। यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात पुष्ट नहीं है।

दुर्ग के त्रिपोलिया द्वार से आगे राजमहल मातृदेवी प्रासाद, कुंभा द्वारा निर्मित जनाना तथा मर्दाना महल के साथ ही अन्य राजसी आवास भवन है। इसके निकट ही मालवा के प्रसिद्ध राजा भोज द्वारा ग्यारहवीं सदी में निर्मित समिधेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है। इसे त्रिभुवननारायण का शिवालय तथा भोज का मंदिर भी कहा जाता है। महाराणा मोकल द्वारा इसका जीर्णोद्धार करवाने के कारण इसे मोकलजी का मंदिर भी कहा जाता है। इसके गर्भगृह में शिवलिंग तथा प्राचीर में भव्य त्रिमूर्ति स्थापित है। इस प्रासाद के आस-पास समाधियों के चबूतरे तथा छोटे-छोटे शिवालय हैं। यही वह स्थान है जिसे महासती एवं जौहर स्थल कहा जाता है। चबूतरे तथा छोटे शिवालय उन वीरांगनाओं के हैं, जिन्होंने अपनी आन-बान के लिए अग्नि का आलिंगन किया।

पंचायतन शैली में बना चित्तौड़गढ़ का कुंभश्याम मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित रहा है। मूलत: आठवीं सदी में बने इस मंदिर का राणा कुंभा ने पुनरूद्धार कराया तथा अपने इष्टदेव श्याम की मूर्ति इसमें प्रतिष्ठित की। मन्दिर सुन्दर तक्षण-कला से सज्जित है। विष्णु के विविध रूपों को दर्शाती यहां अनेक मूर्तियां है। वर्तमान कुम्भश्याम मंदिर मूलत: वराह मंदिर रहा था। मुख्य मंदिर के सामने की वेदी पर विष्णुवाहन गरूड़ की मूर्ति स्थापित है। विशाल शिखर वाला यह मंदिर चित्तौड़ के किले के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है। इसी के पास मीरा मंदिर स्थित है।

चित्तौड़ के दुर्ग में कीर्तिस्तम्भ तथा जयस्तम्भ नाम से जाना जाने वाला विजय स्तम्भ मेवाड़ की कीर्ति का विशिष्ट स्मारक है। यह पूरे भारतवर्ष में एक मात्र स्तम्भ है जो भीतर तथा बाहर नानाविध मूर्तियों से अलंकृत है। महाराणा कुंभा ने 1439 ई. से 1448 ई. के मध्य इस विजय स्तम्भ का निर्माण पूर्ण करवाया था। निर्माण के उद्देश्य पर इतिहासकारों के अलग-अलग मत है। एक मत के अनुसार मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी पर विजय के यश को चिर स्थाई करने के उद्देश्य से इसका निर्माण किया गया था। अन्य मत के अनुसार 'कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति' इसका निर्माण कुंभा द्वारा अपने आराध्य विष्णु के स्तवन को उद्घाटित करना बताती है। डॉ. राजशेखर व्यास अपनी पुस्तक में मत देते हैं कि हर्मन गूज नामक कला समीक्षक इसे समिधेश्वर (महादेव) की अर्चना के लिए बनवाया गया स्मारक स्वीकार करते हैं। इन मतों के बीच समीचीन यही जान पड़ता है कि कुंभा ने अपने आराध्य विष्णु के स्तवन निमित्त इसका निर्माण करवाया था। लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर से बनी इसमें नौ मंजिलें हैं। यह स्तम्भ नीचे से चौड़ा मध्य से थोड़ा पतला तथा शीर्ष पर पुन: चौड़ा है। इसके शीर्ष तक जाने के लिए कुल 157 सीढ़िया बनी हैं। स्तम्भ के भीतर सीढ़ियाँ चक्राकार हैं। भीतर एवं बाहर से दिखाई देने वाले इसके कलात्मक गवाक्ष इसमें प्रकाश की आपूर्ति करते नज़र आते हैं।

डॉ. डी.एन. शुक्ल के अनुसार विजयस्तम्भ की निवेश योजना शतपदीय वास्तुविन्यास पर आधारित है। डॉ. राजशेखर व्यास के मतानुसार यह किला ''द्वादश-कोटीय सर्वतोभद्र तलछन्द का स्मारक है। उर्ध्वाधर निर्माण नौभूमियों (मंजिलों) का है। अंतिम भूमि को सूच्याकार स्तूपिका युक्त 'रचफ मण्डप' के रूप में निर्मित किया गया है। स्थापत्य कला के षट्छन्दस विधान की सम्पूर्ति के प्रसंग में कीर्तिस्तम्भ को बाह्य एवं आन्तरिक, दोनों ओर से पौराणिक देवी-देवताओं, अवतारों इत्यादि की विविध आकार एवं मुद्राओं की

मूर्तियों, गवाक्षों एवं स्तंभों, छजलियों एवं शिखर पर स्तूपिकाओं इत्यादि से परिसज्जित किया गया है।'' विजय स्तम्भ में भारतीय देवी देवताओं की प्रचुर मात्रा में मूर्तियां लगी है। इसी कारण इसे डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने हिन्दू देवी देवताओं से सजाया हुआ एक व्यवस्थित संग्रहालय कहा है। पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने इसके महत्त्व को प्रकट करने के लिए विजयस्तम्भ को ''पौराणिक देवी-देवताओं का अमूल्य कोष'' बताया है।

विजयस्तम्भ पिछली पांच शताब्दियों से इसके प्रेक्षक को अभीभूत करने वाला रहा है। इसकी प्रत्येक मंजिल में भिन्न स्वरूपों में भिन्न-भिन्न देवी-देवता मूर्तिबद्ध किए गए हैं। जनार्दन, अनन्त, रूद्र, ब्रह्मा, अर्द्धनारीश्वर, आयुध सहित हरिहर, अग्नि वरूण, भैरवी, हरसिद्धि, पार्वती, उमा, क्षेमकरी, हिमवती, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि मूर्तियां हैं। साथ ही नृत्य रत, संगीत से साम्य करती अनेक नर्तकिया, मांदनिका, श्रुतिधर, आदि की मूर्तियां भी स्तम्भ की शोभा बढ़ाने वाली है। आठवी मंजिल पर भगवान नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु/हिरण्यकश्यप के मर्दन का प्रभावी अभिप्राय अंकित है। नौवीं मंजिल में चार ताके प्रशस्ति हेतु सृजित की गई है। कुल मिलाकर विजय स्तम्भ की कला तत्कालीन समाज, धर्म एवं दर्शन की सुंदर अभिव्यक्ति करती है। इसकी महत्ता इस बात को लेकर भी है कि कलाविद फर्ग्यूसन ने इसे स्थापत्य कला की दृष्टि से रोम के ट्राजन स्तंभ से अधिक श्रेष्ठ बताया है। विजयस्तम्भ के गौरव को देखते हुए राजस्थान पुलिस और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने अपने प्रतीक चिन्हों में इसे शामिल किया है।

चित्तौड़ किले के भीतर चौगान के पास पद्म तालाब के उत्तरी किनारे रानी पद्मिनी के महल है। वहीं एक छोटा तीन मंजिला जल महल, पद्म तालाब के मध्य बना हुआ है। तालाब के महल का कोण इस तरह से है कि पद्मिनी महल में लगे कांच पर तालाब वाले जल महल में खड़े व्यक्ति का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

चित्तौड़ के किले के सुप्रसिद्ध कालिका मंदिर का निर्माण आठवी-नवीं सदी में राजा मानभंग द्वारा करवाया गया था। मूलत: यह भगवान सूर्यनारायण को समर्पित प्रासाद है। मंदिर के बाह्य प्रदक्षिणापथ की एक ताक में तथा गर्भगृह के मुख्य द्वार के क्षैतिज उत्तरंग (छाबण) शिला पर सप्तअश्वों पर आरूढ़ सूर्य की मूर्ति लगी है। प्रदक्षिणा पथ की ताख में लगी मूर्ति में अश्व, सारथी अरूण तथा सूर्य की मूर्ति भिन्न-भिन्न भाव मुद्रा में है। आर.सी. अग्रवाल के शब्दों में ''अश्वों का तनाव, सारथी की एकाग्रता एवं सूर्य की प्रबुद्धता एक अनोखा सामंजस्य उत्पन्न करते हैं।'' मंदिर की ताकों में लगी सूर्यमूर्तियाँ इसके सूर्य मंदिर होने की पुष्टि करती है। मुख्य सूर्य मूर्ति संभवत: आक्रांताओं द्वारा नष्ट कर दी गई थी। कालान्तर में यहां भद्रकालिका की मूर्ति स्थापित कर दी गई, जिससे यह कालिका मंदिर कहा जाने लगा। मंदिर का प्रवेश द्वार भव्य, कलात्मक एवं आकर्षक है। मंदिर के गर्भगृह के बाहर अभयमुद्रा धारी अश्विनी कुमार तथा गजारूढ़ वज्र कमलधारी इन्द्र, चतुर्बाहु अग्नि, कमलधारी आसनस्थ सूर्य तथा यम की आकर्षक मूर्तियां अवस्थित हैं। मंदिर में मकर पर बिराजित वरूण, अपने वाहन मृग के साथ वायु अपने वाहन अश्व के साथ है। चन्द्रमा तथा उत्तर-पूर्व दिशा के स्वामी ईशान की मूर्तियां भी मनोहारी दृश्य उपस्थित करती है। मंदिर के बाहरी भाग की ताकों में शिव पार्वती, वराह, समुद्रमंथन अभिप्राय आदि अंकित है। इन सभी मूर्तियों का प्रक्रम इसे एक श्रेष्ठ सूर्य मंदिर सिद्ध करता है।

इन स्मारकों के अलावा विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किए गए चित्तौड़ दुर्ग में अनेक ऐतिहासिक स्थापत्य है जिनका सामरिक, धार्मिक, सामाजिक एवं कला की दृष्टि से महत्त्व है। इनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है। जैन कीर्तिस्तम्भ के अहाते में 'अद्भुतजी का प्रासाद' है। महाराणा रायमल ने 1394 में इस मंदिर का निर्माण करवाया था। मंदिर में शिवलिंग की स्थापना है तथा उसके पार्श्व में शिव की विशाल त्रिमूर्ति है। यह प्रतिमा अद्भुत है इसी कारण इस मंदिर को अद्भुदजी का मंदिर कहा जाता है। दुर्ग के दक्षिण में स्थित अंतिम बुर्ज चित्तौड़ी बुर्ज कहलाता है। इस बुर्ज के 150 फीट नीचे एक छोटा सा मिट्टी का टीला है। माना जाता है कि 1567 ई. में अकबर ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया था, तब इस स्थान को मोर्चे के लिए उपयुक्त मान कर इस पर मिट्टी डलवाई थी जिससे टीला ऊंचा उठ गया। किंवदंती है कि तब प्रत्येक मजदूर को एक टोकरी मिट्टी के बदले एक-एक मोहर दी गई थी। तभी से यही टीला मोहर मगरी कहलाता है।

इन स्थानों के अलावा किले में पत्ता का स्मारक, कुकड़ेश्वर कुण्ड, गोराबादल महल, हिंगलू अहाड़ा के महल, रत्नेश्वर तालाब, लाखोटा बारी, नीलकंठ महादेव का मंदिर, गोमुख कुंड आदि स्थल दर्शनीय है। गोमुख कुण्ड की अविरल धारा प्राचीन अभियान्त्रिकी का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस तरह चित्तौड़ का दुर्ग स्थापत्य, सामरिक महत्तव तथा ऐतिहासिक दृष्टि से राजस्थान ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष के लिए गौरवगढ़ है। इसके अमर नायकों ने विश्व इतिहास पर कभी नहीं मिटने वाले स्मृति चिन्ह छोड़े हैं। यहां की वीरांगनाओं ने अद्वितीय बलिदान की गाथाएं लिखी हैं। चित्तौड़ के किले की महिमा को शब्दों में बयां करना असंभव है। इस दुर्ग रूपी अमर स्मारक का वंदन ही किया जा सकता है। •

कुंभलगढ़ दुर्ग

शिल्प-स्थापत्य सौन्दर्य का प्रतीक

– डॉ. कमलेश शर्मा

वीर सपूतों की धरती राजस्थान का मेवाड़ अंचल अपने शौर्य, त्याग, बलिदान के गौरव से युक्त इतिहास के लिए न सिर्फ भारत देश में अपितु विश्व पटल पर अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां के वीर-वीरांगनाओं के पराक्रम के साथ यहां के किले-दीवारें, राजप्रसाद, जटिल मार्ग, घाटियां आदि तत्कालीन समय में दुश्मनों की पराजय का सबसे बड़ा कारण रहा है मेवाड़ के स्वाभिमान एवं अस्तित्व की रक्षा में यहां के दुर्गों का विशिष्ट महत्त्व रहा है। महत्त्वपूर्ण दुर्गों में कुंभलगढ़ दुर्ग का भी अपना प्रमुख स्थान है। मेवाड़

के अजेय योद्धा महाराणा प्रताप की जन्मस्थली कुंभलगढ़ में स्थित यह दुर्ग अपने बेनज़ीर शिल्प-स्थापत्य के बूते सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण आज देशी-विदेशी पर्यटकों की पसंदीदा जगह बन चुका है।

कुम्भलगढ़ दुर्ग राजसमन्द जिले की केलवाड़ा तहसील में उदयपुर के उत्तर-पश्चिम में लगभग 80 कि.मी. दूर अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है। सामरिक महत्त्व के कारण इसे राजस्थान के द्वितीय महत्त्वपूर्ण किले का स्थान दिया जाता है। इसके निर्माण का श्रेय महाराणा कुम्भा को जाता है, जिन्होंने 1443 से 1458 के बीच प्रसिद्ध वास्तुकार मंडन के पर्यवेक्षण में इसका निर्माण करवाया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस किले का निर्माण प्राचीन महल के स्थल पर ही करवाया गया था, जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के जैन राजकुमार 'सम्प्रति' से संबद्ध था। अरावली की हरीभरी पहाड़ियों में स्थित इस दुर्ग को मानसून के दौरान देखने का आनंद ही अद्‌भुत है। मानसून के दौरान संपूर्ण दुर्ग बादलों की चादर ओढ़े सा दिखता है। रूई के फाहे से बादलों के साथ इसका सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है।

30 कि.मी. व्यास में फैला मेवाड़ के महाराणा कुम्भा की सूझबूझ व प्रतिभा का अनुपम स्मारक है। इस दुर्ग का निर्माण सम्राट अशोक के दुसरे पुत्र सम्प्रति के बनाये दुर्ग के अवशेषों पर पूरा हुआ था। दुर्ग का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर महाराणा कुम्भा ने सिक्के भी ढलवाये, जिन पर दुर्ग और उसका नाम अंकित था। इसकी 36

किलोमीटर लंबाई वाली विशाल चौड़ी दीवार के कारण भी यह प्रसिद्ध है। यह दीवार विश्व में चीन की दीवार के बाद दूसरी सबसे बड़ी दीवार है जिसे भेदना असंभव रहा है। इस दीवार की खासियत यह भी है कि इस दीवार पर एक साथ दस घोड़े साथ में दौड़ाएं जा सकते हैं।

कुंभलगढ़ किले की प्रसिद्ध 36 किलोमीटर लंबी दीवार की परिधि के अंदर 360 मंदिर है जिसमें से 300 मंदिर जैन धर्म के हैं और बाकी हिंदू धर्म के। नीलकंठ महादेव का बना मन्दिर यहां पर अपने ऊंचे-ऊंचे सुन्दर स्तम्भों वाले बरामदे के लिए जाना जाता है। इस तरह के बरामदे वाले मन्दिर प्राय: नहीं मिलते। मन्दिर की इस शैली को कर्नल टॉड जैसे इतिहासकार ग्रीक (यूनानी) शैली बतलाते हैं। लेकिन कई विद्वान् इससे सहमत नहीं हैं। नीलकंठ मंदिर में विशाल आकार का शिवलिंग पर्यटकों को बेहद रोमांचित करता है। इसके अतिरिक्त दुर्ग पर सूर्य मंदिर, मामादेव मंदिर, पीतलिया शाह मंदिर, पृथ्वीराज की छतरी के साथ ही बावन डेरी आदि प्रमुख मंदिर हैं।

शिल्पशास्त्र के ज्ञाता महाराणा कुंभा की यज्ञ वेदी यहां का विशेष आकर्षण है। कुम्भा ने यज्ञ आदि के उद्देश्य से इसे शास्त्रोक्त रीति से बनवाया था। राजपूताना में प्राचीन काल के यज्ञ-स्थानों का यही एक स्मारक शेष रह गया है। एक दो मंजिलें भवन के रूप में इसकी इमारत है, जिसके ऊपर एक गुम्बद बना हुआ है। इस गुम्बद के नीचे वाले हिस्से से जो चारों तरफ से खुला हुआ है, धुंआ निकलने का प्रावधान है। इसी वेदी पर कुम्भलगढ़ की प्रतिष्ठा का यज्ञ भी हुआ था।

नीचे वाली भूमि में भालीवान (बावड़ी) और मामादेव का कुंड है। महाराणा कुम्भा इसी कुंड पर बैठे अपने ज्येष्ठ पुत्र उदयसिंह (ऊदा) के हाथों मारे गये थे। कुम्भास्वामी नामक एक भगवान विष्णु का मन्दिर महाराणा ने इसी कुंड के निकट 'मामावट' नामक स्थान पर बनवाया था, जो अभी भी टूटी-फूटी अवस्था में है। मन्दिर के बाहरी भाग में विष्णु के अवतारों, देवियों, पृथ्वी, पृथ्वीराज आदि की कई मूर्तियां स्थापित की गई थीं। पाँच शिलाओं पर राणा ने प्रशस्तियां भी खुदवाई थीं, जिसमें उन्होंने मेवाड़ के राजाओं की वंशावली, उनमें से कुछ का संक्षिप्त परिचय तथा अपने भिन्न-भिन्न विजयों का विस्तृत-वर्णन करवाया था। राणा रायमल के प्रसिद्ध पुत्र वीरवर पृथ्वीराज का दाहस्थान मामावट के निकट ही बना हुआ है। गणेश पोल के सामने वाली समतल भूमि पर गुम्बदाकार महल तथा देवी का स्थान है। महाराणा उदयसिंह की रानी झाली का महल यहां से कुछ सीढियां और चढ़ने पर था, जिसे 'झाली का मालिया' कहा जाता था। गणेश पोल के सामने बना हुआ महल अत्यन्त ही भव्य है। ऊंचाई पर होने के कारण गर्मी के दिनों में भी यहां ठंडक बनी रहती है।

कुंभलगढ़ दुर्ग के पास में ही स्थित विशाल जंगल को अब वाइल्ड लाइफ सेंचुरी में बदल दिया गया है। इस कुंभलगढ़ अभयारण्य में चौसींघा, जंगली सूअर, भेड़िया, पैंथर, भालू, सियार, चिंकारा, लकड़बग्घा, जंगली बिल्ली आदि की साइटिंग सहज ही की जा सकती है। •

विजय दुर्ग रणथम्भौर

– राघवेन्द्र सिंह मनोहर

सवाईमाधोपुर से लगभग 10 कि.मी. दूर स्थित रणथम्भौर राजस्थान का प्राचीन नगर और प्रमुख गिरि दुर्ग है जिसकी अपनी निराली शान और पहचान है। बीहड़ वन और दुर्गम धारियों के मध्य अवस्थित यह दुर्ग अपनी प्राकृतिक सुरक्षा-व्यवस्था, विशेष सामरिक स्थिति और सुदृढ संरचना के कारण एक दुर्भेद्य दुर्ग माना जाता था। अपनी इन दुर्लभ विशेषताओं के कारण रणथम्भौर मध्यकाल में महत्वाकांक्षी शासकों की लालसा तथा आक्रान्ताओं की आंखों की किरकिरी बना रहा। तत्कालीन राज पूताना में साम्राज्य विस्तार का कोई भी सपना रणथम्भोर के बिना अधूरा समझा जाता था।

दिल्ली से उसकी निकटता तथा मालवा और मेवाड़ के मध्य में स्थित होने के कारण रणथम्भौर पर निरन्तर आक्रमण होते रहे । रणथम्भौर पर आधिपत्य के लिए हुए संघर्षों की एक लम्बी दास्तान है।

रणथम्भौर को सार्वाधिक गौरव मिला यहां के वीर और प्राक्रमी शासक राव हम्मीर देव चौहान के अनुपम त्याग और बलिदान से। हम्मीर ने दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मदशाह (महमांशाह) को अपने राज्य में शरण प्रदान की जिसे दंडित करने तथा अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु अलाउद्दीन ने 1300 ई. में रणथम्भौर पर एक विशाल सैन्य दल के साथ आक्रमण किया। पहले उसने अपने सेनापति नुसरतखां को रणथम्भौर के लिए भेजा लेकिन किले की घेराबंदी के समय हम्मीर के सैनिकों द्वारा दुर्ग से की गई पत्थर वर्षा के कारण वह मारा गया। इस पर क्रुद्ध हो अलाउद्दीन स्वयं रणथम्भौर पर चढ़ आया तथा एक विशाल सैना के साथ किले को घेर लिया। पराक्रमी हम्मीर ने इस आक्रमण का जोरदार मुकाबला किया। हम्मीरायण में रणथम्भौर के इस घेरे का विस्तार से वर्णन हुआ है। अलाउद्दीन के इस अभियान में साथ आये इतिहासकार अमीर खुसरो ने युद्ध के घटनाक्रम का वर्णन करते हुए लिखा है कि सुलतान ने किले के भीतर मार करने के लिए पाशेब (विशेष प्रकार के चबूतरे) तथा गरगच तैयार करवाये और मगरबी (ज्वलनशील पदार्थ फैंकने का यन्त्र) व अर्रादा (पत्थरों की वर्षा करने वाला यंत्र) आदि की सहायता से आक्रमण किया। उधर हम्मीर देव के सैनिकों ने किले के भीतर से अग्निबाण चलाये तथा मंजनीक और ढेकुली यन्त्रों द्वारा आलाउद्दीन के सैनिकों पर विशाल पत्थरों के गोले बरसाये। दुर्ग में स्थित जलाशयों से तेजबहाव के साथ पानी छोड़ा गया जिससे खिलजी सेना को भारी क्षति हुई। इस प्रकार रणथम्भौर का घेरा एक वर्ष तक चला। अन्ततः अलाउद्दीन ने छल और कूटनीति का आश्रय लिया तथा हम्मीर के दो मंत्रियों रतिपाल और रणमल को बूंदी का परगना इनायत करने का प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया। इस विश्वासघात के फलस्वरुप हम्मीर को पराजय का मुंह देखना पड़ा। आखिरकार उसने केसरिया करने का निश्चय किया। दुर्ग की ललनाओं ने जौहर का अनुष्ठान किया तथा राव हम्मीर अपने कुछ विश्वस्त सामंतों को साथ लेकर युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

जुलाई 1301 ई. में रणथम्भौर पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया। इस प्रकार राव हम्मीर देव चौहान ने शरणागत वत्सलता के आदर्श का निर्वाह करते हुए राज्यलक्ष्मी सहित अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। हम्मीर की आन के सम्बन्ध में कहा गया यह दोहा लोकमानस में बहुत प्रसिद्ध है-

सिंह सुवन, सत्पुरुष वचन, कदली फलै इक बार।

तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढै न दूजी बार।।

हम्मीर के इस अनुपम त्याग और बलिदान से प्रेरित हो संस्कृत, प्राकृत राजस्थानी व हिन्दी आदि सभी भाषाओं में कवियों ने उसे अपना चरित्रनायक बनाकर उसका यशोगान किया है। इनमें नयनचन्द्र सूरी कृत हम्मीर महाकाव्य, जोधराज और महेश विरचित हम्मीर रासो तथा चन्द्रशेखर कृत हम्मीर हठ प्रमुख उल्लेख हैं। राव हम्मीर देव कावि संवत 1345 (1288 ई.) का शिलालेख राव हम्मीरदेव का उक्त शिलालेख विक्रम संवत 1345 (1288 ई.) का है जो इतिहासकार गौरीशंकर द्वारा तत्कालीन कोटा राज्य के कोटड़ी गांव में उपलब्ध हुआ था। इस शिलालेख में रणथम्भौर के तीन चौहान राजाओं का नामोल्लेख हुआ है – (1) वाग्भट्ट (2) जैमेत्र सिंह तथा (3) हम्मीर देव इस शिलालेख को बलवन शिलालेख भी कहा जाता है।

हम्मीर देव के इस शिलालेख में रणथम्भौर का नाम रणस्म्भपुर उल्लेखित किया गया है। इस शिला लेख से पता चलता है यह शिलालेख हम्मीरदेव के राज्यारोहण के लगभग 5 वर्ष बाद का है। इस शिलालेख में रणथम्भौर में शासन करने वाले तीन चौहान राजाओं – वाग्भट्ट, जैमेत्र सिंह तथा हम्मीर देव का उल्लेख हुआ है। इस शिलालेख से पता चलता है कि जैत्र सिंह ने मण्डप (मालवा) के राजा जयसिंह को पराजित किया। उसने कूर्मराज और कर्कराल गिरी के राजा को मारा और मालवा के सैकड़ों वीर योद्धाओं को पराजित कर अपना बन्दी बना लिया।

तदुपरान्त इस शिलालेख में राजा हम्मीरदेव द्वारा दो कोटि यज्ञ सम्पन्न करने तथा मालवा के राजा अर्जुन की हस्तिसेना (हाथी) को पकड़ लेने का उल्लेख किया गया है। ये यज्ञ पुरोहित विश्वरूप के पौराहित्य में किये गये। डॉ. दशरथ शर्मा की मान्यता है कि हम्मीर देव के यज्ञ समुद्रगुप्त के द्वारा सम्पन्न अश्वमेघ के समान ही थे। हम्मीर देव के इस बलवन शिलालेख में उसके विजय अभियानों का आंशिक उल्लेख ही हुआ है वैसा नहीं जैसा कि नयनचन्द्र सूरी लिखित हम्मीर महाकाव्य में इनका एक साथ समग्र रूप से वृतान्त दिया गया है। इसका कारण यह संभावित लगता है कि उक्त शिलालेख राव हम्मीर देव राज्यारोहण के मात्र पांच वर्ष बाद का है। अतः हो सकता है कि इसके कई अभियान इस शिलालेख की रचना के बाद आयोजित हुए हों। इस सम्बन्ध में डॉ. दशरथ शर्मा की मान्यता है कि राव हम्मीर ने अपने सारे विजय अभियान एक साथ नहीं कर अलग-अलग और विभिन्न समयावधि में आयोजित किये। हम्मीरायण के रचियता ने वर्णन की सुविधा के लिए इन्हें हम्मीर के दिग्विजय अभियान का नाम देते हुए इनका एक साथ उल्लेख कर दिया।

तस्मिन सुवर्ण-धन-दान-निदान पुण्यपम्यैः पुरन्दस्पुरी-तिलकायमाने।

साम्राज्यमाज्य-परितोषित तहव्यवाहो हम्मीर-भूपतिरविन्दत भूतधात्र्याः।।

यःकोटि होम-द्वितीय चकार श्रेणी गजाना पुनरानिनाय।

निर्ज्जत्य येनार्जुनमाजि मूर्ध्नि श्रीर्म्मालवस्यो ज्जगृहे हठेन।।

इस शिलालेख में रणथम्भोर का प्राचीन नाम रणस्तम्भपुर उल्लेखित किया गया है। इस शिलालेख अथवा प्रशस्ति के रचयिता राव हम्मीर का नृपमात्य बैजादित्य (बीजादित्य) था। राव हम्मीर देव चौहान रणथम्भौर का वीर और पराक्रमी शासक था। रणथम्भौर के राज सिंहासन पर बैठते ही उसने साम्राज्य विस्तार की नीति का अनुसरण किया। हम्मीर के दिग्विजय अभियान का नयनचन्द्र सूरी विरचित हम्मीर-महाकाव्य में वृतान्त दिया गया है। •

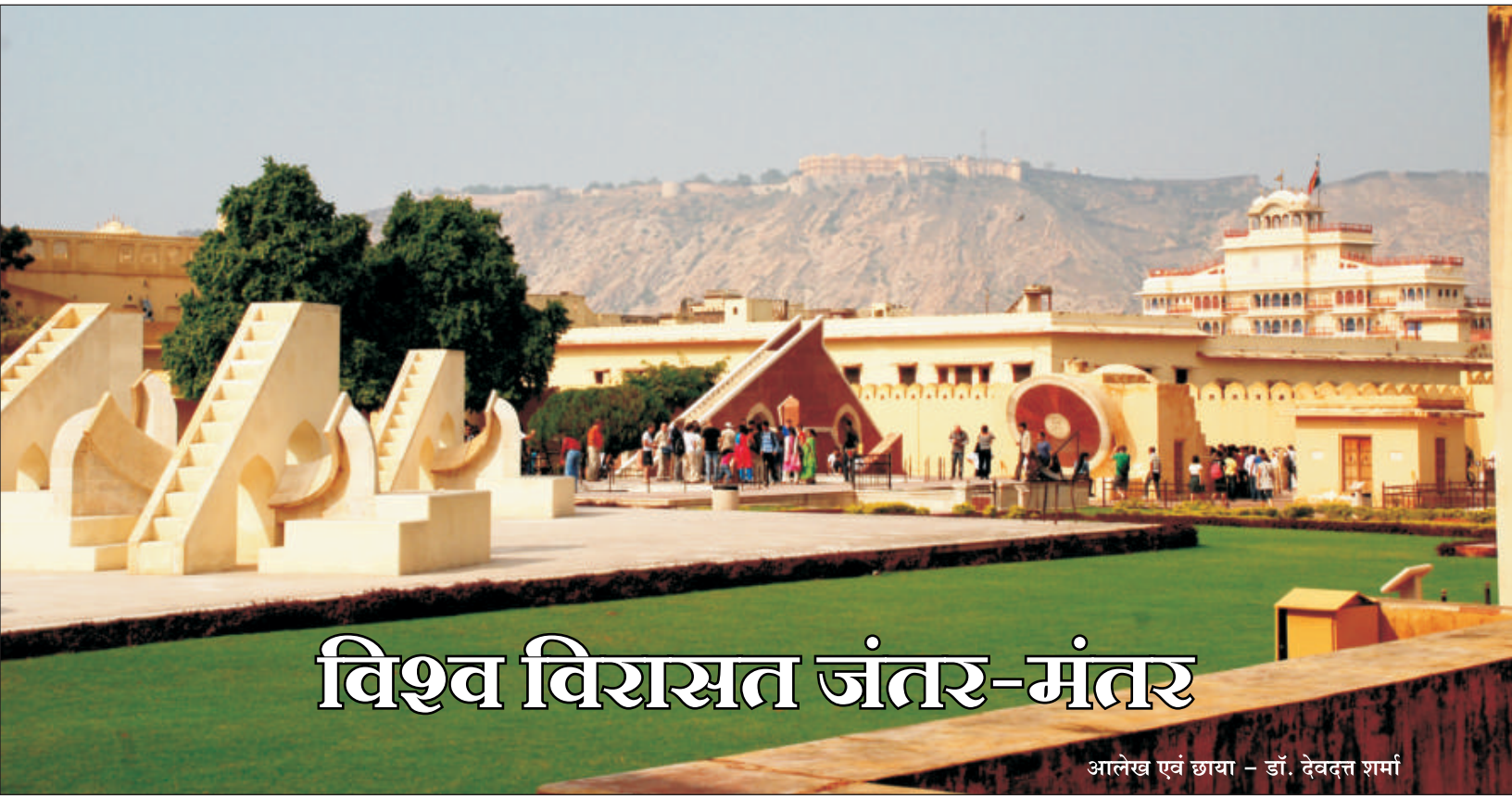

विश्व विरासत जंतर-मंतर

आलेख एवं छाया - डॉ. देवदत्त शर्मा

गुलाबी नगरी जयपुर के जंतर-मंतर को 2010 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया। इससे न केवल इस सांस्कृतिक पुरास्थल को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली बल्कि यह पर्यटकों के आकर्षण का भी प्रमुख केन्द्र बन गया। यों तो जयपुर के स्थापत्य और शिल्प वैभव के मोहपाश में बंधे लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष यहां आते हैं किन्तु भव्य राजप्रासादों की ऊंची प्राचीरों से घिरा-संरक्षित खगोल विद्या का यह अनूठा इतिहास पर्यटन के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

आधुनिक सूक्ष्म यंत्रों और टेलिस्कोपिक युग में चूने-पत्थर से बनी ये भारी-भरकम वेधशालाएं भले ही आज अनुपयुक्त लगती हों किन्तु सदियां बीत जाने पर भी काल को अंगूठा दिखाये समय के सीने पर गर्व से खड़े इन उपकरणों से जब समय और नक्षत्रों की प्रामाणिक जानकारी मिलती है तो न केवल इस उपलब्धि से हम चमत्कृत होते हैं बल्कि खगोल विद्या की तत्कालीन उन्नत स्थितियों से भी हम गौरवान्वित होते हैं। करीब तीन सौ वर्ष पूर्व बनी जयपुर की इस वेधशाला, जो जंतर-मंतर के नाम से प्रसिद्ध है, की प्रामाणिकता इस बात से भी सिद्ध होती है कि अंतरिक्ष में स्थापित दूर संवेदी उपग्रहों से प्राप्त मौसम सम्बन्धी सूचनाओं के बावजूद आज भी जयपुर के ज्योतिष विद्वान वर्षा ऋतु से पूर्व आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्तकाल में यहां एकत्र होते हैं और पताका पहरा कर चातुर्मास में वर्षा का पूर्वानुमान लगाते हैं।

मध्यकाल में भारतीय इतिहास के अंधकारपूर्ण युग में जब ज्योतिषयंत्र विद्या लुप्त प्राय: हो रही थी तथा यूरोपीय देश ज्योतिष विज्ञान के सिद्धातों को मूर्तरूप देने में जुटे हुए थे तब ज्योतिष, गणित तथा खगोल विद्या में रुचि रखने वाले जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने अपने अथक प्रयासों से न केवल ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन को संजीवनी प्रदान की, पंचांगों का परिष्कृत किया, नक्षत्रों की संशोधित सूची बनवाई, सूर्य-चन्द्रमा तथा ग्रहों की एक नवीन तालिका प्रस्तुत की बल्कि भारत में पांच वेधशालाएं बनवा कर खगोल विद्या को एक नया आयाम भी प्रदान किया। ये वेधशालाएं सोवियत संघ के उज्बेकिस्तान के समरकंद में उलूकबेग द्वारा सन् 1420 में निर्मित वेधशाला का परिवर्द्धित एवं परिष्कृत संस्करण तो हैं ही, खगोल विद्या के पाषाण युग का अंतिम स्मारक भी है।

आमेर के स्थान पर वास्तु सम्मत जयपुर नगर बसा कर उसे रियासत की राजधानी बनाने वाले महाराजा सवाई जयसिंह ने यूनानी ज्योतिषी टोलेमी की तालिकाओं को अपने अनुसंधान का आधार बनाया तथा पंडित जगन्नाथ सम्राट एवं पंडित केवलराम के सहयोग से उलूकबेग की तालिकाओं का संस्कृत में अनुवाद करवाया। उन्होंने उलूकवेंग तथा पूर्ववर्ती अरब एवं मुस्लिम ज्योतिषियों को प्रिय 'एस्ट्रोलेब' जैसे यंत्रों का उपयोग तो किया किन्तु शीघ्र ही यह भी जान लिया कि अपनी यांत्रिक अपूर्णता और अशुद्धता के कारण इनसे सही परिणाम नहीं निकल सकते। अत: उन्होंने पक्के वृहदाकार पाषाण यंत्र बनवा कर देश के प्रमुख नगरों में वेधशालाएं स्थापित करने का निर्णय लिया।

वेधशाला बनवाने के अपने सपने को साकार करने की दिशा में उन्होंने सन् 1724 में दिल्ली में पहली वेधशाला बनवाई तथा सन् 1728 में जयपुर वेधशाला का निर्माण प्रारंभ किया। सन् 1734 में पूर्ण यह दूसरी वेधशाला जंतर-मंतर के नाम से विश्वभर में विख्यात है। जंतर अर्थात् यंत्र और मंतर अर्थात मंत्र या सूत्र। दूसरे शब्दों में वह स्थान जहां यंत्रों और निर्धारित सूत्रों के माध्यम से ज्योतिषीय गणना की जाती है। आगे चलकर उन्होंने उज्जैन, बनारस तथा मथुरा में भी वेधशालाएं बनवाई किन्तु इन सबमें जयपुर की वेधशाला सबसे विशाल, सम्पूर्ण और सुरक्षित अवस्था में है।

जयपुर की इस वेधशाला को तो महाराजा जयसिंह ने उस समय ज्योतिष विज्ञान का अन्तरराष्ट्रीय मंच ही बना दिया था। यही कारण था

कि कभी पुर्तगाली गणितज्ञ तो कभी कोई जर्मन विद्वान अथवा पाश्चात्य खगोल शास्त्री उनसे तथा उनकी विद्वान मण्डली से ज्योतिषीय गणना पर विचार-विमर्श के लिए यहां आते रहते थे। इस वेधशाला में प्राचीन पद्धतियों से अधिक शुद्ध निष्कर्ष निकालने वाले तीन यंत्र-सम्राट, जयप्रकाश तथा रामयंत्र- हैं जो स्वयं महाराजा जयसिंह द्वारा आविष्कृत हैं। इनकी गणना शुद्धता आधुनिक वैज्ञानिकों को भी विस्मित कर देती है। इनके अलावा भी इस वेधशाला में नाड़ी वलय यंत्र, क्रांति वृत्त यंत्र, यंत्रराज, उन्नतांश यंत्र, दक्षिणोदक भित्ति यंत्र, षष्ठांश यंत्र, राशिवलय यंत्र, कपाली यंत्र, चक्र यंत्र तथा दिगंश आदि कुल 16 यंत्र हैं जो सभी चूने-पत्थर से बने हुए हैं।

महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा आविष्कृत तीन यंत्रों में पहला 'सम्राट यंत्र' है जो इस वेधशाला का सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा यंत्र है। करीब नब्बे फीट ऊंचे इस यंत्र की चोटी आकाशीय ध्रुव को सूचित करती है। ऊपर चढ़ने की सीढियों के दोनों ओर की दीवारों के बाहरी किनारे पृथ्वी की धुरी के समान्तर हैं। इस यंत्र को विश्व की सबसे बड़ा धूप घड़ी होने का गौरव भी प्राप्त है। इसके समय सूचक चाप पर अंकित चिन्हों से दो सेकण्ड तक का सूक्ष्मतम स्थानीय समय देखा जा सकता है। इस यंत्र को उत्तमोत्तम यंत्र बताया गया है।

महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा आविष्कृत दूसरा यंत्र 'जय प्रकाश यंत्र' है जो दो भागों में विभक्त है। एक भाग दूसरे भाग का पूरक है। इस यंत्र से स्थानीय समय, नवांश, उन्नतांश आदि के अतिरिक्त मेष राशि से मीन राशि तक बारह मासों की सूर्य स्थिति का ज्ञान होता है। इस यंत्र को सर्व यंत्र शिरोमणि कहा गया है। इसी शृंखला का तीसरा यंत्र 'रामयंत्र' है। दो भागों में विभक्त दोनों यंत्र एक-एक घंटे के अन्तर से कार्य करते हैं। लगभग 23 फीट व्यास वाले इस यंत्र से उन्नतांश और दिगंश पढ़े जाते हैं तथा नक्षत्रों की जानकारी मिलती है। जयसिंह ने इसी यंत्र से अपनी प्रसिद्ध तालिका 'जीज मुहम्मदशाही' बनाई थी जो उलूकबेग की तालिका का परिष्कृत रूप थी।

जंतर-मंतर का छोटा सम्राट यंत्र बड़े सम्राट यंत्र का लघुरूप है तथा इसके समय सूचक चाप पर अंकित चिन्हों से बीस सेकण्ड तक का स्थानीय समय देखा जा सकता है। लगभग दस फीट व्यास का नाड़ी वलय यंत्र भी दो भागों में विभक्त है। इससे स्थानीय समय, राशियों में समस्त ग्रह एवं खगोलीय पिण्डों की स्थिति का ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार क्रांति वृत्त यंत्र से राशियों में सूर्य की राशि एवं अंश तथा अन्य आकाशीय गृह-नक्षत्रों की स्थिति, 'यंत्र राज' से जयपुर की आकाशीय स्थिति, सप्तऋषि मंडल तथा ध्रुवतारे और 27 नक्षत्रों की स्थिति का वेध किया जाता है वहीं उन्नतांश यंत्र से ग्रहादि के नतांश और उन्नतांशों का पता चलता है। दक्षिणोदक भित्ति यंत्र से ग्रह-नक्षत्रों की तथा षष्ठांश यंत्र से सूर्य-चन्द्रमा की क्रांति का बोध होता है। राशि वयल यंत्र से बारह राशियों की स्थिति और कपाली यंत्र से उदय क्षितिज गत राशि (लग्न) जानी जाती है। चक्र यंत्र से सूर्यादि ग्रहों की क्रांति आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। दिगंश यंत्र से ग्रहों के दिगंश तथा ध्रुववेध पट्टिका से रात के समय ध्रुव तारे का बोध होता है। इसके अलावा पलभा यंत्र, भित्तीय यंत्र आदि अन्य यंत्र भी हैं जो ज्योतिष गणना के महत्वपूर्ण उपकरण हैं तथा आज भी पूर्णतय कार्य करने की स्थिति में हैं। इन्हीं यंत्रों से ज्योतिष विषय के छात्रों की प्रायोगिक परीक्षाएं कराई जाती हैं। खगोल विद्या के सूक्ष्म एवं वृहद वैज्ञानिक यंत्रों के युग में सदियों पहले बने चूने पत्थर से निर्मित इन यंत्रों से समय एवं ग्रह आदि की सटीक गणना देखते हैं तो न केवल चमत्कृत होते हैं बल्कि अपने को गौरवान्वित भी महसूस करते हैं। •

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

– गुलाब बत्रा

पिछली शताब्दी में अस्सी के दशक की बात। जयपुर के सी-स्कीम क्षेत्र में तत्कालीन मान हाउस में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में भरतपुर के विश्व विख्यात घना पक्षी अभयारण्य के बारे में जानकारी दी जा रही थी। बार-बार घड़ी देखने और जल्दी जाने के स्वभाव के बावजूद पत्रकार साथी बातचीत से इतने मंत्रमुग्ध थे कि उन्हें समय का भी ध्यान नहीं रहा। इसी दौरान घने में स्वच्छंद विचरण करने वाले पक्षियो में अनुशासन स्वभाव के सम्बन्ध में रोचक सूचना दी गई। प्रेस कॉन्फ्रेंस वक्ता ने बताया कि घने में किसी पेड़ की ऊपरी डाल पर एक फलां नाम की चिड़िया बैठती है तो निचली डाल पर अमुक चिड़िया जाकर बैठती है। इन चिड़ियाओं में गजब का अनुशासन यह है कि ऊपर की डाल खाली होने के बावजूद अन्य चिड़िया उसका उपयोग नहीं करती। चिड़िया जगत में अनुशासन की भावना अनूठी है। इसी संदर्भ में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की 7-8 फरवरी 1976 को डीग भरतपुर की यात्रा का स्मरण हो आता है। तब श्रीमती गांधी ऋतुराज वसंत के माहौल में प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर घना पक्षी अभयारण्य का अवलोकन करने आयी थीं। बम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ डॉ. सालिम अली ने इंदिरा जी और उनके परिवार को अभयारण्य का भ्रमण

करवाया था। अनूठी जैव विविधता के लिए जगविख्यात केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को लोकभाषा में 'घना' कहा जाता है। यह उद्यान वाइल्ड लाइफ (प्रोटेक्शन) एक्ट 1972 के अन्तर्गत कानूनी रूप से संरक्षित पार्क है। घने को राजस्थान वन्य जीव अधिनियम के नियम 5 के अन्तर्गत मार्च 1956 में अभयारण्य (सेंचुरी) के रूप में घोषित किया गया। विशेषज्ञों की एक समिति की सिफारिश पर भारत सरकार से इसे मार्च 1982 में राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क) का दर्जा मिला। इसे अक्टूबर 1981 मे ''वैटलेण्ड कन्वेन्शन'' के अन्तर्गत ''रामसर साइट'' में तथा ''वर्ल्ड हेरिटेज कन्वेन्शन'' के तहत 1985 में ''विश्व प्रकृति निधि'' (वर्ल्ड हेरिटेज साइट) सम्मान से गौरवान्वित किया गया।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान विश्व की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहर के संरक्षणार्थ कन्वेंशन द्वारा विश्वदाय सूची मे नामांकित किया गया है। कोई भी ऐसा स्मारक या प्राकृतिक स्थल जो मानवता के लाभार्थ संरक्षण के योग्य समझा गया है, का विश्वदाय सूची में नामांकन उसके विशिष्ठ सार्वजनिक महत्व की पुष्टि करता है।

पिछली दो शताब्दियों से घने के रूप में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान की पहचान अनूठे जलीय पारिस्थितिक तंत्र एवं समृद्ध जैवीय विविधता के नाते बनी हुई है। इस नम भूमि पर जब-जब भी संकट के बादल छाये हैं तब-तब प्रकृति एवं वन्य जीव प्रेमियों तथा विशेषज्ञों ने विभिन्न तौर तरीकों से आवाज बुलंद करते हुए इस प्राकृतिक सम्पदा के अस्तित्व को बचाने की पहल की है।

पानी की किल्लत से उद्यान का हेरिटेज दर्जा छिनने की नौबत आ गई। उस समय सुनयन शर्मा ने 2006 में उद्यान निदेशक का पदभार संभाला। वर्ष 1988 से 1991 तक रिसर्च ऑफिसर के रूप में उन्होंने उद्यान का गहन अध्ययन किया था। बाण गंगा नदी के जल प्रवाह के अभाव में अजान बांध ओर गंभीरी नदी पर पांचना बांध की ऊंचाई बढ़ाने से उद्यान को पानी मिलना मुश्किल हो गया। इस अधिकारी ने करीब सवा सौ साल के अंतराल के बाद चिकसाना नहर से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर लम्बी नई नहर निर्माण से बाढ़ का पानी पक्षियों की ब्रीडिंग कॉलोनी तक पहुंचाने की व्यवस्था की। हरियाणा, उत्तरप्रदेश तथा भरतपुर जिले के कामां पहाड़ी क्षेत्र में मानसून में बाढ़ के

पानी के उपयोग के लिए गोवर्धन ड्रेन की योजना बनाकर उद्यान के जलसंकट का समाधान किया। उद्यान के दलदली क्षेत्र में लवणीयता के दुष्प्रभाव को खत्म करने के उद्देश्य से 1930 के आस-पास हरियाली के लिए विलायती बबूल के पौधे लगाए गए।

29 वर्ग कि.मी. में फैले इस पार्क में पक्षियों की करीब 380 प्रजातियां, स्तनधारी जीवों की 34, वनस्पतियों की 372, सांप छिपकली इत्यादि रेंगने वाले जीवों की 29 उभयचर जीवों की आठ मछली वर्ग की 57 और तितलियों की 80 प्रजातियों की उपलब्धता रही है। विश्व प्रसिद्ध साईबेरियन सारस के लिए तो यह उद्यान

विश्वविख्यात रहा है। वर्ष 1962 में तो इनकी संख्या दो सौ तक आंकी गई। अत्यंत ठंडे मुल्क से आने वाले इन परिन्दों के आवागमन की संख्या विभिन्न कारणों से धीरे-धीरे कम होती गई और 2001 के पश्चात् तो इनके दर्शन भी दुर्लभ हो गए। सारसों से इस उद्यान को पुन: आबाद करने के विविध प्रयास भी सफल नहीं हो पाये हैं। जीव जंतु विशेषज्ञ इस पार्क में ड्रेगन फ्लाई मकड़ी एवं बीटल्स की उपलब्धता पर शोध कार्य में जुटे हुए है। भरतपुर के महारानी श्री जया महाविद्यालय में प्राणिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ.एम.एस.त्रिगुणायत ने हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मॉथ जैव विविधता पर स्वीकृत वृहद शोध परियोजना को पूरा किया है जिसमें 39 प्रजातियों के साथ जैव विविधता सम्बन्धी जानकारी मिली है। पार्क प्रबन्धन के संदर्भ में कुछ विशेष प्रयास किये जा रहे है। उद्यान की जैव विविधता के लिए खतरा बनी मांगुर मछली तथा जल पक्षियों के लिए अवरोध बनी जलकुम्भी को भी उद्यान की छिछली झीलों से बाहर निकाला जाता रहा है तथा गाद हटाकर झील की गहराई बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस उद्यान के लिए 550 मिलियन क्यूबिक फीट पानी की आवश्यकता रहती है।

देशी-विदेशी पक्षियों के निर्बाध आवागमन से भरतपुर की पहचान उत्तरी भारत के प्रमुख पर्यटन केन्द्र के रूप में है। उद्यान में मानसूनी वर्षा के बाद सर्दी की ठिठुरन बढ़ते ही देश विदेश से पक्षियों का आगमन आरम्भ हो जाता है। देखते-देखते परिन्दे वृक्षों पर अपने घोंसले बनाने और प्रजनन प्रक्रिया से अपनी वंशवृद्धि के लिए समर्पित हो जाते हैं। जलीय पक्षियों के प्रजनन की दृष्टि से इस उद्यान को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। पक्षियों के मधुर कलरव से घना गूंज उठता है। प्रकृति एवं वन्य जीव प्रेमी इस प्राकृतिक छटा का आनंद लेने के लिए खिंचे चले आते हैं। प्रकृति की रम्य गोद में एक-एक पल को निहारने के साथ कैमरा क्लिक करने से नहीं चूकते। दरअसल इस उद्यान की नैसर्गिक छटा प्रकृति की अनुपम देन है। भारत आने वाला औसतन हर तीसरा पर्यटक गुलाबी नगरी जयपुर भ्रमण का लोभ संवरण नहीं कर पाता और पर्यटन मानचित्र पर दर्ज दिल्ली, आगरा, जयपुर के सुनहरी त्रिकोण में बृज अंचल से सटा भरतपुर भ्रमण तो सैलानियों के लिए बोनस माना गया है।

जाने माने पक्षी विशेषज्ञ प्रकृति प्रेमी डॉ.सालिम अली ने तो अपने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा इस उद्यान को समर्पित किया। बम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी से जुड़ी विभिन्न हस्तियों ने इस अभयारण्य से जुड़े पहलुओं पर विशेष शोध कार्य किया है। देश-विदेश के विषय-विशेषज्ञों ने भी केवलादेव उद्यान पर अध्ययन एवं अनुसंधान किया है।

गहरे कटोरे के समान यह भू-भाग बरसाती नदी, बाण गंगा, गंभीर तथा रूपारेल के कारण दलदली क्षेत्र में परिवर्तित हो जाता था।

इस सतही पानी पर बाबत (1527) से पहले सीकरी झील बनाई गई। कभी मुगल शासकों की राजधानी रही फतहपुर सीकरी के पश्चिम में 18 किमी दूर भरतपुर की 1733 में स्थापना करने वाले महाराजा सूरजमल के कार्यकाल में बाणगंगा नदी पर केवलादेव उद्यान में जल आपूर्ति के लिए अजान बांध का निर्माण हुआ। वर्ष 1901 से पहले के नक्शे के अनुसार तब भरतपुर अंचल में 2279 एकड़ क्षेत्र में आधा दर्जन घने थे जिनमें चार भरतपुर और एक-एक डीग व रूपवास क्षेत्र में थे।

अजान बांध के पास इत्र बनाने का यह साक्षी रहा है। घने में 1902 में बसी आबादी हटायी गई। वर्ष 1964 में डक (मुर्गाबी) शूटिंग तथा 1981 में ईधन के लिए पेड़ो की कटाई और 1982 में पशुओं की चराई बंद की गई। खेती पर भी पाबंदी लगाई गई। भगवान श्रीकृष्ण के प्रिय वृक्ष कदम की घने में बहुतायत थी। करीब 600 मीटर क्षेत्र मे फैले कदम वृक्षों को कदम कुंज की संज्ञा दी गई। कार्बन डेटिंग के आधार पर 800 साल पुराने बड़ के पेड़ की पहचान की गई।

मूल रूप से घना और भरतपुर का भू-भाग यमुना नदी एवं इसकी वितरिकाओं से घिरा हुआ क्षेत्र रहा है। गंभीरी बाणगंगा के फलड़ क्षेत्र के कारण वाटर लोगिंग (जल प्लावन) से जमीन में लवणीयता आ गई। यहां नमक उत्पादन भी किया जाने लगा। भरतपुर शहर की एक बस्ती नमक कट्रा नाम से जानी जाती है। बरसाती नदी बाण गंगा गंभीरी तथा रूपारेल के कारण इस इलाके को कई बार बाढ़ का सामना करना पड़ा तो पानी की आवक बने रहने से अनेक बांधों का निर्माण भी किया गया। भरतपुर रियासत की अनूठी सिंचाई प्रणाली की ख्याति तो दूर-दूर तक फैली। घने तथा आस-पास के गांवों में 1896 से 1950 तक अजान बांध से खेतों की सिंचाई की जाती रही। फिर 1955 में पुन: सिंचाई आरम्भ की गई और 1968 में बंद हुई। केवला देव राष्ट्रीय उद्यान का नामकरण घने में केवलादेव महादेव मन्दिर के नाते किया गया। इसके पास ही डक शूटिंग का विवरण पत्थरों की शिला पर दर्ज है। रियासत काल में पहला मुर्गाबी (डक आखेट) तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन के सम्मान में एक दिसम्बर 1902 को हुआ। शाही मेहमानों के लिए 1964-65 तक ऐसे आखेट आयोजन होते रहे। रिकॉर्ड के अनुसार लार्ड लिनलिथगो ने सर्वाधिक 4273 मुर्गाबियों का शिकार किया। बाद में आखेट बंद किया गया।

बाबा सीताराम जी बगीची के उल्लेख के बिना इस उद्यान की कथा अधूरी मानी जाती है। जयपुर, आगरा, बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर उद्यान के मुख्य द्वार से करीब दो कि.मी. दूरी पर बांयीं तरफ का रास्ता इसी बगीची पर जाता है। हनुमान मन्दिर के साथ बाबा की यह तपोस्थली दो बीघा से अधिक क्षेत्र मे फैली हुई है। तत्कालीन महाराजा ने 1902 में यहां एक कुएं का निर्माण करवाया था। शताब्दी पुराने विशालकाय बरगद की शाखायें बगीची परिसर में फैल गई है। बाबा सीताराम पन्द्रह फीट गहरी गुफा में तपस्यारत रहते थे जिनका निधन 1990 में हुआ। इंसान और जंगल के आपसी रिश्ते का जीवंत प्रतीक है सीताराम की बगीची। इस परिसर में पशु-पक्षी तथा अन्य जीव आपसी सद्भाव से स्वच्छंद विचरण करते देखे जा सकते हैं। यह बगीची प्रकृति

संतुलन पर्यावरण संरक्षण जीवों से आत्मीयता ताल तलैयों की सुरक्षा और बाग बगीचो की सार्थकता का जीवंत प्रमाण है। बाबा सीताराम और उनके शिष्यों के पुकारने पर ये प्राणी दौड़े चले आते हैं। बगीची के पास बड़े और गहरे तालाब में पांच से अधिक कछुओं की भरमार है। इस बगीची की शिष्य परम्परा में वर्ष 1981 से रहने वाले एक बाबा के अनुसार एक विशालकाय कछुआ तो सौ साल से अधिक आयु का है। विद्यार्थी जीवन में स्वयं यह लेखक बसंत पंचमी पर साथी विद्यार्थियों की टोली के साथ बाबा सीताराम के दर्शन करने जाते थे। इस बगीची पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

भरतपुर जिले के गजेटियर्स के अनुसार तत्कालीन भरतपुर रियासत में मोटे तौर पर जंगलों का नियंत्रण जमींदारों के अधीन था। एक यूरोपियन फोरेस्ट ऑफिसर द्वारा जंगलों के बारे में वर्ष 1905 में स्टेट कौंसिल के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमे इन जंगलों को तीन जोन में विभक्त किया गया था। रियासत काल में 1925 में भरतपुर फारेस्ट एक्ट बनाया गया जिसमें आवश्यकतानुसार संशोधन किए जाते रहे। स्वतंत्रता पश्चात् अप्रैल, 1950 में डिविजनल फॉरेस्ट ऑफिसर नियुक्त किया गया। इसके सेन्ट्रल जोन में घना तथा रूंध का जंगल शामिल था। रूध मुख्य रूप से घास के लिए था। घना एक समय ईंधन लकड़ी के काम आता था। इसमे बबूल, कदम, बेर, पीलू, इत्यादि के वृक्ष बहुतायत में थे। पिछले दशकों में विलायती बबूल ने उद्यान को जकड़ लिया था।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान केवल जंगल ही नहीं अपितु अनुपम वेटलेण्ड है। यमुना नदी के फ्लड क्षेत्र में उद्यान का सात वर्ग कि.मी. क्षेत्र में ग्रासलैण्ड वुडलैण्ड तथा जलीय पक्षियों की विविधता इत्यादि इसे परफेक्ट बनाती है। इस उद्यान की त्रासदी यह है कि इसका कोई बफर जोन नहीं है। घने के चारों ओर सुरक्षा दीवार बनाई गई है लेकिन निकटवर्ती ग्रामीणों द्वारा अपने हित साधने के लिए तोड़-फोड़ की आशंका के चलते सतत चौकसी, ग्रासलैण्ड में आगजनी के खतरे और जलकुम्भी से निजात पाने के लिए गंभीरता से उद्यान के प्रबन्धन पर ध्यान देना आवश्यक है।

रेत के धोरों पर 'मरु महोत्सव'

लेख एवं छाया – श्यामसुंदर जोशी

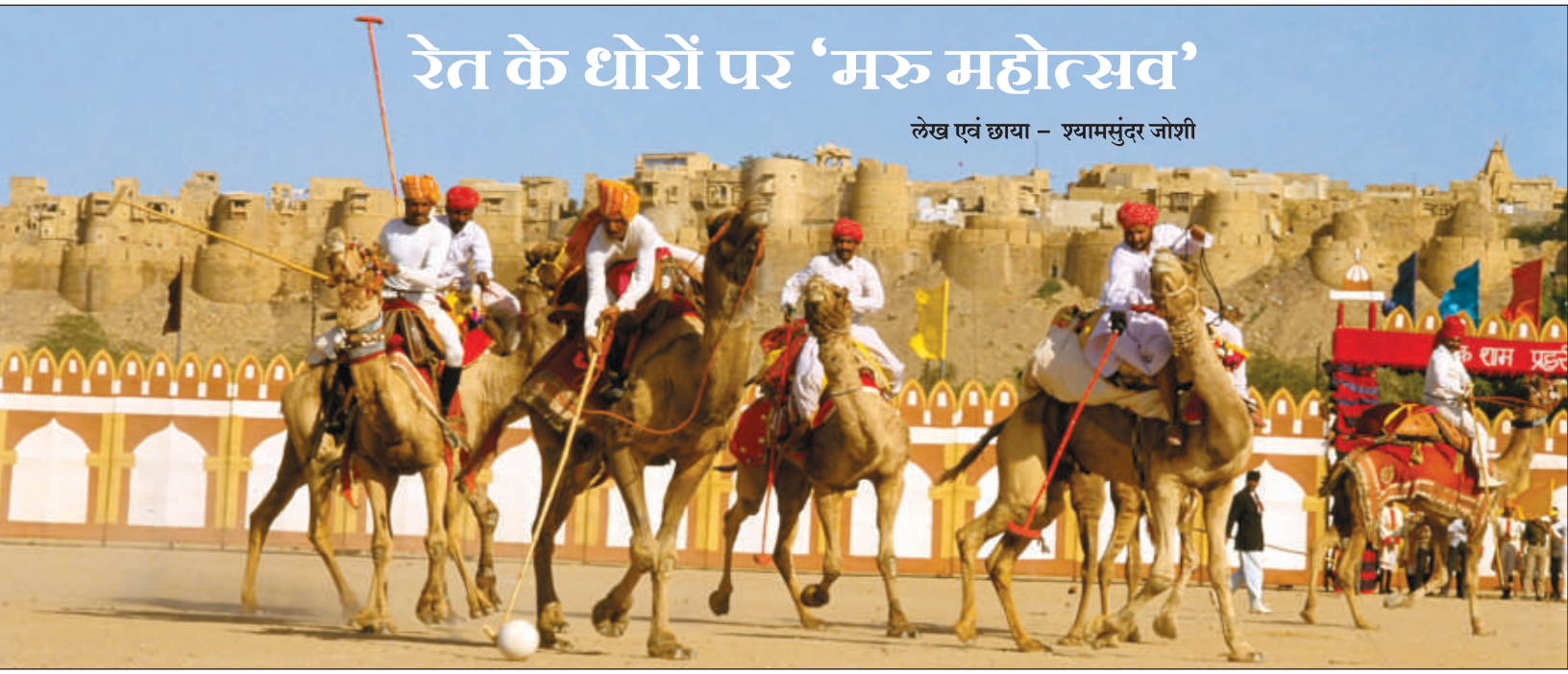

जैसलमेर की गलियों, सड़कों और चौराहों पर सैलानियों का सैलाब। मरुभूमि पर मस्ती का आलम, रेत के टीलों पर थिरकते पांव, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, रोमांचक प्रतिस्पर्धाएं और आकर्षक हस्तशिल्प प्रदर्शनियां। इन सब को मिलाकर नाम दिया है मरु मेला, मरु महोत्सव यानी डेजर्ट फेस्टिवल।

राजस्थान के रेगिस्तान में स्थित जैसलमेर शहर की धरती पर ऋतुराज बसंत का आगमन अपने साथ मरु महोत्सव के रूप में मौज-मस्ती और मनोरंजन की सौगात लेकर आता है। बसंत पंचमी के बाद आने वाली माघ पूर्णिमा पर जैसलमेर में आयोजित होने वाला मरु महोत्सव यहां की सुनहरी रेत को घुंघरू सौंप देता है और पूरा जन-जीवन आमोद-प्रमोद के रस-रंग में डूब जाता है।

राज्य के पर्यटन विभाग द्वारा इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष आयोजित किया जाने वाला यह मरु महोत्सव अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तरराष्ट्रीय पहचान कायम कर चुका है, और यही वजह है कि इस अवसर पर पूरी दुनियां के विभिन्न देशों से आने वाले विदेशी पर्यटकों की भी भरमार रहती है।

महोत्सव के दौरान तीन दिन तक विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। शुभारम्भ दिवस पर ऐतिहासिक सोनार दुर्ग से शोभा यात्रा निकाली जाती है जो शहर के मुख्य मार्गो से गुजरती हुई शहीद पूनमसिंह स्टेडियम पहुंचती है। जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, देशी-विदेशी पर्यटकों और शहर के गणमान्य जनों की मौजूदगी में निकाली जाने वाली इस शोभायात्रा में शामिल लोक कलाकार नृत्य प्रदर्शन एंव सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ माहौल को रंगीन बना देते है। बीएसएफ के सुसज्जित ऊंट सवारों और बैण्डवादकों का जत्था लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। रास्ते भर शहरवासियों द्वारा पुष्पवर्षा के साथ

शोभा यात्रा का स्वागत किया जाता है। स्टेडियम पर जमा दर्शकों के हुजूम के बीच तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मरु महोत्सव के शुभारम्भ की घोषणा होती है। रंग बिरंगे चटकीले परिधानों में सजे संवरे लोक कलाकार एक के बाद एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते है। मिस्टर डेजर्ट यानी मरुश्री और मिस मूमल प्रतियोगिता के साथ-साथ साफा बांधो प्रतियोगिता, मूछ श्री प्रतियोगिता और राजस्थानी परिधान जैसी अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं। इनमें श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत और सम्मानित किया जाता है। संध्या से शुरू हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम देर रात तक चलता रहता है।

दूसरे दिन सवेरे गडसीसर झील पर सूर्योदय का दृश्य निहारने के लिए भोर होते ही लगने लगता है प्रकृति प्रेमियों का मेला। ठण्डी बयार, झील का शांत शीतल जल और उसमें झांकती सूरज की परछाई और कलात्मक छतरियों का प्रतिबिंब। यह नजारा देख कर नजर खुद-ब-खुद ठहर जाती है।

दिन में ऊंट श्रृंगार, ऊंट दौड़, केमल पोलो और लद्दू ऊंट जैसी मनोरंजक और रोमांचक प्रतियोगिताएं होती हैं। देशी-विदेशी सैलानियों के बीच होने वाली रस्साकसी प्रतियोगिता तो दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करती है। सांझ ढले फिर शुरू होता है लोक गीत, संगीत और नृत्यमयी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सिलसिला। एक के बाद एक प्रस्तुतियों में राजस्थानी गीत, संगीत और नृत्य देख कर दर्शक हर्ष विभोर हो जाते हैं।

जैसलमेर शहर से करीब 40 किलोमीटर दूर सम के स्वर्णिम धोरों के बीच मनाया जाता है मरु महोत्सव का समापन समारोह। सवेरे से शाम तक रेत के रंगमंच पर लोक नर्तकों के नृत्य आयोजन। वातावरण में गूंजता लोक संगीत। चटकीले-भड़कीले परिधानों मे सजी संवरी महिलाएं और बन ठन कर मेले का मजा लेने आये नोजवान। हर वर्ग और हर तरह के सैलानी। क्या बच्चे, क्या वृद्ध और क्या जवान। सब के सब मस्ती के आलम में अलमस्त।

सम के रेतीले धोरों पर सूर्यास्त का दृश्य तो देखते ही बनता है। सूरज ढलने के साथ ही नीले आसमान में निकल आते हैं चांद सितारे। माघ पूर्णिमा का पूर्ण चंद्रमा सम के रेतीले धोरों पर चांदी सी चांदनी बिखेरता है। रेत के टीलों पर उभर आती है ऊंटों की कतारें और उन पर बैठे ऊंट सवार।

इन्ही के बीच मनाये जाने वाले समापन समारोह में रेगिस्तान की मूमल-महेन्द्र, ढोला-मारु आदि प्रेम कथाओं पर आधारित नृत्य-नाटिकाओं का मंचन किया जाता है और अंत में होती है रंगारंग आतिशबाजी।

आकाश में पूर्णिमा का चमकता चांद, धरती पर छिटकती चांदनी, रेत के समंदर में रेगिस्तानी जहाज ऊंटों की कतारें, जलती हुई मशालें, हवा में बिखरती आतिशबाजी की चिंगारियां और लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक कार्यक्रम। ये सब मिलकर वो नजारा पेश करते हैं कि बस, पूछो मत।

मरु महोत्सव में आयोजित होने वाले विशेष कार्यक्रमों के अलावा जैसलमेर के ऐतिहासिक दुर्ग, कलात्मक हवेलियों, हस्तशिल्प प्रदर्शनियों तथा यहां की गलियों, सड़कों और बाजारों में भी पर्यटकों की चहल पहल बढ़ जाती है। बस यूं समझ लीजिए कि पूरे तीन दिन तक इस शहर में नई रौनक सी छा जाती है।

राजस्थान के रेगिस्तान में स्थित जैसलमेर शहर जयपुर से 555 किलोमीटर दूर है। यहां सड़क मार्ग द्वारा किसी भी शहर से आसानी से पहुंचा जा सकता है। जैसलमेर में रेलवे स्टेशन एवं एयरपोर्ट भी है।

ग़ालिब और अद्वैत वेदांत

– फ़ुरक़ान ख़ान

किसी भी शायर के कलाम को समझने की प्रक्रिया दो तरह से होती है – एक तो शायर ने जो अल्फ़ाज़ प्रयुक्त किये हों उसके ज़रिये और दूसरे जो व्यक्ति पढ़ रहा है उसका अपना ज्ञान या जानकारी भी शायरी की व्याख्या का आधार बन जाती है। ग़ालिब पर लिखे इस लेख में उनके शेरों की व्याख्या के माध्यम से कोशिश की गई है कि उनकी शायरी के गूढ़ रहस्य हमें मिलें।

– संपादक

या रब वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात
दे और दिल उनको जो ना दे मुझको ज़बां और

ग़ालिब ने जब यह शेर कहा होगा तब उनको ख़्वाबों में भी यह अहसास ना होगा कि उनके कलाम की गहराई तक पहुंचने में सदियों का सफ़र भी कम रहेगा। आज उर्दू को ग़ालिब से महरूम हुए तक़रीबन डेढ़ सदी हो गई है और ग़ालिब की इसी 'तंगना ए ग़ज़ल, (ग़ालिब और कई अन्य शायर ग़ज़ल की विधा को विषय प्रस्तुत करने में तंग पाते हैं, 'तंगना ए ग़ज़ल' शब्द युग्म गालिब द्धारा ही प्रयोग किया गया था और अब यह मुहावरे के रूप में प्रयोग किया जाता है) की शेर प्रेमियों ने हज़ारों व्याख्यायें अपने-अपने दृष्टिकोण से पेश भी कर दी हैं लेकिन कोई ऐसी प्रामाणिक व्याख्या आज तक तैयार नहीं हो सकी जो उर्दू के विद्वान आलोचकों और साहित्यकारों की दृष्टि में पूर्ण हो या जिस पर अधिकतर विद्वान सहमत हों। यह तो तब है जब ग़ालिब खुद यह कहते हैं। गर नहीं हैं मेरे अशआर में मायनी न सही।

कहते हैं ग़ालिब ने उर्दू शायरी को ज़हन (बुद्धि) दिया । मेरा मानना है कि ग़ालिब ने न सिर्फ उर्दू शायरी विशेषकर ग़ज़ल को नया ज़हन (बुद्धि) दिया बल्कि शायरी की समझ रखने वालों को भी शेर समझने का सलीक़ा और एक ख़ास क़िस्म का विश्लेषणात्मक नज़रिया भी दिया । मेरा निजी अनुभव है कि गालिब के कलाम को समझने के लिए एक हाथ में फ़रहंग (उर्दू का शब्दकोष) और दूसरे हाथ में विश्लेषण करने वाला मस्तिष्क या बुद्धि ज़रूरी है ।

गोयम मुश्किल वगरना गोयम मुश्किल

(ग़ालिब के अनुसार वो मुश्किल शेर कहते हैं या फ़िर मुश्किल से कहते हैं) पर बात खत्म नहीं होती। सरसरी दृष्टि में, आसान से नज़र आने वाले अशआर में भी मायनी (अर्थ) की गहराइयों में इतनी तहें छिपी होती हैं कि एक के बाद एक व्याख्यायें करते चले जाएं तो भी नए अर्थ और व्याख्या की गुंजाइश समाप्त नहीं होतीं और ग़ालिब का कमाल यह है कि हर बार नए मायनी पुख़्ता दलीलों के साथ मिल भी जाते हैं।

गंजीना ए मानी का तिलस्म उसको जानिये
जो लफ्ज के ग़ालिब मेरे अशआर में आए

(अर्थात ग़ालिब जो भी शब्द अपने शेर में प्रयोग करते हैं उसे गूढ़ अर्थों का एक जादुई पिटारा मानना चाहिये दूसरे शब्दों में ग़ालिब जो भी शब्द प्रयोग कर रहे हैं वो सोच समझकर कर रहे हैं और उसके एक से अधिक मायने निकलेंगें ही)

ऐसा महसूस होता है शेर की रचना प्रक्रिया के जिन कठिन सौपानों से ग़ालिब गुज़रते हैं उन सौपानों का एहसास पढ़ने वालों को भी कराना चाहते हैं कम से कम शुरू के दौर की शायरी और ऐसी शायरी जिसमें विचारक ग़ालिब नज़र आते हैं पर यह बात पूर्णतय: खरी उतरती है । ग़ालिब के कलाम में जो अर्थ की गहराइयां (मानवीयत) और जो नई दिशायें मिलती हैं उससे ग़ालिब का वह विशेष 'अंदाज़ ए बयां 'आकार लेता है जिसे खुद ग़ालिब ने 'अंदाज़े बयां और' कहा है। ग़ालिब के अंदाज़ ए बयानी के भी कई पहलू हैं । ग़ालिब ने फ़ारसी शब्द और शब्द युग्मों को बड़ी ही सुन्दरता से प्रयोग किया है और उर्दू शायरी को नई नई उपमाओं और अलंकारों से धनी भी बनाया । ग़ालिब की शायरी में फ़ारसी शब्द और फ़ारसी तरकीबें इस तरह से प्रयोग हुईं हैं जिससे वो उर्दू शायरी का ही एक अहम हिस्सा लगती हैं तथा आज वो उर्दू शायरी का महत्वपूर्ण खज़ाना भी हैं।

तर्ज़ेबेदिल में रेख़्ता लिख़ना
असदुल्लाह खां क़यामत है

(बेदिल फ़ारसी के बहुत बड़े शायर हुये हैं जो बहुत कठिन शब्दों और मायनी के साथ शायरी करते थे । रेख़्ता उर्दू का ही आरंभिक नाम है । ग़ालिब आरम्भ में बेदिल के प्रभाव में फ़ारसी मिश्रित कठिन शायरी

करते थे बाद में उर्दु अर्थात रेख़्ता में शायरी करने लगे थे)

आल अहमद सूरूर लिखते हैं कि''ग़ालिब ने फ़ारसी तरकीबों का प्रयोग कर कम से कम शब्दों में बड़ी-बड़ी तस्वीरें प्रस्तुत की हैं ''

ग़ालिब की शायरी में नाटकीय तत्व, शोख़ी और रश्क तो मिलते ही हैं साथ ही एक वैचारिक जिज्ञासा भी मिलती है जिसे विद्धान आलोचकों ने तसव्वुफ़ (सूफ़ी दर्शन) का रंग मानकर व्याख्या की है । परंतु आज प्रश्न यह है कि ग़ालिब के जिन शेयरों को इस्लामी तसव्वुफ़ मानकर उनकी व्याख्या की गई है क्या वो वास्तव में मात्र सूफ़ी दर्शन ही है या उसमें किसी अन्य विचार पद्धति के तत्व भी हैं। इस संबंध में हमें सर्वप्रथम यह स्वीकार करना होगा कि ग़ालिब स्वयं कोई दार्शनिक नहीं थे और ना ही किसी दार्शनिक पद्धति के अनुयायी थे । लेकिन जिज्ञासा से परिपूर्ण उनकी बुद्धि अपने आस पास की दुनिया अर्थात जगत और जगत के सृष्टा और उनके पारस्परिक संबंधों की तह तक पहुंचने के लिये निरंतर प्रयास करती रहती थी। इसीलिये उनके कलाम में भांत भांत के विषय नये-नये अंदाज़ में मिलते हैं ।

खलीलुर्ररहमान आज़मी लिखते हैं

''उर्दू आलोचना में सर्वप्रथम डाक्टर अब्दुल रहमान बिजनौरी ने ग़ालिब की शायरी की बाहरी संरचना से हटकर उनके कलाम के वैचारिक तत्वों को समझने की कोशिश की और उनके विषयों को समझने पर अधिक ज़ोर दिया ।''

एक बात और है कि ग़ालिब का ज़हन (बुद्धि) एक तर्कशील ज़हन था वह किसी भी बात या विचार तत्व को ऐसे ही स्वीकार नहीं कर लेते थे बल्कि अपनी जिज्ञासु प्रवृति के रहते अपनी बुद्धि की आंच में तपा कर ही वो किसी बात को या तो स्वीकार कर लेते थे या फिर उस पर सवालिया निशान लगाकर शेर की शक्ल में पेश कर दिया कर देते थे।

जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर यह हंगामा ए खुदा क्या है

ग़ालिब की इस जिज्ञासा को उसलूब अहमद अंसारी ने ग़ालिब का ताअक़्क़ुली रंग कहा है और प्राय: व्याख्या करने वालों ने इसे तसव्वुफ़ कर रंग बता कर आसानी की राह पकड़ ली । लेकिन बहस का बिंदु यह है कि जिसे व्याख्याकारों या आलाचकों ने ग़ालिब का तसव्वुफ़ बताया है क्या वो रंग वास्तव में सूफ़ियों का दर्शन ही है या इसका स्त्रोत कहीं और भी है । इसके लिये सूफ़ी हज़रात द्धारा बयान किये गये तसव्वुफ़ को संक्षेप में समझना होगा ।

अक्सर व्याख्याकारों ने ग़ालिब की शायरी में वहदतुल वजूद (एकात्मवाद - एक ही अस्तित्व को मानना) की निशानदेही की है । वहदतुल वजूद या वहदुतल शहूद (सब में एक ही तत्व देखना) इस्लामी सूफ़ी विद्धानों की शायरी और उनके लिखे लेखों और किताबों में अक्सर बहस में आता है । वहदतुल वजूद हो या वहदतुल शहूद दोनों में एक ही तत्व की निशानदेही की गई है। फ़र्क़ सिर्फ़ आलमे वजूद या आलमे इमकान (जगत जिसमें हम सब भिन्न भिन्न संज्ञाओं और विशेषताओं के साथ रहते हैं) में तत्व के परम स्वरूप होने या उसके प्रकट होने में ही है। वहदतुल वजूद की सबसे सरल व्याख्या ये है कि जो कुछ भी है वो मात्र परम तत्व ही है जो भिन्नतायें और विशेषतायें दिखाई देती हैं वो मात्र एक पर्दा है अगर ये पर्दा उठ जाए तो सिवाए परम तत्व के कोई अस्तित्व ही नहीं रहे। वहदतुल शहूद का अर्थ ये है कि जो कुछ भी प्रकट है वो परम तत्व तो नहीं लेकिन उसमें परम तत्व ही दिखता है अर्थात वो परम तत्व का ही हिस्सा है ।

वहदतुल वजूद के इस दर्शन को जब भी ज़ेरे बहस लाया जाता है तो तमाम सूफ़ी हज़रात या उनके व्याख्याकार एकमत नहीं होते और सबके भिन्न भिन्न दृष्टिकोण सामने आते हैं। यह दृष्टिकोण उनके अपने अनुभव और सत्य से उनके साक्षात्कार पर आधारित है लेकिन सूफ़ी हज़रात अधिकतर इस बात पर एकमत रहते हैं कि तमाम दृष्टिकोण या दर्शन धार्मिक रास्ते से होकर ही हम तक पहुंचे हैं; जिसमें शरीअत को पहला स्थान प्राप्त है। तसव्वुफ़ को किसी भी दृष्टिकोण से समझें चाहे तरीक़त हो या मारेफत (सूफी पद्धतियां) सभी शरीअत पर निर्भर हैं। प्राय: सूफ़ी विद्धानों के नज़दीक वहदतुल वजूद का अर्थ अस्तित्व से हट कर तौहीद (एक परमात्मा की भक्ति) का रूप ले लेता हैं। उनके यहां वहदतुल वजूद के मानी 'ला इलाहा इल्लल ला' ही है यानी भक्ति के योग्य एक ही मालिक है। सूफ़िया हज़रात के तसव्वुफ में मौजूद इसी द्धंद्ध को समझने की कोशिश ग़ालिब के अश्आर में मिलती है।

सबको मक़बूल है दावा तेरी यकताई का
रूबरू कोई बुत आईना सीमा न हुआ

ग़ालिब इस्लाम के दिखने वाले बाहरी तत्वों और इबादत में कोई खास दिलचस्पी नहीं रखते थे । लेकिन तोहीद (एक ख़ुदा को मानना) और मोहम्मद साहब के अंतिम पैग़म्बर होने पर उन्हें कोई संदेह नहीं था।

मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली ने यादगारे ग़ालिब में दर्ज किया है कि-

''मिर्ज़ा इस्लाम की हक़ीक़त पर पुख़्ता यक़ीन रखते थे और तौहीद ऐ वजूदी को इस्लाम का मूल मंत्र मानते थे। उन्होंने तमाम इबादत ओर कर्तव्यों में से सिर्फ दो चीज़ें ले ली थीं । एक तोहीद ऐ वजूदी और दूसरे नबी की मोहब्बत और इसी को वो वसीलाए निजात (मोक्ष का साधन) कहते थे ।''

ग़ालिब के अशआर में दार्शनिक संकेतों को समझने के लिए एक बात और ध्यान में रखनी होगी कि इस्लाम या सूफ़िया हज़रात के दर्शन में सृष्टा और सृष्टि का फ़र्क़ हमेशा क़ायम रहता है जबकि ग़ालिब के अशआर में वो ख़त्म होता नजर आता है। इस्लामी विश्वास के अनुसार जगत का अस्तित्व 'कुन ओर फायकुन' की वजह से प्रकट होता है जबकि ग़ालिब के यहां 'लताफ़त बे कसाफ़त जल्वा पैदा कर नहीं सकती'। इसलिए मेरी राय में ग़ालिब के कलाम में मौजूद दार्शनिक दृष्टिकोण को समझने के लिए वेदों के विद्धान शंकराचार्य के अद्धैत वेदान्त Non Dualism को समझना होगा ।

शंकराचार्य जिन्हें आदि शंकराचार्य के नाम से भी जाना जाता है,

ने आठवीं सदी के शुरू में अपनी बुद्धिमता और ज्ञान से उपनिषदों की ऐसी व्याख्या लिखी जो जगत, आत्मा, सृष्टि एवं सृष्टा और उसके पारस्परिक संबंधों के बारे में तर्कोचित और बहुत हद तक सरल व स्वीकार्य भी थी । शंकराचार्य इस जगत को एक भ्रम Illusion क़रार देते हैं और वहदतुल वजूद के दर्शन पर मज़बूती से कायम रहते हैं। वो जगत और आत्मा दोनों को एक ही तत्व करार देते हैं। उनके इस दर्शन को अद्वैत वेदांत Non Dualism का नाम दिया जाता है। इस दर्शन की दो महत्त्वपूर्ण अवधारणायें हैं जिस पर इस दर्शन की बुनियाद रखी हुई है।

पहली अवधारणा – ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय एक है

(उर्दू में ज्ञान को शहूद, ज्ञाता को शाहिद और ज्ञेय को मशहूद कहा जाता है)

दूसरी अवधारणा – ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या

दूसरी अवधारणा तो सूफियों और इस्लाम में दुनिया की कल्पना में भी मिल जायेगी लेकिन इसकी प्रकृति कुछ भिन्न होती है। अब हम शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत जिसे उर्दू भाषा में ऐनियत पसंदी भी कहा जाता है, की रोशनी में ग़ालिब के इन अशआर को समझने की कोशिश करते हैं जिन में वहदतुल वजूद के इशारे मिलते हैं ।

अस्ले शहूदो शाहिदो मशहूद एक हैं
हैरां हूँ फिर मुशाहिदा है किस हिसाब में

ग़ालिब कहते हैं कि जब शहूद (ज्ञान) शाहिद (ज्ञाता) और मशहूद (ज्ञेय) एक ही है तो ये जो मुशाहिदे (देखने) की जो क्रिया है उसे क्या समझा जाए? शंकराचार्य की महत्त्वपूर्ण अवधारणा का ग़ालिब के शेर में बिना किसी रिआयते लफ़्ज़ी (शाब्दिक परिवर्तन) के ज्यों का त्यों जगह पाना ग़ालिब की फ़िक्र को उनके नज़दीक कर देता है। शंकराचार्य से भी शास्त्रार्थ में यही सवाल किया गया था जिसे उन्होने बड़ी खूबसूरती से प्रतिबिम्बवाद के माध्यम से समझाया था। शंकराचार्य जगत को एक ख़याल अथवा भ्रम मानते है और इसकी वजह माया को बताते हैं और ये मानते हैं कि सृष्टि का अस्तित्व माया की वजह से है और माया कुछ और नहीं अज्ञान का आवरण है। जैसे ही इंसान की बुद्धि से अज्ञान का आवरण हट जाता है सिर्फ एक अस्तित्व अर्थात परम अस्तित्व ब्रहम ही रह जाता है।

हस्ती के मत फरेब में आ जाइयो असद
आलम तमाम हल्का ऐ दामे ख़याल है।

ग़ालिब ने जिसे हल्क़ा दामे ख़याल कहा है वो शंकराचार्य के दर्शन में भ्रम ही है। अद्वैत वेदांत के अनुसार अस्तित्व तो सिर्फ परम तत्व का ही है यानी अस्तित्व चाहे वो आत्मा का हो या जगत का एक ही है, बाकी सब अज्ञान ही है जो ख़याल के रूप में महसूस होता है–

हां खाइयो मत फ़रेब ऐ हस्ती
हर चंद कहें क है, नहीं है

अद्वैत वेदांत के अनुसार जगत का होना और महसूस होना सिर्फ ऐसे ही है जैसे इंसान जब ख़्वाब देखता है तो उसे ख़्वाब में हर चीज वास्तविक लगती है, लेकिन जैसे ही आंख खुलती है वो सब ग़ायब हो जाती है। ये दुनिया भी एक ख़्वाब की तरह ही है, जैसे ही अज्ञान का पर्दा हटता है, सिर्फ परम तत्व अर्थात ब्रहम का ज्ञान ही बचा रहता है

है ग़ैब ऐ ग़ैब जिसको समझते है हम शहूद
है ख्वाब में हनूज़ जो जागे है ख़्वाब में

इस्लामी दर्शन या तसव्वुफ जिसकी पैरवी सूफी हज़रात करते हैं में, जगत या कायनात का होना 'कुन फयकून' पर निर्भर है, जबकि शंकराचार्य के मुताबिक़ अज्ञान यानी माया का पर्दा ही सृष्टि या जगत का कारण है। ये पर्दा ऐसा है जो वजूदे मुतलक (परम अस्तित्व) को कुछ वक्त के लिए आच्छादित कर देता है और यही समय जगत की सृष्टि का है। दूसरे शब्दों में अज्ञान अर्थात 'माया' ही जगत या कायनात का मूल कारण है यानी मात्र परम तत्व ब्रहम अपने आप जगत की सृष्टि का कारण नहीं हो सकता–

आराइशे जमाल से फ़ारिग़ नहीं हनूज़
पेशे नजर है आईना दायम नक़ाब में

या ये कि–

लताफ़त बे कसाफ़त जल्वा पैदा कर नहीं सकती
चमन ज़ंगार है आईना बादे बहारी का

ग़ालिब के यहां ज़ात (आत्मा) का ज़ाते कामिल (परमात्मा) में मिल जाना जाना सर्वोच्च उद्देश्य है जबकि इस्लामी मान्यता के अनुसार सृष्टि और सृष्टा की कल्पना पृथक–पृथक है जो कभी एक नहीं हो सकते। वेदांत दर्शन के ही एक और विद्धान रामानुज ने अपने दर्शन विशिष्टाद्वैत में आत्मा का परमात्मा में मिल जाने को मोक्ष माना है–

इशरते क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

क़तरे का दरिया में मिलकर एकाकार होना एक ऐसा मुहावरा है जो अंश को पूर्ण में मिलने को ही शायराना ढंग से बयान करता है और इसी को आत्मा का सर्वोच्च उद्देश्य क़रार देता है। रामानुज के दर्शन में आत्मा को परमात्मा का ही एक अंश तो माना है लेकिन उसे परम तत्व या परमात्मा के बराबर नहीं माना

हर चंद हर एक शय में तू है
पर तुझ सी कोई शय नहीं

ग़ालिब के वैचारिक बोध को अगर वेदांत दर्शन में तलाश किया जाता है तो स्पष्ट है ये सवाल भी पैदा होगा कि ग़ालिब की पहुँच वेदांत या हिंदू देवमाला तक थी भी या नहीं? ग़ालिब के बारे में हाली ने 'यादगारे ग़ालिब' में दर्ज किया है कि मिर्ज़ा ग़ालिब दर्शन और तर्कशास्त्र की किताबें अक्सर अध्ययन किया करते थे और उनको ख़ूब समझते भी थे लेकिन दिलचस्प बात तो ये दर्ज की है कि उन्होंने कभी कोई किताब खरीद कर नहीं पढ़ी ।

हाली लिखते है–

''जिस तरह मिर्ज़ा ने अपने रहने के लिए तमाम उम्र मकान नहीं

ख़रीदा उसी तरह अध्ययन के लिए भी... कभी कोई किताब नहीं ख़रीदी। इल्ला माशा अल्लाह एक शख़्स का यही पेशा था कि किताब फ़रोशो की दुकान से लोगों को किराए की किताबें ला दिया करता था। मिर्ज़ा साहब भी हमेशा उसी से किराए पर किताबे मंगवाते थे और अध्ययन के बाद वापस कर देते थे।''

ये भी स्वीकारा जाता हैं कि कोलकाता का उनका प्रवास उनके लिए आर्थिक मदद तो नहीं कर सका लेकिन दो बरस के उनके लखनऊ और कोलकाता के प्रवास ने उनकी वैचारिकता को और धार दी। कोलकाता में उन पर बहुत आपत्तियां की गईं जिसका उन्होंने पुख़्ता सुबूत के साथ जवाब दिया। ग़ालिब चूंकि तर्कशील बुद्धि के मालिक थे इसलिए किसी भी तर्क को बिना मस्तिष्क की चक्की में पीसे स्वीकार नहीं करते थे, चाहे वो वरिष्ठ विद्धानों ने ही पेश किया हो, उनकी तर्कशील बुद्धि ने हर उस बात पर ऐतराज किया है जिसे उनके मस्तिष्क ने कुबूल नहीं किया।

मुंशी हरगोपाल तफ्ता को लिखते है–

''ये न समझा करो कि अगले जो लिख गए वो हक (सत्य) है, क्या उस वक़्त आदमी मूर्ख पैदा नहीं होते थे।''

ज़ाहिर है के वो हर नुक़्ते को बारीकी से देखते और अपने अनुभव और अवलोकन से या तो उसकी काव्यात्मक व्याख्या करते या उस पर सवालिया निशान लगा देते थे

जला है जिस्म जहां दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जब राख जुस्तजू क्या है

उर्दू शायरी में क़ब्र, लहद जन्नत और दोज़ख़ तो पहले ही से मौजूद थीं लेकिन हिंदू देवमाला और रस्मो रिवाज की जानकारी की वजह से सुपुर्दे आतिश को भी ग़ालिब ने अपनी शायराना खूबी के साथ शेर मे ढाला। ये कमाल ग़ालिब ही का था। गालिब वहदतुल वुजूद के क़ायल थे इसमें कोई शक ओ शुब्हा हो ही नहीं सकता

उसे कौन देख सकता है यगाना है वो यक्ता
जो दोई की बू भी होती तो कहीं दो चार होता

ख़ुद उनके ख़ुतूत में इसका कई बार हवाला भी आया है लेकिन वहदतुल वुजूद के जो मायनी तोहीद (एक ईश्वर की उपासना) की तरफ ले जाते हैं वो उसको भी स्वीकार करते हैं और जो विचार आत्मा और परमात्मा के बारे में बहस में आते हैं उस अर्थ में भी उसे स्वीकार करते है।

नवाब अलाउद्दीन खां को लिखते हैं–

''अबू हनीफा को देखना और मसाइले हैज़ ओ निफ़ास में ग़ोता मारना और है और उरफा के कलाम से हकीकत और वहदते वजूद को अपने दिल नशीं करना और है ---''

(अबू हनीफ़ा इस्लामी क़ानून के बड़े विद्धान थे। ग़ालिब यह कहना चाह रहे हैं कि छोटे मोटे मामलों पर अबू हनीफ़ा की राय को देखना पृथक बात है और सत्य की जानकारी और एक ही परम अस्तित्व को दिल से स्वीकार करना पृथक बात है)

स्पष्ट है सिर्फ शरीअत के मामलों पर विचार करना या उन पर बातचीत करना ही उनकी नज़र में सत्य की खोज नहीं था और उसी सत्य की तलाश में वो सवाल करते हैं

पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों के लिखे पर नाहक़
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था

ये शेर उनकी तर्क वितर्क की शक्ति को दर्शाता ही है साथ ही ये भी बताता है उनके अनुसार सत्य की खोज में एक तरफा ख़्यालात से बात नहीं बनती। एक और ख़त में तफ्ता को लिखते है:

''जिंद्गी जीने को कुछ थोड़ी सी राहत दरकार है बाकी हिकमत और सल्तनत और शायरी और सामरी (जादूगरी) सब ख़ुराफ़ात है हिंदू में अगर अवतार होता तो क्या और मुस्लमानों में नबी बना तो क्या ! दुनिया में नामवर हुए तो क्या और गुमनाम बने तो क्या। कुछ मआश (आजीविका) हो कुछ सेहते जिस्मानी बाकी सब वहम है

स्पष्ट है हिंदुओं में अवतार की अवधारणा की उन्हें जानकारी थी और यह भी तय है कि उनको वेदों के बारें में भी अच्छी जानकारी थी।

नवाब अलाउद्दीन खां को एक खत में लिखते हैं।

''भाई कुरान की क़सम, इंजील की क़सम, तौरेत की क़सम, ज़ुबूर की क़सम, हनूद (हिन्दू) के चार वेद की क़सम, जिन्द की क़सम----''

इन ख़ुतूत में बहुत साफ-साफ इशारे ग़ालिब के अध्ययन के मिलते हैं जिनसे ये अनुमान लगाना बिलकुल ग़लत नहीं हो सकता क ग़ालिब ने अपने अध्ययन को किसी मजहब या वैचारिक पद्धति से बांधा हुआ नहीं था और जिसकी सबसे अच्छी मिसाल है उनके दोस्तो और शिष्यों की बहुत बड़ी संख्या जिस में मज़हब का कोई दखल नहीं था। हिंदू, ईसाई, मुस्लिम, यहूदी सभी उनके दोस्तों में शामिल थे। हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए कि ग़ालिब के ज़माने में धर्म और ज्ञान दोनो साथ-साथ चलते हुए भी एक दूसरे के विरोधी नहीं थे। ज्ञान चाहे किसी भी वैचारिक पद्धति का हो, उस तक सबकी पहुंच बहुत आसान थी। मज़हब के ऐतबार से जो ख़ेमा बंदी आज मिलती है उस दौर में नहीं थी। इसीलिए एक मुस्लिम का वेद और उपनिषद का अध्ययन करना, हिंदु या पारसी या ईसाई का क़ुरान और हदीस का अध्ययन करना कोई अनोखा या अस्वीकार्य कृत्य नहीं था। बहुत ही स्वस्थ परिवेश में ज्ञानपरक बहसों का संदर्भ ग़ालिब के ख़ुतूत में भी मिलता है और पहली जंगे आजादी की तारीख़ में भी इसका उल्लेख कई जगह मिल जाता है। इसलिए निसंदेह ये कहा जा सकता है कि ग़ालिब बिना किसी वैचारिक पद्धति से प्रभावित हुये अपनी सोच को ग़ज़ल की नज़ाकत के साथ शायरी में ढाल सकने में कामयाब रहे और उनकी तर्कशील बुद्धि ने ही हमें ये बताया कि–

न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता •

राजस्थान की

राजस्थान कृषि में विविधता वाला राज्य है। यहां की हर बात निराली है। यहाँ एक तरफ हरियाली है तो दूसरी तरफ मरुस्थल है। यहां वर्षा भी अमूमन कम ही होती है, लेकिन फिर भी यहां के किसानों का जीवट किसी से कम नहीं। राजस्थान कुछ प्रमुख फसलों में पूरे देश भर में अव्वल स्थान रखता है। यह फसलें राजस्थान की वजह से ही जानी जाती है। मेहंदी राजस्थान के पाली जिले के सोजत क्षेत्र में बहुतायत से उत्पादित की जाती है। मेहंदी का हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं में विशिष्ट स्थान है। हमारे प्रदेश में हर पारंपरिक उत्सव पर मेहंदी लगाने का रिवाज प्रचलन में है महिलाओं के हाथों में कलात्मक तरीके से मेहंदी रचाई जाती है। महिला चाहे ससुराल जाए अथवा ससुराल से पीहर आए उसके हाथों में मेहंदी अवश्य रचाई जाती है। अकेले राजस्थान में मेहंदी का करीब 200 करोड़ का कारोबार होता है । मोटे-मोटे आंकड़ों के अनुसार बात करें तो राजस्थान में करीब चालीस हजार हेक्टेयर में मेहंदी की खेती की जाती है। पाली का सोजत तहसील का बड़ा भूभाग मेहंदी की खेती के लिए जाना जाता है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिकने वाली सोजत की मेहंदी की भारत सहित विदेशों में भी विशेषकर खाड़ी देशों में मांग लगातार बढ़ रही है। इसका आंकड़ा उछाल पर है। यदि हमारे राज्य के किसान वैज्ञानिक तरीके से मेहंदी का उत्पादन करें तो निश्चित रूप से आमदनी बढ़ा पाएंगे। मेहंदी की महिमा पर वरिष्ठ कवि डॉ हरिराम आचार्य जी की यह पंक्तियां कितनी उपयुक्त लगती है,

'मेहंदी तो मेहंदी है मेहंदी रंग लाएगी'

राजस्थान की माटी जीरे की महक के लिए भी प्रख्यात है। जीरा राजस्थान की प्रमुख बीजीय मसाला फसल है जिसका उत्पादन बहुतायत रूप से जालौर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर जिलों में किया जाता है। देश का कुल अस्सी प्रतिशत जीरा राजस्थान एवं गुजरात में पैदा किया जाता है ।देश के कुल उत्पादन का लगभग 28 प्रतिशत जीरा राजस्थान में पैदा किया जाता है। राजस्थान में जीरे की फसल पर व्यापक अनुसंधान के लिए आईसीएआर का एक क्षेत्रीय केंद्र राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान संस्थान तबीजी अजमेर में स्थापित है । जीरे को हमारे प्रदेश में जोखिम भरी फसल भी माना जाता है, क्योंकि इस फसल पर ओलावृष्टि ,तेज हवा, अनियमित बारिश का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसीलिए जीरे के संदर्भ में हमारे प्रदेश में एक लोकगीत भी प्रचलन में है-

''ओ जीरो जीव रो बेरी है

मत बोओ म्हारा पिउजी जीरो''

जोधपुर का मथानिया, ओसियां ,तिंवरी क्षेत्र और कोटा का रामगंजमंडी क्षेत्र धनिया उत्पादन के क्षेत्र में एक अग्रणी क्षेत्र है। रामगंज मंडी कृषि उपज मंडी धनिया की सबसे बड़ी मंडी है। राष्ट्रीय कृषि बाजार योजना का शुभारंभ भी राजस्थान में सबसे पहले इसी मंडी से हुआ।

जोधपुर जिले का मथानिया क्षेत्र मिर्च की उन्नत पैदावार के लिए पूरे देश भर में प्रसिद्ध है । यहां लगभग हर किसान मिर्च की खेती करता है। मथानिया की लाल मिर्च रंग और स्वाद में बेमिसाल है। अन्य उत्पाद तैयार कर इसे बेचा जाता है। मिर्च एक नगदी फसल है । पाली, जालौर, सवाई माधोपुर और जोधपुर जिलों में मिर्च की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। पाली का सोजत क्षेत्र और जालौर का सायला क्षेत्र मथानिया के बाद मिर्च उत्पादन क्षेत्र में एक अग्रणी क्षेत्र बनता जा रहा है।

बाजरा उत्पादन एवं क्षेत्रफल दोनों की दृष्टि से पूरे देश में हमारा राज्य प्रथम स्थान पर है। आज बाजरे को एक पौष्टिक अनाज के रूप में पहचान मिली है। बाजरे के बिस्किट एवं अन्य उत्पादों की मांग बाजार में लगातार बढ़ रही है। राज्य में बाड़मेर जालौर पाली अलवर का क्षेत्र बाजरे की खेती के लिए जाना जाता है।

धरोहर खेती

- वीरेन्द्र परिहार

राज्य के नागौर जिले में बहुतायत से उत्पादित की जाने वाली एक प्रमुख फसल कसूरी मेथी भी आज अंतरराष्ट्रीय कारोबार जगत में अहम स्थान पर है। मारवाड़ क्षेत्र दुनिया भर में स्वादिष्ट व लजीज खानों के लिए मशहूर है। नागौर की कसूरी मेथी का औषधीय महत्त्व भी किसी से छुपा नहीं है। पेट दर्द एवं अन्य शरीर की बीमारियों में मेथी बहुतायत से उपयोग में लाई जाती है। आज डायबिटीज के निदान में मेथी के दानों का प्रयोग हर कोई जानता है। राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान संस्थान अजमेर के वैज्ञानिकों ने मेथी का प्रसंस्करण करके मेथी के बिस्किट तैयार किए है । यह मेथी के बिस्किट डायबिटीज नियंत्रण में रामबाण साबित हो रहे हैं ।

राज्य की प्रमुख औषधि फसल हैं ईसबगोल। ईसबगोल का अधिकांश उत्पादन राज्य के जालौर जिले में किया जाता है। पूरे विश्व का 40 प्रतिशत इसबगोल का उत्पादन जालौर जिला ही करता है। राज्य की एक और प्रमुख तिलहन फसल है सरसों। सरसों की पैदावार राजस्थान में मुख्य रूप से भरतपुर, अलवर, दौसा, करौली, जयपुर, श्रीगंगानगर, पाली, जोधपुर, जालौर जिलों में की जाती है। लगातार राज्य का सरसों उत्पादक क्षेत्र बढ़ रहा है। अब बड़े रकबे में सरसों की पैदावार की जा रही है। अब किसान सरसों की खेती के वाणिज्यिक महत्व को भी समझने लगे है। इसलिए यह खेती लगातार प्रदेश में लोकप्रिय होती जा रही है। आईसीएआर का सरसों की खेती पर एक अनुसंधान क्षेत्र भरतपुर के सेवर में स्थापित है जिसका नाम है राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय। सरसों की खेती का विस्तार होने के कारण अब धीरे-धीरे या मांग उठने लगी है की राजस्थान प्रदेश को सरसों प्रदेश घोषित किया जाए।

राजस्थान प्रदेश फलों की महक से भी पूरे देश भर में अपनी पहचान बना रहा है। झालावाड़ को तो छोटा नागपुर भी कहा जाता है। आज झालावाड़ जिले के अधिकांश किसान संतरे की खेती करके लाभ कमा रहे हैं। आज स्थिति यह है कि इलाहाबाद क्षेत्र के बाद अमरूद की खेती में हमारे राज्य का सवाई माधोपुर जिला एक अग्रणी जिला बन गया है। सवाई माधोपुर का करमोदा गांव अमरूदों के गांव के रूप में पहचान बना रहा है। यहां आज किसान सफलतापूर्वक अमरूद की नर्सरी स्थापित करके लाखों रुपए तक आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। श्री गंगानगर का किन्नू पूरे देश में विख्यात है। गंगानगर जिले के किसान किन्नू की खेती सफलतापूर्वक करते हैं। सिरोही और जालौर जिला पपीते की खेती के लिए मशहूर होते जा रहे हैं। सिरोही को पपीते का हब माना जाता है। आज यहां कई युवा केवल पपीते की खेती से लाखों रुपए तक अपनी आमदनी को पहुंचा रहे हैं।

राज्य की एक और प्रमुख औषधीय फसल है एलोवेरा। इसके लिए हमारे यहां की मिट्टी और जलवायु दोनों सर्वथा अनुकूल हैं । हाल ही में राज्य सरकार द्वारा कोरियाई कंपनी के साथ एक समझौता हुआ जिसके तहत राज्य में एलोवेरा खेती को बढ़ावा देने के लिए एलोवेरा जेल एंड जूस प्रोडक्शन प्लांट स्थापित किया जाएगा। यह प्लांट कोरियाई कंपनी द्वारा जोधपुर में लगाया जाएगा।

आज हमारे प्रदेश की कृषि की महक अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर अपनी एक अनूठी पहचान बनाने में कामयाब हुई है। यहां के खेत खलिहानों के नायकों ने देश भर में अपना एक मुकाम हासिल किया है। इसी का नतीजा है कि इन्हें कृषि कर्म योगी के रूप में पद्मश्री जैसे राष्ट्रीय प्रतिष्ठित सम्मान मिलने शुरू हुए है। राजस्थान गौरवान्वित हुआ 2019 में जब राज्य के दो प्रगतिशील किसानों जगदीश पारीक और हुकुमचंद पाटीदार को पद्मश्री प्रदान किया गया। ठीक 1 साल बाद फिर प्रदेश के खाते में दो कृषि से जुड़े योद्धाओं को पद्मश्री घोषित हुआ है, वो है सूंडा राम वर्मा और हिम्मताराम भाम्भू। निश्चित रूप से यह कृषि में एक खुशहाली का संकेत है और साथ ही दूसरी हरित क्रांति का शंखनाद। •

मुख्यमंत्री की जिला कलेक्टरों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस

सुशासन सरकार का मुख्य उद्देश्य

जनसुनवाई प्रकरणों की जिला कलेक्टर साप्ताहिक समीक्षा करें

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि आमजन से जुड़े छोटे-छोटे कामों के लिए लोगों का राजधानी तक आना गंभीर बात है। ऐसे मामलों में जिन अधिकारियों-कर्मचारियों की लापरवाही सामने आती है, उनकी जिम्मेदारी तय की जाए। उन्होंने कहा कि सुशासन ही सरकार का मुख्य उद्देश्य है और जिला कलेक्टर इसकी महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। वे कप्तान की तरह सभी विभागों से समन्वय कर बेहतर सर्विस डिलीवरी सुनिश्चित करें।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला कलक्टरों के साथ मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना में दवाओं की उपलब्धता, अस्पतालों में चिकित्सा उपकरणों की स्थिति, टीकाकरण, सिलिकोसिस एवं अनुसूचित जाति व जनजाति अत्याचार के प्रकरणों में सहायता, मुख्यमंत्री जनसुनवाई एवं सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों की स्थिति की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री जनसुनवाई को लेकर मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त पत्रों को कलेक्टर स्वयं देखें। उन्होंने कहा कि सम्पर्क पोर्टल तथा मुख्यमंत्री जनसुनवाई के प्रकरणों की जिला कलेक्टर साप्ताहिक समीक्षा करें और संभागीय आयुक्त हर 15 दिन में रिव्यू करें।

रोगी दवाओं से वंचित नहीं रहे

श्री गहलोत ने कहा कि मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना के तहत सभी अस्पतालों में दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित हो। कहीं भी दवाओं की कमी नहीं रहे। उन्होंने कहा कि जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त इलाज मिल सके, इस मंशा के साथ राज्य सरकार ने यह योजना शुरू की थी। अस्पताल और जिला प्रशासन की यह जिम्मेदारी है कि कोई भी रोगी दवाओं से वंचित नहीं रहे। उन्होंने निर्देश दिए कि जिला ड्रग सेंटर से सीएचसी एवं पीएचसी में दवाओं की आपूर्ति के लिए एडवांस प्लान बनाकर मॉनिटरिंग की जाए। साथ ही अस्पताल एवं जिला प्रशासन ई-औषधि पोर्टल के माध्यम से भी प्रभावी मॉनीटरिंग करें।

अवधिपार चिकित्सा उपकरण 31 मार्च तक नाकारा घोषित कराएं

श्री गहलोत ने कहा कि अस्पतालों में चिकित्सा उपकरण आवश्यक रूप से उपलब्ध हों। कोई उपकरण खराब होता है तो उसका समय पर मेंटीनेंस हो। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रदेश के सभी अस्पतालों में अवधिपार चिकित्सा उपकरणों को 31 मार्च तक कण्डम घोषित करने की प्रक्रिया पूरी की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण बेहद जरूरी है। इसके लिए आशा सहयोगिनियों, एएनएम एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से अभियान चलाकर शत-प्रतिशत टीकाकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि निरोगी राजस्थान सरकार का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है, इसकी सफलता चिकित्सा विभाग और जिला प्रशासन पर बहुत अधिक निर्भर है। वे इसके लिए भी पूरी तैयारी करें।

उपखण्ड स्तर पर होगी सिलिकोसिस पीड़ितों की स्क्रीनिंग

श्री गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार नई सिलिकोसिस नीति लेकर आई है, जिसमें इस गंभीर बीमारी के पीड़ितों को जल्द से जल्द सहायता उपलब्ध करवाने के लिए कलेक्टर एवं उपखण्ड स्तर पर सतर्कता समितियां गठित की जाएं। यह समितियां खान मालिक एवं नियोक्ता की जिम्मेदारी भी तय करेंगी कि वे श्रमिकों को उचित संसाधन एवं उपकरण उपलब्ध करवाएं। साथ ही ऐसी व्यवस्था शुरू की जाए, जिससे सिलिकोसिस रोगियों की उपखण्ड स्तर पर भी स्क्रीनिंग की जा सके। जिन जिलों में सिलिकोसिस के प्रकरण अधिक हैं, वहां टीबी एवं चेस्ट स्पेशलिस्ट तथा रेडियोलॉजिस्ट के पद जल्द भरे जाएं।

समय पर मिले मुख्यमंत्री कोष से सहायता

मुख्यमंत्री ने विद्यालयों में सड़क दुर्घटना बीमा योजना के सरलीकरण एवं ऑनलाइन मॉनिटरिंग के लिए एक पोर्टल विकसित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसी स्कूलों का भी सर्वे करवाया जाए, जहां दुर्घटनाओं की संख्या अधिक रहती है ताकि सरकार आवश्यक सुरक्षा उपाय कर सके। श्री गहलोत ने कहा कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार के प्रकरणों में पीड़ित को जल्द सहायता उपलब्ध करवाई जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि मृत्यु, दुर्घटना या अन्य स्थितियों में पीड़ितों को मुख्यमंत्री सहायता कोष से मिलने वाली सहायता राशि समय पर उपलब्ध करवाएं। जिला कलेक्टर स्वयं इसकी मॉनीटरिंग करें।

मुख्य सचिव श्री डीबी गुप्ता ने कहा कि सभी जिला कलेक्टर मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप संवेदनशीलता, जवाबदेही एवं पारदर्शिता के साथ गुड गवर्नेंस दें। वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त श्री निरंजन आर्य, अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रशासनिक सुधार श्री आर वेंकटेश्वरन, प्रमुख शासन सचिव आयोजना श्री अभय कुमार, चिकित्सा शिक्षा सचिव श्री वैभव गालरिया सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

धरातल पर नजर आने लगा सुशासन का संकल्प

मुख्यमंत्री की सख्ती का हुआ असर, आम जन के तेजी से होने लगे काम

सुशासन का मुख्यमंत्री का संकल्प धरातल पर नजर आने लगा है। मुख्यमंत्री ने इसे लेकर सख्ती दिखाई तो आमजन के काम तेजी से होने लगे हैं। श्री गहलोत ने 5 दिसम्बर को हुई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में जिला कलक्टरों को निर्देश दिए थे कि आमजन से जुड़ी योजनाओं में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। खासकर विधवा, वृद्धावस्था और दिव्यांगों के कल्याण के लिए चलाई जा रही सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं, पालनहार तथा आमजन से जुड़ी शिकायतों के लम्बित रहने पर उन्होंने कलक्टरों को त्वरित निराकरण के निर्देश दिए थे।

इसका असर यह रहा कि मात्र दो माह में ही सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लम्बित प्रकरणों की संख्या 3 लाख 40 हजार से घटकर मात्र 900 रह गई। पालनहार योजना के 2853 लंबित प्रकरणों में भी इस अवधि में करीब 2300 आवेदकों को लाभ मिल गया। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए दो माह में करीब 75 प्रतिशत आवेदकों के प्रमाण-पत्र जारी हो गए। गत वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के समय लम्बित 2 लाख 80 हजार 507 आवेदकों में से 2 लाख 9 हजार 735 आवेदकों को ईडब्ल्यूएस के प्रमाण-पत्र जारी कर दिए गए। सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरण के निस्तारण में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई और दो माह में ही 15 फीसदी तक इन प्रकरणों का निस्तारण बढ़ गया। •

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2020-22
Registered with Registrar of Newspapers of India under R. No. 56175/1991

धरोहर

जैसलमेर दुर्ग

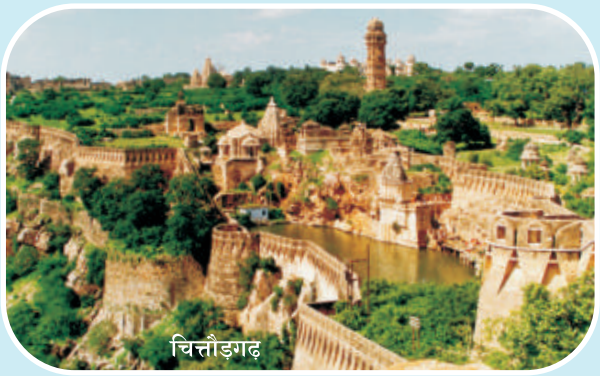
चित्तौड़गढ़

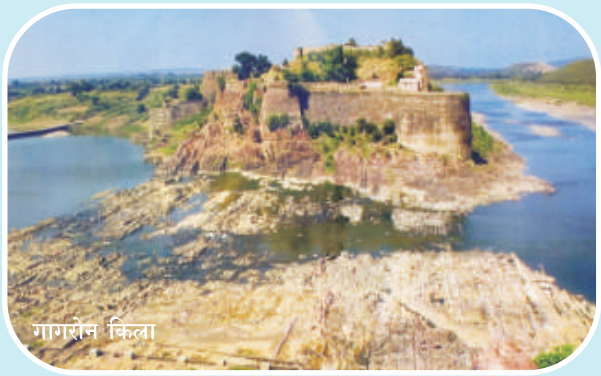
गागरोन किला

कुम्भलगढ़

आमेर किला

रणथम्भौर

यूनेस्को विश्व धरोहर में राजस्थान

सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न राजस्थान के जयपुर नगर के परकोटे को यूनेस्को ने 2019 में विश्व विरासत रूप में चिन्हित किया। फरवरी, 2020 में जयपुर को यूनेस्को की महानिदेशक ऑड्रे अजोले ने एक शानदार समारोह में औपचारिक रूप से 'वर्ल्ड हेरिटेज सिटी' प्रमाण पत्र प्रदान किया। वर्ष 2010 में जयपुर के जन्तर-मन्तर को तथा वर्ष 2013 में रणथम्भौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, कुंभलगढ़, गागरोन तथा आमेर के किले को 'हिल फोर्ट्स ऑफ राजस्थान' के अंतर्गत विश्व विरासत सूची में सम्मिलित किया गया था। इससे पहले वर्ष 1985 में प्रदेश के केवलादेव राष्ट्रीय अभयारण्य को विश्व विरासत संपति का दर्जा दिया गया।

जन्तर-मन्तर

केवलादेव अभयारण्य

परकोटा, विश्व विरासत शहर, जयपुर

#DIPRRajasthan

प्रकाशक व मुद्रक–सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त, महेन्द्र सोनी द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
सम्पादक– डॉ. राजेश कुमार व्यास • मैसर्स प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस, 12, मित्र नगर, हवा सड़क, रामनगर, सोडाला, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस'–पृष्ठ संख्या 60, मूल्य 20 रुपये/ 1,00000 प्रतियां